18-01-2003

# ब्राह्मण जन्म की स्मृतियों द्वारा समर्थ बन सर्व को समर्थ बनाओ

आज चारों ओर के सर्व स्नेही बच्चों के स्नेह के मीठे-मीठे याद के भिन्न-भिन्न बोल, स्नेह के मोती की मालायें बापदादा के पास अमृतवेले से भी पहले पहुंच गई। बच्चों का स्नेह बापदादा को भी स्नेह के सागर में समा लेता है। बापदादा ने देखा हर एक बच्चे में स्नेह की शक्ति अटूट है। यह स्नेह की शक्ति हर बच्चे को सहजयोगी बना रही है। स्नेह के आधार पर सर्व आकर्षणों से उपराम हो आगे से आगे बढ़ रहे हैं। ऐसा एक बच्चा भी नहीं देखा जिसको बापदादा द्वारा या विशेष आत्माओं द्वारा न्यारे और प्यारे स्नेह का अनुभव न हो। हर एक ब्राह्मण आत्मा का ब्राह्मण जीवन का आदिकाल स्नेह की शक्ति द्वारा ही हुआ है। ब्राह्मण जन्म की यह स्नेह की शक्ति वरदान बन आगे बढ़ा रही है। तो आज का दिन विशेष बाप और बच्चों के स्नेह का दिन है। हर एक ने अपने दिल में स्नेह के मोतियों की बहुत-बहुत मालायें बापदादा को पहनाई। और शक्तियां आज के दिन मर्ज हैं लेकिन स्नेह की शक्ति इमर्ज है। बापदादा भी बच्चों के स्नेह के सागर में लवलीन है।

आज के दिन को स्मृति दिवस कहते हो। स्मृति दिवस सिर्फ ब्रह्मा बाप के स्मृति का दिवस नहीं है लेकिन बापदादा कहते हैं आज और सदा यह याद रहे कि बापदादा ने ब्राह्मण जन्म लेते ही आदि से अब तक क्या-क्या स्मृतियां दिलाई हैं। वह स्मृतियों की माला याद करो, बहुत बड़ी माला बन जायेगी। सबसे पहली स्मृति सबको क्या मिली? पहला पाठ याद है ना! मैं कौन! इस स्मृति ने ही नया जन्म दिया, वृत्ति दृष्टि स्मृति परिवर्तन कर दी है। ऐसी स्मृतियां याद आते ही रूहानी खुशी की झलक नयनों में, मुख में आ ही जाती है। आप स्मृतियां याद करते और भक्त माला सिमरण करते हैं। एक भी स्मृति अमृतवेले से कर्मयोगी बनने समय भी बार-बार याद रहे तो स्मृति समर्थ स्वरूप बना देती है क्योंकि जैसी स्मृति वैसी ही समर्थी स्वतः ही आती है। इसलिए आज के दिन को स्मृति दिन साथ-साथ समर्थ दिन कहते हैं।

ब्रह्मा बाप सामने आते ही, बाप की दृष्टि पड़ते ही आत्माओं में समर्थी आ जाती है। सब अनुभवी हैं। सभी अनुभवी हैं ना! चाहे साकार रूप में देखा, चाहे अव्यक्त रूप की पालना से पलते अव्यक्त स्थिति का अनुभव करते हो, सेकण्ड में दिल से बापदादा कहा और समर्थी स्वत: ही आ जाती है। इसलिए ओ समर्थ आत्मायें अब अन्य आत्माओं को अपनी समर्थी से समर्थ बनाओ। उमंग है ना! है उमंग, असमर्थ को समर्थ बनाना है ना! बापदादा ने देखा कि चारों ओर कमजोर आत्माओं को समर्थ बनाने का उमंग अच्छा है।

शिव रात्रि के प्रोग्राम धूमधाम से बना रहे हैं। सबको उमंग है ना! जिसको उमंग है बस इस शिवरात्रि में कमाल करेंगे, वह हाथ उठाओ। ऐसी कमाल जो धमाल खत्म हो जाए। जय-जयकार हो जाये वाह! वाह समर्थ आत्मायें वाह! सभी ज़ोन ने प्रोग्राम बनाया है ना! पंजाब ने भी बनाया है ना! अच्छा है। भटकती हुई आत्मायें, प्यासी आत्मायें, अशान्त आत्मायें, ऐसी आत्माओं को अंचली तो दे दो। फिर भी आपके भाई-बहने हैं। तो अपने भाईयों के ऊपर, अपनी बहनों के ऊपर रहम आता है ना! देखो, आजकल परमात्मा को आपदा के समय याद करते लेकिन शक्तियों को, देवताओं में भी गणेश है, हनुमान है और भी देवताओं को ज्यादा याद करते हैं, तो वह कौन हैं? आप ही हो ना! आपको रोज़ याद करते हैं। पुकार रहे हैं - हे कृपालु, दयालु रहम करो, कृपा करो। जरा सी एक सुख शान्ति की बूंद दे दो। आप द्वारा एक बूंद के प्यासी हैं। तो दु:खियों का, प्यासी आत्माओं का आवाज हे शक्तियां, हे देव नहीं पहुंच रहा है! पहुंच रहा है ना? बापदादा जब पुकार सुनते हैं तो शक्तियों को और देवों को याद करते हैं। तो अच्छा प्रोग्राम दादी ने बनाया है, बाबा को पसन्द है। स्मृति दिवस तो सदा ही है लेकिन फिर भी आज का दिन स्मृति द्वारा सर्व समर्थियां विशेष प्राप्त की, अब कल से शिवरात्रि तक बापदादा चारों ओर के बच्चों को कहते कि यह विशेष दिन यही लक्ष्य रखो कि ज्यादा से ज्यादा आत्माओं को मन्सा द्वारा, वाणी द्वारा वा सम्बन्ध-सम्पर्क द्वारा किसी भी विधि से सन्देश रूपी अंचली

ज़रूर देना है। अपना उल्हना उतार दो। बच्चे सोचते हैं अभी विनाश की डेट तो दिखाई नहीं देती है, तो कभी भी उल्हना पूरा कर लेंगे लेकिन नहीं अगर अभी से उल्हना पूरा नहीं करेंगे तो यह भी उल्हना मिलेगा कि आपने पहले क्यों नहीं बताया। हम भी कुछ तो बना देते, फिर तो सिर्फ अहो प्रभू कहेंगे। इसलिए उन्हें भी कुछ-कुछ तो वर्से की अंचली लेने दो। उन्हों को भी कुछ समय दो। एक बूंद से भी प्यास तो बुझाओ, प्यासे के लिए एक बूंद भी बहुत महत्त्व वाली होती है। तो यही प्रोग्राम है ना कि कल से लेके बापदादा भी हरी झण्डी नहीं, नगाड़ा बजा रहे हैं कि आत्माओं को, हे तृप्त आत्मायें सन्देश दो, सन्देश दो। कम से कम शिवरात्रि पर बाप के बर्थ डे का मुख तो मीठा करें कि हाँ हमें सन्देश मिल गया। यह दिलखुश मिठाई सभी को सुनाओ, खिलाओ। साधारण शिवरात्रि नहीं मनाना, कुछ कमाल करके दिखाना। उमंग है? पहली लाइन को है? बहुत धूम मचाओ। कम से कम यह तो समझें कि शिवरात्रि का इतना बड़ा महत्त्व है। हमारे बाप का जन्म दिन है, सुनके खुशी तो मनायें।

अच्छा - जितने भी यहाँ बैठे हैं, चारों ओर तो जाना ही है लेकिन जितने भी बैठे हैं, कितनी संख्या है? (12-13 हज़ार बैठे हैं) अच्छा, जो भी बैठे हैं, मधुबन वाले कहेंगे हम कहाँ सन्देश देंगे? आजकल तो मधुबन के आस-पास भी गांव बहुत हैं। चाहे ऊपर, चाहे नीचे बहुत लोग हैं। कम से कम एक आत्मा को तो अपना बनाओ, सन्देश तो बहुतों को देना लेकिन एक आत्मा तो अपना वर्सा लेने के लायक बनाओ।

सभी एक एक को तैयार करे तो 9 लाख तो पूरे हो जायेंगे। मजूंर है, करेंगे कि सिर्फ बोलेंगे। सिर्फ हाथ नहीं उठाना लेकिन दिल से करना है। करना है? (नारायण से पूछते हैं) करना है? तो जो बापदादा ने कहा है 9 लाख की लिस्ट होनी चाहिए, वह तो हो ही जायेगी ना। तो अगली सीजन में बापदादा यह खुशखबरी सुनने चाहते हैं कि 6 लाख नहीं, 9 लाख तो हो गये हैं, उससे ज्यादा ही हो गये हैं। ठीक है, शक्तियां, टीचर्स ठीक है! टीचर्स को

तो कंगन तैयार करना चाहिए। पंजाब और राजस्थान की टीचर्स हाथ उठाओ। टीचर्स तो बहुत ही बना सकती है, लेकिन औरों को भी बनाने की प्रेरणा देना। अच्छा है टीचर्स कितनी हैं? एक एक भी 9 को तैयार करें तो 9 लाख तो हो जायेंगे। क्या समझते हो अगले सीजन तक यह खुशखबरी मिलेगी? हाँ निर्वैर बोलो, मिलेगी? होगा? यह तो कोई बड़ी बात नहीं है। 6 लाख हैं, 3 लाख चाहिए बस। हो जायेगा, सब सिर्फ हिम्मत रखो करना ही है। क्या बोलेंगे? कहो करना ही है। संकल्प शक्ति बहुत बड़ी शक्ति है। आप ब्राह्मण आत्माओं का संकल्प क्या नहीं कर सकता है। हर एक को अपने श्रेष्ठ संकल्प का महत्त्व स्मृति में रखना है।

बापदादा ने देखा कि अमृतवेले मैजारिटी का याद और ईश्वरीय प्राप्तियों का नशा बहुत अच्छा रहता है। लेकिन कर्म योगी की स्टेज में जो अमृतवेले का नशा है उससे अन्तर पड़ जाता है। कारण क्या है? कर्म करते, सोल कान्सेस और कर्म कान्सेस दोनों रहता है। इसकी विधि है कर्म करते मैं आत्मा, कौन सी आत्मा, वह तो जानते ही हो, जो भिन्न-भिन्न आत्मा के स्वमान मिले हुए हैं, ऐसी आत्मा करावनहार होकर इन कर्मेन्द्रियों द्वारा कर्म कराने वाली हूँ, यह कर्मेन्द्रियां कर्मचारी हैं लेकिन कर्मचारियों से कर्म कराने वाली मैं करावनहार हूँ, न्यारी हूँ। क्या लौकिक में भी डायरेक्टर अपने साथियों से, निमित्त सेवा करने वालों से सेवा कराते, डायरेक्शन देते, ड्युटी बजाते भूल जाता है कि मैं डायरेक्टर हूँ? तो अपने को करावनहार शक्तिशाली आत्मा हूँ, यह समझकर कार्य कराओ। यह आत्मा और शरीर, वह करनहार है वह करावनहार है, यह स्मृति मर्ज हो जाती है। आप सबको, पुराने बच्चों को मालूम है कि ब्रह्मा बाप ने शुरू शुरू में क्या अभ्यास किया? एक डायरी देखी थी ना। सारी डायरी में एक ही शब्द - मैं भी आत्मा, जसोदा भी आत्मा, यह बच्चे भी आत्मा हैं, आत्मा है, आत्मा है.... यह फाउण्डेशन सदा का अभ्यास किया। तो यह पहला पाठ मैं कौन? इसका बार-बार अभ्यास चाहिए। चेकिंग चाहिए, ऐसे नहीं मैं तो हूँ ही

आत्मा। अनुभव करे कि मैं आत्मा करावनहार बन कर्म करा रही हूँ। करनहार अलग है, करावनहार अलग है। ब्रह्मा बाप का दूसरा अनुभव भी सुना है कि यह कर्मेन्द्रियां, कर्मचारी हैं। तो रोज़ रात की कचहरी सुनी है ना! तो मालिक बन इन कर्मेन्द्रियों रूपी कर्मचारियों से हालचाल पूछा है ना! तो जैसे ब्रह्मा बाप ने यह अभ्यास फाउण्डेशन बहुत पक्का किया, इसलिए जो बच्चे लास्ट में भी साथ रहे उन्होंने क्या अनुभव किया? कि बाप कार्य करते भी शरीर में होते हुए भी अशरीरी स्थिति में चलते फिरते अनुभव होता रहा। चाहे कर्म का हिसाब भी चुक्तू करना पड़ा लेकिन साक्षी हो, न स्वयं कर्म के हिसाब के वश रहे, न औरों को कर्म के हिसाब-किताब चुक्तू होने का अनुभव कराया। आपको मालूम पड़ा कि ब्रह्मा बाप अव्यक्त हो रहा है, नहीं मालूम पड़ा ना! तो इतना न्यारा, साक्षी, अशरीरी अर्थात् कर्मातीत स्टेज बहुतकाल से अभ्यास की तब अन्त में भी वही स्वरूप अनुभव हुआ। यह बहुतकाल का अभ्यास काम में आता है। ऐसे नहीं सोचो कि अन्त में देहभान छोड़ देंगे, नहीं। बहुतकाल का अशरीरीपन का, देह से न्यारा करावनहार स्थिति का अनुभव चाहिए। अन्तकाल चाहे जवान है, चाहे बूढ़ा है, चाहे तन्दरूस्त है, चाहे बीमार है, किसका भी कभी भी आ सकता है। इसलिए बहुतकाल साक्षीपन के अभ्यास पर अटेन्शन दो। चाहे कितनी भी प्राकृतिक आपदायें आयेंगी लेकिन यह अशरीरीपन की स्टेज आपको सहज न्यारा और बाप का प्यारा बना देगी। इसलिए बहुतकाल शब्द को बापदादा अण्डरलाइन करा रहे हैं। क्या भी हो, सारे दिन में साक्षीपन की स्टेज का, करावनहार की स्टेज का, अशरीरीपन की स्टेज का अनुभव बार-बार करो, तब अन्त मते फ़रिश्ता सो देवता निश्चित है। बाप समान बनना है तो बाप निराकार और फ़रिश्ता है, ब्रह्मा बाप समान बनना अर्थात् फ़रिश्ता स्टेज में रहना। जैसे फ़रिश्ता रूप साकार रूप में देखा, बात सुनते, बात करते, कारोबार करते अनुभव किया कि जैसे बाप शरीर में होते न्यारे हैं। कार्य को छोड़कर अशरीरी बनना, यह तो थोड़ा समय हो सकता है लेकिन कार्य

करते, समय निकाल अशरीरी, पॉवरफुल स्टेज का अनुभव करते रहो। आप सब फरिश्ते हो, बाप द्वारा इस ब्राह्मण जीवन का आधार ले सन्देश देने के लिए साकार में कार्य कर रहे हो। फ़रिश्ता अर्थात् देह में रहते देह से न्यारा और यह एक्जैम्पुल ब्रह्मा बाप को देखा है, असम्भव नहीं है। देखा अनुभव किया। जो भी निमित्त हैं, चाहे अभी विस्तार ज्यादा है लेकिन जितनी ब्रह्मा बाप की नई नॉलेज, नई जीवन, नई दुनिया बनाने की जिम्मेवारी थी, उतनी अभी किसकी भी नहीं है। तो सबका लक्ष्य है ब्रह्मा बाप समान बनना अर्थात् फ़रिश्ता बनना। शिव बाप समान बनना अर्थात् निराकार स्थिति में स्थित होना। मुश्किल है क्या? बाप और दादा से प्यार है ना! तो जिससे प्यार है उस जैसा बनना, जब संकल्प भी है - बाप समान बनना ही है, तो कोई मुश्किल नहीं। सिर्फ बार-बार अटेन्शन। साधारण जीवन नहीं। साधारण जीवन जीने वाले बहुत हैं। बड़े-बड़े कार्य करने वाले बहुत हैं। लेकिन आप जैसा कार्य, आप ब्राह्मण आत्माओं के सिवाए और कोई नहीं कर सकता है।

तो आज स्मृति दिवस पर बापदादा समानता में समीप आओ, समीप आओ, समीप आओ का वरदान दे रहे हैं। सभी हद के किनारे, चाहे संकल्प, चाहे बोल, चाहे कर्म, सम्बन्ध-सम्पर्क कोई भी हद का किनारा, अपने मन की नईया को इन हद के किनारों से मुक्त कर दो। अभी से जीवन में रहते मुक्त ऐसे जीवनमुक्ति का अलौकिक अनुभव बहुतकाल से करो। अच्छा।

चारों ओर के बच्चों के पत्र बहुत मिले हैं और मधुबन वालों की क्रोधमुक्त की रिपोर्ट, समाचार भी बापदादा के पास पहुंचा है। बापदादा हिम्मत पर खुश है, और आगे के लिए सदा मुक्त रहने के लिए सहनशक्ति का कवच पहने रखना, तो कितना भी कोई प्रयत्न करेगा लेकिन आप सदा सेफ रहेंगे।

**ऐसे सर्व दृढ़ संकल्पधारी, सदा स्मृति स्वरूप आत्माओं को, सदा सर्व समर्थियों को समय पर कार्य में लाने वाले विशेष आत्माओं को, सदा सर्व आत्माओं के रहमदिल आत्माओं को, सदा बापदादा समान बनने के संकल्प**

**को साकार रूप में लाने वाले ऐसे बहुत-बहुत-बहुत प्यारे और न्यारे बच्चों को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।**

## पंजाब के सेवाधारियों से

पंजाब वालों ने भी अपना बेहद सेवा का पार्ट अच्छा बजाया है, बापदादा खुश होते हैं कि हर एक ज़ोन बड़े उमंग-उत्साह से सेवा का गोल्डन चांस प्रैक्टिकल में ला रहे हैं। पंजाब नाम ही नदियों के आधार पर पड़ा है। आजकल नदियों को ही पावन बनाने वाली मानते हैं। तो पंजाब वाले सबको सन्देश देने में नम्बरवन हैं ना! नदियां तो बहती रहती हैं, तो पंजाब भी सन्देश देते आगे बढ़ता रहता है। बहुत प्रोग्राम अच्छे बनाये हैं ना। बापदादा ने सुना है, सबका अच्छा उमंग है। आदि स्थापना का स्थान है इसलिए शक्ति ज्यादा है, इसीलिए आपके निमित्त चन्द्रमणि बच्ची को टाइटल ही दिया - पंजाब की शेरनी। तो सब शेरणियां हो ना! कमजोर तो नहीं हैं। पाण्डव कमजोर तो नहीं, शक्तिशाली हो ना? कहो हाँ जी। बापदादा जानते हैं एक एक पंजाब का शेर या शेरनी शिकार करने में होशियार है। शेर तो शिकार करने में होशियार होता है ना। तो आप कितने होशियार हो। अगली सीजन में सबसे ज्यादा संख्या पंजाब लायेगा। तो इनएडवांस मुबारक है। अच्छा है। एक एक को देख बापदादा खुश होते हैं, वाह मेरे सर्विसएबुल बच्चे वाह! पाण्डव भी वाह वाह हैं। शक्तियां भी वाह वाह हैं। अभी वाह बाबा वाह का नगाड़ा बजाओ। सब लोग कहें - वाह हमारा बाबा वाह! ठीक है ना! हिम्मत है? हिम्मत भी है और बापदादा की पद्मगुणा मदद भी है। ठीक है। देखो, नाम ही अचल है और प्रेम है। जहाँ प्रेम है, अचल है तो सब कुछ आ गया ना। चाहिए ही क्या, प्रेम चाहिए और अचल स्थिति चाहिए और क्या चाहिए। ऐसे निमित्त का नाम ले रहे हैं। सभी का नाम बहुत अर्थ वाला है। सामने खड़े हैं तो दो का नाम ले रहे हैं बाकी हैं सभी एक एक रत्न, बापदादा के दिलतख्तनशीन। तो ठीक है ना।

**डबल फारेनर्स –** डबल फारेनर्स को डबल नशा है। क्यों डबल नशा है? क्योंकि समझते हैं कि हम भी जैसे बाप दूरदेश के हैं ना, तो हम भी दूरदेश से आये हैं। बापदादा ने डबल विदेशी बच्चों की एक विशेषता देखी है कि दीप से दीप जगाते हुए अनेक देशों में बापदादा के जगे हुए दीपकों की दीवाली मना दी है। अभी भी सुना कितने देश के आये हैं? (35) इस टर्न में 35 देशों के आये हैं और बाहर कितने होंगे? तो डबल विदेशियों को सन्देश देने का शौक अच्छा है। हर ग्रुप में बापदादा ने देखा 35-40 देशों के होते हैं। मुबारक हो। सदा स्वयं भी उड़ते रहो और फरिश्ते बनकरके उड़ते-उड़ते सन्देश देते रहो। अच्छा है, आप 35 देश वालों को बापदादा नहीं देख रहा है और भी देश वालों को आपके साथ देख रहे हैं। तो नम्बरवन बाप समान बनने वाले हो ना! नम्बरवन कि नम्बरवार बनने वाले हो? नम्बरवन? नम्बरवार नहीं? नम्बरवन बनना अर्थात् हर समय विन करने वाले। जो विन करते हैं वह वन होते हैं। तो ऐसे हो ना? बहुत अच्छा। विजयी हैं और सदा विजयी रहने वाले। अच्छा और सभी को, जहाँ जहाँ जाओ वहाँ यह स्मृति दिलाना कि सभी डबल फारेनर्स को वन नम्बर बनना है। अच्छा - सभी को याद देना। और शिव रात्रि यहाँ मनाते हैं लेकिन आप सन्देश तो दे सकते हो ना! तो जितनी संख्या है उससे डबल संख्या दूसरे सीजन में होनी ही है। होगी ना! होनी है।

**अच्छा - बापदादा सभी माताओं को गऊपाल की प्यारी माताओं को बहुत-बहुत दिल से यादप्यार दे रहे हैं और पाण्डव चाहे यूथ हो, चाहे प्रवृत्ति वाले हो, पाण्डव सदा पाण्डवपति के साथी रहे हैं, ऐसे साथी पाण्डवों को भी बापदादा बहुत-बहुत यादप्यार दे रहे हैं। टीचर्स सोच रही हैं हमको तो देखा नहीं, देख रहे हैं।**

**टीचर्स से –** टीचर्स तो अपने फीचर्स से ही बापदादा का साक्षात्कार कराने वाली हैं। बापदादा का भी और अपने फ्युचर का भी फीचर्स द्वारा प्रत्यक्ष करने की सेवा विशेष टीचर्स की है। हर एक का फीचर्स सदा ही जैसे

प्रदर्शनी हो। प्रदर्शनी के चित्र स्वत: ही अपना परिचय देते हैं तो आपके फीचर्स चलता फिरता प्रदर्शनी हो और हर एक को स्वत: ही स्मृति दिलाते रहो। समझा। 100 ब्राह्मणों से उत्तम कुमारियों को भी बहुत-बहुत यादप्यार। अच्छा।

**बच्चों से –** बच्चों के बिना तो रौनक ही नहीं है। घर का शृंगार, बापदादा का शृंगार बच्चे हैं। बच्चों को तो बापदादा राजा बच्चा के रूप में देखते हैं। एक-एक बच्चा राजा बच्चा है। ऐसे है ना! ऐसे हैं बच्चे, राजा बच्चे हो या प्रजा बच्चे हो? बहुत अच्छा। बच्चों को देखकर सब खुश होते हैं। अभी बच्चे कमाल करके दिखाना। बच्चे भी अपने हमजिन्स बच्चों को तैयार करना। करेंगे ना! अच्छा।

आज के दिन क्या याद आता है? विल पावर्स मिली ना! विल पावर्स का वरदान है। बहुत अच्छा पार्ट बजाया है, इसकी मुबारक है। सभी की दुआयें आपको बहुत हैं। आपको देख करके ही सभी खुश हो जाते हैं, बोलो या नहीं बोलो। आपको कुछ होता है ना तो सब ऐसे समझते हैं हमको हो रहा है। इतना प्यार है। सभी का है। (हमारा भी सबसे बहुत प्यार है) प्यार तो है बहुत सभी से। यह प्यार ही सभी को चला रहा है। धारणा कम हो ज्यादा हो, लेकिन प्यार चला रहा है। बहुत अच्छा।

**ईशू दादी से –** इसने भी हिसाब चुक्तू कर लिया। कोई बात नहीं। इसका सहज पुरुषार्थ, सहज हिसाब चुक्तू। सहज ही हो गया, सोते सोते। आराम मिला विष्णु के मुआफिक। अच्छा। फिर भी साकार से अभी तक यज्ञ रक्षक बने हैं। तो यज्ञ रक्षक बनने की दुआयें बहुत होती हैं।

सभी दादियां बापदादा के बहुत-बहुत समीप हैं। समीप रत्न हैं और सबको दादियों का मूल्य है। संगठन भी अच्छा है। आप दादियों के संगठन ने इतने वर्ष यज्ञ की रक्षा की है और करते रहेंगे। यह एकता सभी सफलता का आधार है। (बाबा बीच में है) बाप को बीच में रखा है, यह अटेन्शन बहुत अच्छा दिया है। अच्छा। सभी ठीक हैं।

**मोहिनी बहन से –** तबियत ठीक है, आपमें भी हिम्मत अच्छी है, चला लेती हो। आता है और चला जाता है, यह भी शक्ति है।

**मनोहर दादी से –** प्रकृति को चलाने आ गया है। पुरानी मोटर को धक्का बीच-बीच में देना होता है। इसलिए चला रहे हो, बहुत अच्छा चला रहे हो। आप लोगों का हाजिर रहना, यही सब कुछ सफलता है। अच्छा है। सभी स्मृति दिवस देखने वाली हो। अच्छा। ओम शान्ति।

**13-02-2003**

# वर्तमान समय
# अपना रहमदिल और दाता स्वरूप प्रत्यक्ष करो

आज वरदाता बाप अपने ज्ञान दाता, शक्ति दाता, गुण दाता, परमात्म सन्देश वाहक बच्चों को देख रहे हैं। हर एक बच्चा मास्टर दाता बन आत्माओं को बाप के समीप लाने के लिए दिल से प्रयत्न कर रहे हैं। विश्व में अनेक प्रकार की आत्मायें हैं, किन आत्माओं को ज्ञान अमृत चाहिए, अन्य आत्माओं को शक्ति चाहिए, गुण चाहिए, आप बच्चों के पास सर्व अखण्ड खज़ाने हैं। हर एक आत्मा की कामना पूर्ण करने वाले हो। दिन-प्रतिदिन समय समाप्ति का समीप आने के कारण अब आत्मायें कोई नया सहारा ढूंढ रही हैं। तो आप आत्मायें नया सहारा देने के निमित्त बनी हुई हो। बापदादा बच्चों के उमंग-उत्साह को देख खुश है। एक तरफ आवश्यकता है और दूसरे तरफ उमंग-उत्साह है। आवश्यकता के समय एक बूंद का भी महत्त्व होता है। तो इस समय आपकी दी हुई अंचली का, सन्देश का भी महत्त्व है।

वर्तमान समय आप सभी बच्चों का रहमदिल और दाता स्वरूप प्रत्यक्ष होने का समय है। आप ब्राह्मण आत्माओं के अनादि स्वरूप में भी दातापन के संस्कार भरे हुए हैं इसलिए कल्प वृक्ष के चित्र में आप वृक्ष के जड़ में दिखाये हुए हैं क्योंकि जड़ द्वारा ही सारे वृक्ष को सब कुछ पहुंचता है। आपका आदि स्वरूप देवता रूप, उसका अर्थ ही है देव ता अर्थात् देने वाला। आपका मध्य का स्वरूप पूज्य चित्र हैं तो मध्य समय में भी पूज्य रूप में आप वरदान देने वाले, दुआयें देने वाले, आशीर्वाद देने वाले दाता रूप हो। तो आप आत्माओं का विशेष स्वरूप ही दातापन का है। तो अभी भी परमात्म सन्देश वाहक बन विश्व में बाप की प्रत्यक्षता का सन्देश फैला रहे हैं। तो हर एक ब्राह्मण बच्चा चेक करो कि अनादि, आदि दातापन के संस्कार हर एक के जीवन में सदा इमर्ज रूप में रहते हैं? दातापन के संस्कार वाली आत्माओं की निशानी है - वह कभी भी यह संकल्प-मात्र भी नहीं करते कि कोई दे तो देवें, कोई करे तो करें, नहीं। निरन्तर खुले भण्डार

हैं। तो बापदादा चारों ओर के बच्चों के दातापन के संस्कार देख रहे थे। क्या देखा होगा? नम्बरवार तो है ही ना! कभी भी यह संकल्प नहीं करो - यह हो तो मैं भी यह करूं। दातापन के संस्कार वाले को सर्व तरफ से सहयोग स्वत: प्राप्त होता है। न सिर्फ आत्माओं द्वारा लेकिन प्रकृति भी समय प्रमाण सहयोगी बन जाती है। यह सूक्ष्म हिसाब है कि जो सदा दाता बनता है, उस पुण्य का फल समय पर सहयोग, समय पर सफलता उस आत्मा को सहज प्राप्त होता है। इसलिए सदा दातापन के संस्कार इमर्ज रूप में रखो। पुण्य का खाता एक का 10 गुणा फल देता है। तो सारे दिन में नोट करो - संकल्प द्वारा, वाणी द्वारा, सम्बन्ध-सम्पर्क द्वारा पुण्य आत्मा बन पुण्य का खाता कितना जमा किया? मन्सा सेवा भी पुण्य का खाता जमा करती है। वाणी द्वारा किसी कमजोर आत्मा को खुशी में लाना, परेशान को शान की स्मृति में लाना, दिलशिकस्त आत्मा को अपनी वाणी द्वारा उमंग-उत्साह में लाना, सम्बन्ध-सम्पर्क से आत्मा को अपने श्रेष्ठ संग का रंग अनुभव कराना, इस विधि से पुण्य का खाता जमा कर सकते हो। इस जन्म में इतना पुण्य जमा करते हो जो आधाकल्प पुण्य का फल खाते हो और आधाकल्प आपके जड़ चित्र पापी आत्माओं को वायुमण्डल द्वारा पापों से मुक्त करते हैं। पतित-पावनी बन जाते हो। तो बापदादा हर एक बच्चे का जमा हुआ पुण्य का खाता देखते रहते हैं।

बापदादा वर्तमान समय का बच्चों का सेवा का उमंग-उत्साह देख खुश हो रहे हैं। मैजारिटी बच्चों में सेवा का उमंग अच्छा है। सभी अपने-अपने तरफ से सेवा का प्लैन प्रैक्टिकल में ला रहे हैं। इसके लिए बापदादा दिल से मुबारक दे रहे हैं। अच्छा कर रहे हैं और अच्छा करते रहेंगे। सबसे अच्छी बात यह है - सभी का संकल्प और समय बिज़ी हो गया है। हर एक को यह लक्ष्य है कि चारों ओर की सेवा से अभी उल्हनें को पूरा ज़रूर करना है। दादी कहती है 9 लाख चाहिए, अगर 3-4 जगह पर लाख-लाख आयेंगे, तो क्या होगा! 6 लाख तो हैं, बाकी 3 लाख चाहिए ना। तो इतने सब जो सन्देश

दे रहे हो देश में या विदेश में भी बापदादा ने सुना उमंग अच्छा है। बना रहे हैं ना - वहाँ भी बहुत अच्छे प्रोग्राम बना रहे हैं। हर एक स्थान की विधि अपनी होती है लेकिन सेवा का उमंग सभी में है। तो 9 लाख क्या, ३ लाख बढ़ाने हैं वह क्या बड़ी बात है। बड़ी बात है? पहला नम्बर गुजरात ने बीड़ा उठाया है, अच्छा किया है। गुजरात के कितने सेन्टर हैं? (200 सेन्टर हैं, 1000 उपसेवाकेन्द्र/पाठशालायें हैं), एक एक सेन्टर से अगर 10-10 भी आ जाएं तो कितने हो जायेंगे? ऐसे दिल्ली है, बाम्बे हैं, मद्रास है। मद्रास की तो फ्लाइंग उड़ने वाली है। कलकत्ता है, हैदराबाद है, फारेन है। 3 लाख क्या बड़ी बात है! है बड़ी बात? टीचर्स बताओ बड़ी बात है? तो 9 लाख हो जायेंगे ना! इसमें हाथ नहीं हिला रहे हो! पाण्डव हाथ हिला रहे हैं। ब्राह्मणों के दृढ़ संकल्प में बहुत शक्ति है। अगर ब्राह्मण दृढ़ संकल्प करें तो क्या नहीं हो सकता! सब हो जायेगा सिर्फ योग को ज्वाला रूप बनाओ। योग ज्वाला रूप बन जायेगा तो ज्वाला के पीछे आत्मायें स्वत: ही आ जायेंगी क्योंकि ज्वाला (लाइट) मिलने से उन्हों को रास्ता दिखाई देगा। अभी योग तो लगा रहे हैं लेकिन योग ज्वाला रूप होना है। सेवा का उमंग-उत्साह अच्छा बढ़ रहा है लेकिन योग में ज्वाला रूप अभी अण्डरलाइन करनी है। आपकी दृष्टि में ऐसी झलक आ जाए जो दृष्टि से कोई न कोई अनुभूति का अनुभव करें।

बापदादा को, फारेन वालों ने यह जो सेवा की थी - काल आफ टाइम वालों की, उसकी विधि अच्छी लगी कि छोटे से संगठन को समीप लाया। ऐसे हर ज़ोन, हर सेन्टर अलग-अलग सेवा तो कर रहे हो लेकिन कोई सर्व वर्गो का संगठन बनाओ। बापदादा ने कहा था कि बिखरी हुई सेवा बहुत है, लेकिन बिखरी हुई सेवा से कुछ समीप आने वाली योग्य आत्माओं का संगठन चुनो और समय प्रति समय उस संगठन को समीप लाते रहो और उन्हों को सेवा का उमंग बढ़ाओ। बापदादा देखते हैं कि ऐसी आत्मायें हैं लेकिन अभी वह पॉवरफुल पालना, संगठित रूप में नहीं मिल रही है। अलग-अलग यथाशक्ति पालना मिल रही है, संगठन में एक दो को देखकर

भी उमंग आता है। यह, ये कर सकता है, मैं भी कर सकता हूँ, मैं भी करूंगा, तो उमंग आता है। बापदादा अभी सेवा का प्रत्यक्ष संगठित रूप देखने चाहते हैं। मेहनत अच्छी कर रहे हो, हर एक अपने वर्ग की, एरिया की, ज़ोन की, सेन्टर की कर रहे हो, बापदादा खुश होते हैं। अब कुछ सामने लाओ। प्रवृत्ति वालों का भी उमंग बापदादा के पास पहुंचता है और डबल फारेनर्स का भी डबल कार्य में रहते सेवा में स्वयं के पुरुषार्थ में उमंग अच्छा है, यह देख करके भी बापदादा खुश है।

ब्राह्मण आत्मायें वर्तमान वायुमण्डल को देख विदेश में डरते तो नहीं हैं? कल क्या होगा, कल क्या होगा.. यह तो नहीं सोचते हैं? कल अच्छा होगा। अच्छा है और अच्छा ही होना है। जितनी दुनिया में हलचल होगी उतनी ही आप ब्राह्मणों की स्टेज अचल होगी। ऐसे है? डबल विदेशी हलचल है या अचल है? अचल है? हलचल में तो नहीं हैं ना! जो अचल हैं वह हाथ उठाओ। अचल हैं? कल कुछ हो जाये तो? तो भी अचल हैं ना! क्या होगा, कुछ नहीं होगा। आप ब्राह्मणों के ऊपर परमात्म छत्रछाया है। जैसे वाटरप्रूफ कितना भी वाटर हो लेकिन वाटरप्रूफ द्वारा वाटरप्रूफ हो जाते हैं। ऐसे ही कितनी भी हलचल हो लेकिन ब्राह्मण आत्मायें परमात्म छत्रछाया के अन्दर सदा प्रूफ हैं। बेफिकर बादशाह हो ना! कि थोड़ा-थोड़ा फिकर है, क्या होगा? नहीं। बेफिकर। स्वराज्य अधिकारी बन, बेफिकर बादशाह बन, अचल-अडोल सीट पर सेट रहो। सीट से नीचे नहीं उतरो। अपसेट होना अर्थात् सीट पर सेट नहीं है तो अपसेट हैं। सीट पर सेट जो है वह स्वप्न में भी अपसेट नहीं हो सकता।

मातायें क्या समझती हो? सीट पर सेट होना, बैठना आता है? हलचल तो नहीं होती ना! बापदादा कम्बाइन्ड है, जब सर्वशक्तिवान आपके कम्बाइन्ड है तो आपको क्या डर है! अकेले समझेंगे तो हलचल में आयेंगे। कम्बाइन्ड रहेंगे तो कितनी भी हलचल हो लेकिन आप अचल रहेंगे। ठीक है मातायें? ठीक है ना, कम्बाइन्ड हैं ना! अकेले तो नहीं? बाप की जिम्मेवारी है, अगर

आप सीट पर सेट हो तो बाप की जिम्मेवारी है, अपसेट हो तो आपकी जिम्मेवारी है।

आत्माओं को सन्देश द्वारा अंचली देते रहेंगे तो दाता स्वरूप में स्थित रहेंगे, तो दातापन के पुण्य का फल शक्ति मिलती रहेगी। चलते फिरते अपने को आत्मा करावनहार है और यह कर्मेन्द्रियां करनहार कर्मचारी हैं, यह आत्मा की स्मृति का अनुभव सदा इमर्ज रूप में हो, ऐसे नहीं कि मैं तो हूँ ही आत्मा। नहीं, स्मृति में इमर्ज हो। मर्ज रूप में रहता है लेकिन इमर्ज रूप में रहने से वह नशा, खुशी और कन्ट्रोलिंग पावर रहती है। मजा भी आता है, क्यों! साक्षी हो करके कर्म कराते हो। तो बार-बार चेक करो कि करावनहार होकर कर्म करा रही हूँ? जैसे राजा अपने कर्मचारियों को आर्डर में रखते हैं, आर्डर से कराते हैं, ऐसे आत्मा करावनहार स्वरूप की स्मृति रहे तो सर्व कर्मेन्द्रियां आर्डर में रहेंगी। माया के आर्डर में नहीं रहेंगी, आपके आर्डर में रहेंगी। नहीं तो माया देखती है कि करावनहार आत्मा अलबेली हो गई है तो माया आर्डर करने लगती है। कभी संकल्प शक्ति, कभी मुख की शक्ति माया के आर्डर में चल पड़ती है। इसीलिए सदा हर कर्मेन्द्रियों को अपने आर्डर में चलाओ। ऐसे नहीं कहेंगे - चाहते तो नहीं थे, लेकिन हो गया। जो चाहते हैं वही होगा। अभी से राज्य अधिकारी बनने के संस्कार भरेंगे तब ही वहाँ भी राज्य चलायेंगे। स्वराज्य अधिकारी की सीट से कभी भी नीचे नहीं आओ। अगर कर्मेन्द्रियां आर्डर पर रहेंगी तो हर शक्ति भी आपके आर्डर में रहेगी। जिस शक्ति की जिस समय आवश्यकता है उस समय जी हाजिर हो जायेगी। ऐसे नहीं काम पूरा हो जाए और आप आर्डर करो सहनशक्ति आओ, काम पूरा हो जाये फिर आवे। हर शक्ति आपके आर्डर पर जी हाजिर होगी क्योंकि यह हर शक्ति परमात्म देन है। तो परमात्म देन आपकी चीज़ हो गई। तो अपनी चीज़ को जैसे भी यूज़ करो, जब भी यूज़ करो, ऐसे यह सर्व शक्तियां आपके आर्डर पर रहेंगी, सर्व कर्मेन्द्रियां आपके आर्डर पर रहेंगी, इसको कहा जाता है स्वराज्य अधिकारी, मास्टर सर्वशक्तिवान।

ऐसे है पाण्डव? मास्टर सर्व शक्तिवान भी हैं और स्वराज्य अधिकारी भी हैं। ऐसे नहीं कहना कि मुख से निकल गया, किसने आर्डर दिया जो निकल गया! देखने नहीं चाहते थे, देख लिया। करने नहीं चाहते थे, कर लिया। यह किसके आर्डर पर होता है? इसको अधिकारी कहेंगे या अधीन कहेंगे? तो अधिकारी बनो, अधीन नहीं। अच्छा।

सभी पहुंच गये हैं, यह संगठन भी कितना प्यारा लगता है। बाप को भी बच्चों का संगठन अच्छा लगता है। अपने परिवार को देखने का चांस तो मिलता है। किसको कह तो सकते हैं कि हमने अपने बड़े परिवार को देखा है। मधुबन में सब सैलवेशन मिल रही है ना! पानी मिला? पानी मिल रहा है ना! खाना, सोना, मिलना, सब मिल रहा है। बापदादा कहते हैं जैसे अभी मधुबन में सब बहुत-बहुत खुश हो, ऐसे ही सदा खुश-आबाद रहना। रूहे गुलाब हैं। देखो, चारों ओर देखो सभी रूहे गुलाब खिले हुए गुलाब हैं। मुरझाये हुए नहीं हैं, खिले हुए गुलाब हैं। तो सदा ऐसे ही खुशनसीब और खुशनुमः चेहरे में रहना। कोई आपके चेहरे को देखे तो आपसे पूछे - क्या मिला है आपको, बड़े खुश हो! हर एक का चेहरा बाप का परिचय दे। जैसे चित्र परिचय देते हैं ऐसे आपका चेहरा बाप का परिचय दे कि बाप मिला है। अच्छा।

सब ठीक हैं? विदेश वाले भी पहुंच गये हैं। अच्छा लगता है ना यहाँ? (मोहिनी बहन-न्युयार्क) चलो हलचल सुनने से तो बच गई। अच्छा किया है, सभी इकट्ठे पहुंच गये हैं, बहुत अच्छा किया है। अच्छा - डबल फारेनर्स, डबल नशा है ना! कहो इतना नशा है जो दिल कहता है कि अगर हैं तो हम डबल विदेशी हैं। डबल नशा है, स्वराज्य अधिकारी सो विश्व अधिकारी। डबल नशा है ना! बापदादा को भी अच्छा लगता है। अगर किसी भी ग्रुप में डबल विदेशी नहीं होते हैं तो अच्छा नहीं लगता है। विश्व का पिता है ना तो विश्व के चाहिए ना! सब चाहिए। मातायें नहीं हों तो भी रौनक नहीं। पाण्डव नहीं हो तो भी रौनक कम हो जाती है। देखो जिस सेन्टर पर कोई पाण्डव नहीं

हो सिर्फ मातायें हों तो अच्छा लगेगा! और सिर्फ पाण्डव हों, शक्तियां नहीं हो, तो भी सेवाकेन्द्र का श्रृंगार नहीं लगता है। दोनों चाहिए। बच्चे भी चाहिए। बच्चे कहते हैं, हमारा नाम क्यों नहीं लिया। बच्चों की भी रौनक है।

**महाराष्ट्र-आंध्र प्रदेश के सेवा का टर्न है –** अच्छा है यह भी नजदीक आने का चांस है। नहीं तो ग्रुप में जब आते हो तो स्पेशल दादियां नहीं मिलती हैं। सेवा में आते हो तो स्पेशल दादियां भी मिलती हैं ना! अच्छा। महाराष्ट्र उठो। महाराष्ट्र की भुजायें बहुत हैं, इसी कारण जैसे नाम है महाराष्ट्र तो संख्या भी महा है। बापदादा ने समाचार सुना है कि महाराष्ट्र भी चांस ले रहा है। अच्छा - इतने ही सेन्टर्स के, यह 3 लाख जो पूरे करने हैं, महाराष्ट्र भी कर रहा है, गुजरात भी कर रहा है, पंजाब भी कर रहा है... तो 3 लाख तो पूरे हो ही जायेंगे। और भी कर रहे हैं। 3 लाख तो कोई बड़ी बात नहीं है। 3 लाख पूरे करेंगे? पंजाब, करेंगे? गुजरात भी करेगा। और भी कर रहे हैं। जब दूसरी सीजन हो तो बापदादा को खुशखबरी मिले कि 9 लाख ब्राह्मण हो गये। ठीक है, हो जायेंगे? अभी तो 9 लाख है, 9 करोड़ तक जाना है। अच्छा - देखो सतयुग में शुरू-शुरू में 9 लाख होंगे, त्रेता तक बढ़ेंगे या बढ़ेंगे ही नहीं! तो तैयार तो करने हैं ना! बहुत अच्छा, महाराष्ट्र सदा महान स्थिति में स्थित रहने वाले महा राष्ट्र। अच्छा।

**भोपाल –** भोपाल में भी वृद्धि हो रही है ना! तो ३ लाख में भोपाल कितना एड करेगा? (50 हज़ार भोपाल लायेगा) मुबारक हो, बहुत अच्छा। क्या बड़ी बात है, विश्व कल्याणकारी है तो 50 हज़ार का क्यों नहीं कल्याण करेंगे! हो जायेगा। बहुत अच्छा चांस लिया, इसलिए चांसलर बन गये। मातायें भी हैं, पाण्डव भी हैं, बहुत अच्छा। चांस लेने में सदा आगे बढ़ना चाहिए। हर बात का चांस लेने में, उल्टे काम में नहीं, सुल्टे काम में। यह भोपाल भी अच्छा आदि से निमित्त बने हैं। बापदादा हर ज़ोन को मुबारक देते हैं। तो मुबारक हो और सदा वृद्धि को पाते रहेंगे। अच्छा।

**ट्रांसपोर्ट विंग –** ट्रांसपोर्ट वाले तो सभी को प्लेन से भी ऊंचा उड़ायेंगे

ना। प्लेन तो यहाँ तक चलता है, आप तो परमधाम तक उड़ा लेंगे। तीनों लोकों का सैर कराने वाले ट्रांसपोर्ट है। अच्छा है यह जो वर्ग बनाये हैं उसमें भी हर एक वर्ग अपने वर्ग को जाग्रत करने के उमंग-उत्साह में अच्छे रहते हैं। रेस भी करते हैं। पाण्डवों ने बापदादा को एक दृश्य दिखाया, कौन सा? यहाँ शान्तिवन का दृश्य देखा। हर एक वर्ग के टेबुल लगे हुए हैं और हर वर्ग वाले एक दो से रेस करते हैं, हम भी आगे, हम भी आगे। बापदादा ने खास टी.वी. में देखा, टेबुल सजाकर रखते हैं। अच्छा है, उमंग उत्साह अच्छा है लेकिन रीस नहीं करना, रेस ज़रूर करना। ट्रांसपोर्ट भी अच्छा उमंग-उत्साह में है। कोई नवीनता के प्लैन निकाले होंगे। अच्छा है, बापदादा खुश है।

**इंजीनियर-साइंटिस्ट विंग –** साइंस और इंजीनियर, आप लोगों ने तो बहुत प्लैन बनाये होंगे। ऐसा प्लैन बनाओ जो जल्दी से जल्दी जैसे आजकल साइंस बहुत फास्ट जा रही है तो आप भी ऐसा सेवा का प्लैन बनाओ जो जल्दी से जल्दी स्थापना की बिल्डिंग तैयार हो जाए, तब तो विनाश होगा ना। स्थापना के कार्य की बिल्डिंग जल्दी से जल्दी तैयार हो जाए। इंजीनियर्स भी कर सकते हैं तो साइंस वाले भी कर सकते हैं। अभी तीव्रगति का कोई प्लैन बनाओ। दृष्टि दी और दृष्टि से सृष्टि बदल जाए, ऐसे होना है। लास्ट में आपके एक सेकण्ड की दृष्टि कमाल करेगी। मेहनत नहीं करनी पड़ेगी। ऐसी कोई नई इन्वेन्शन निकालो। अच्छा है। वर्ग की सेवा तो हो रही है। अच्छा।

**गुजरात ने अच्छा जम्प लगाया –** (गुजरात में 23 फरवरी को 1 लाख की सभा इक्ट्ठी कर विशाल प्रोग्राम कर रहे हैं) गुजरात की टीचर्स और पाण्डव उठो। कम आये हैं, तैयारी कर रहे हैं। अच्छा है, अभी गुजरात को सब फालो करेंगे। एक दो को देखकर उमंग आता रहेगा। अच्छा बैठ जाओ, बहुत अच्छी हिम्मत रखी है। हिम्मत रखने की बापदादा इनएडवांस गुजरात को मुबारक दे रहे हैं।

अच्छा - अभी एक सेकण्ड में निराकारी आत्मा बन निराकार बाप की याद में लवलीन हो जाओ। **(ड्रिल)**

**चारों ओर के सर्व स्वराज्य अधिकारी, सदा साक्षीपन की सीट पर सेट रहने वाली अचल अडोल आत्मायें, सदा दातापन की स्मृति से सर्व को ज्ञान, शक्ति, गुण देने वाले रहमदिल आत्माओं को, सदा अपने चेहरे से बाप का चित्र दिखाने वाले श्रेष्ठ आत्माओं को, सदा खुशनसीब, खुशनुम: रहने वाले रूहे गुलाब, रूहानी गुलाब बच्चों को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।**

**दादियों से –** (सेवा के साथ सब तरफ 108 घण्टे योग के भी अच्छे प्रोग्राम चल रहे हैं) इस योग ज्वाला से ही विनाश ज्वाला फोर्स में आयेगी। अभी देखो बनाते हैं प्रोग्राम, फिर सोच में पड़ जाते हैं। योग से विकर्म विनाश होंगे, पाप कर्म का बोझ भस्म होगा, सेवा से पुण्य का खाता जमा होगा। तो पुण्य का खाता जमा कर रहे हैं लेकिन पिछले जो कुछ संस्कार का बोझ है, वह भस्म योग ज्वाला से होगा। साधारण योग से नहीं। अभी क्या है, योग तो लगाते हैं लेकिन पाप भस्म होने का ज्वाला रूप नहीं है इसलिए थोड़ा टाइम खत्म होता है फिर निकल आता है। इसलिए रावण को देखो, मारते हैं, जलाते हैं फिर हड्डियां भी पानी में डाल देते हैं। बिल्कुल भस्म हो जाए, पिछले संस्कार, कमजोर संस्कार बिल्कुल भस्म हो जाएं, भस्म नहीं हुए हैं। मरते हैं लेकिन भस्म नहीं होते हैं, मरने के बाद फिर जिंदा हो जाते हैं। संस्कार परिवर्तन से संसार परिवर्तन होगा। अभी संस्कारों की लीला चल रही है। संस्कार बीच-बीच में इमर्ज होते हैं ना! नामनिशान खत्म हो जाए, संस्कार परिवर्तन - यह है विशेष अण्डरलाइन की बात। संस्कार परिवर्तन नहीं हैं तो व्यर्थ संकल्प भी हैं। व्यर्थ समय भी है, व्यर्थ नुकसान भी है। होना तो है ही। (समय करेगा या स्वयं का पुरुषार्थ) दोनों मिलकर करेंगे, समय भी स्वयं का पुरुषार्थ करायेगा। संस्कार मिलन की महारास गाई हुई है। जो यादगार में है महारास, वह संस्कार मिलन की महारास है। अभी रास होती है, महारास नहीं हुई है। (महारास क्यों नहीं होती हैं?) अण्डरलाइन नहीं है, दृढ़ता नहीं है। अलबेलापन भिन्न-भिन्न प्रकार का है। अच्छा। आप सब तो ठीक

ही हैं ना!

**दादी जी से –** ठीक चेकिंग हो गई। (सब ओ.के. है), ठीक तो रहना ही है। फिर भी बहुत अच्छे चल रहे हैं, चलते रहेंगे। सभी की दुआयें चला रही हैं। आप लोगों को शरीर की आयु के हिसाब से देख तो सब खुश होते हैं, इतना कर रहे हैं, इतना चल रहे हैं और चलना ही है। यह भी निश्चित है कि चलना ही है। अच्छा। ओम् शान्ति।

# सेवा के साथ-साथ अब सम्पन्न बनने का प्लैन बनाओ, कर्मातीत बनने की धुन लगाओ

आज शिव बाप अपने सालिग्राम बच्चों के साथ अपनी और बच्चों के अवतरण की जयन्ती मनाने आये हैं। यह अवतरण की जयन्ती कितनी वण्डरफुल है। चारों तरफ के सभी बच्चे भाग-भाग कर आये हैं बाप की जयन्ती और अपनी जयन्ती मनाने के लिए। बाप और बच्चों की जयन्ती अर्थात् अवतरण दिवस एक ही है। बाप और बच्चों का एक दिवस जन्म यही वण्डर है। तो आज आप सभी सालिग्राम बच्चे बाप को मुबारक देने आये हो वा बाप से मुबारक लेने आये हो? देने भी आये हो, लेने भी आये हो। साथ-साथ की निशानी है कि आप बच्चों का और बाप का आपस में बहुत-बहुत-बहुत स्नेह है। इसलिए जन्म भी साथ-साथ है और रहते भी सारा जन्म कम्बाइण्ड अर्थात् साथ हैं। इतना प्यार देखा है! अगर आक्युपेशन भी है तो बाप और बच्चों का एक ही विश्व परिवर्तन करने का आक्युपेशन है और वायदा क्या है? कि परमधाम, स्वीट होम में भी साथ-साथ चलेंगे या आगे पीछे चलेंगे? साथ-साथ चलना है ना! तो ऐसा स्नेह आपका और बाप का है। न बाप अकेला कुछ कर सकता, न बच्चे अकेले कुछ कर सकते। कर सकते हो? सिवाए बाप के कुछ कर सकते हो! और बाप भी कुछ नहीं कर सकता। इसीलिए ब्रह्मा बाप का आधार लिया आप ब्राह्मणों को रचने के लिए। सिवाए ब्राह्मणों के बाप भी कुछ नहीं कर सकते। इसलिए इस अलौकिक अवतरण के जन्म दिवस पर बाप बच्चों को और बच्चे बाप को पदमापदम बार मुबारक दे रहे हैं। आप बाप को दे रहे हैं, बाप आपको दे रहे हैं। अमृतवेले से लेकर, उससे भी पहले से बच्चों की मुबारकें, कार्ड, पत्र, दिल के मीठे-मीठे गीत बाप को मिले और अभी भी बापदादा देख रहे हैं कि चारों ओर के देश-विदेश के बच्चे सूक्ष्म में बापदादा को मुबारक दे रहे हैं। पहुंच रही हैं। बच्चों के पास आवाज पहुंच रहा है और बच्चों के दिल का आवाज बाप को पहुंच रहा है। चारों ओर बच्चे खुशी में झूम रहे हैं। वाह! बाबा, वाह!

हम सालिग्राम आत्मायें! वाह! वाह! के गीत गा रहे हैं। इसी आपके जन्म दिवस की यादगार द्वापर से अब तक भक्त भी मनाते रहते हैं। भक्त भी भावना में कम नहीं हैं। लेकिन भगत हैं, बच्चे नहीं हैं। वह हर वर्ष मनाते हैं और आप सारे कल्प में एक बार अवतरण का महत्त्व मनाते हो। वह हर वर्ष व्रत रखते हैं, व्रत रखते भी हैं और व्रत लेते भी हैं। आप एक ही बार व्रत ले लेते हो, कापी आपकी ही की है लेकिन आपका महत्त्व और उनके यादगार के महत्त्व में अन्तर है। वह भी पवित्रता का व्रत लेते हैं लेकिन हर वर्ष व्रत लेते हैं एक दिन के लिए। आप सभी ने भी जन्म लेते एक बार पवित्रता का व्रत लिया है ना! लिया है कि लेना है? ले लिया है। एक बार लिया, वह वर्ष-वर्ष लेते हैं। सभी ने लिया है? सिर्फ ब्रह्मचर्य नहीं, सम्पूर्ण पवित्रता का व्रत लिया है। पाण्डव, सम्पूर्ण पवित्रता का व्रत लिया है? या सिर्फ ब्रह्मचर्य में ठीक हैं! ब्रह्मचर्य तो फाउण्डेशन है लेकिन सिर्फ ब्रह्मचर्य नहीं साथ में और चार भी हैं। चार का भी व्रत लिया है कि सिर्फ एक का लिया है? चेक करो। क्रोध करने की तो छुट्टी है ना? नहीं छुट्टी है? थोड़ा-थोड़ा तो क्रोध करना पड़ता है ना? नहीं करना पड़ता है? बोलो पाण्डव, क्रोध नहीं करना पड़ता है? करना तो पड़ता है! चलो, बापदादा ने देखा कि क्रोध और सभी साथी जो हैं, महाभूत का तो त्याग किया है लेकिन जैसे माताओं को, प्रवृत्ति वालों को बड़े बच्चों से इतना प्यार नहीं होता, मोह नहीं होता लेकिन पोत्रों धोत्रों से बहुत होता है। छोटे-छोटे बच्चे बहुत प्यारे लगते हैं। तो बापदादा ने देखा कि बच्चों को भी यह 5 विकारों के महाभूत जो हैं, महारूप उनसे तो प्यार कम हो गया है लेकिन इन विकारों के जो बाल बच्चे हैं ना, छोटे-छोटे अंश मात्र, वंश मात्र, उससे अभी भी थोड़ा-थोड़ा प्यार है। है प्यार! कभी-कभी तो प्यार हो जाता है। हो जाता है? मातायें? डबल फारेनर्स, क्रोध नहीं आता? कई बच्चे बड़ी चतुराई की बातें करते हैं, सुनायें क्या कहते हैं? सुनायें? अगर सुनायें तो आज छोड़ना पड़ेगा। तैयार हैं? तैयार हैं छोड़ेंगे? या सिर्फ फाइल में कागज जमा करेंगे? जैसे हर साल करते हो ना, प्रतिज्ञा के फाइल बाप के

पास बहुत-बहुत बड़े हो गये हैं, तो अभी भी ऐसे तो नहीं कि एक प्रतिज्ञा का कागज फाइल में एड कर देंगे, ऐसे तो नहीं! फाइनल करेंगे या फाइल में डालेंगे? क्या करेंगे? बोलो, टीचर्स क्या करेंगे? फाइनल? हाथ उठाओ। ऐसे ही वायदा नहीं करना। बापदादा फिर थोड़ा सा रूप धारण करेगा। ठीक है। डबल फारेनर्स - करेंगे फाइनल? जो फाइनल करेंगे वह हाथ उठाओ। टी.वी. में निकालो। छोटा, त्रेतायुगी हाथ बड़ा उठाओ। अच्छा, ठीक है। सुनो - बाप और बच्चों की बातें क्या होती हैं? बापदादा मुस्कराते रहते हैं। बाप कहते हैं क्रोध क्यों किया? कहते हैं मैंने नहीं किया, लेकिन क्रोध कराया गया। किया नहीं, मुझे कराया गया। अभी बाप क्या कहे? फिर क्या कहते हैं, अगर आप भी होते ना तो आपको भी आ जाता। मीठी-मीठी बातें करते हैं ना! फिर कहते हैं निराकार से साकार तन लेके देखो। अभी बताओ ऐसे मीठे बच्चों को बाप क्या कहे! बाप को फिर भी रहमदिल बनना ही पड़ता है। कहते हैं अच्छा, अभी माफ कर रहे हैं लेकिन आगे नहीं करना। लेकिन जवाब बहुत अच्छे-अच्छे देते हैं।

तो पवित्रता आप ब्राह्मणों का सबसे बड़े से बड़ा श्रृंगार है, इसीलिए आपके चित्रों का कितना श्रृंगार करते हैं। यह पवित्रता का यादगार श्रृंगार है। पवित्रता, सम्पूर्ण पवित्रता, काम चलाऊ पवित्रता नहीं। सम्पूर्ण पवित्रता आप ब्राह्मण जीवन की सबसे बड़े ते बड़ी प्रापर्टी है, रॉयल्टी है, पर्सनाल्टी है। इसीलिए भक्त लोग भी एक दिन पवित्रता का व्रत रखते हैं। यह आपकी कॉपी की है। दूसरा व्रत लेते हैं - खाने-पीने का। खाने पीने का व्रत भी आवश्यक होता है। क्यों? आप ब्राह्मणों ने भी खाने-पीने का व्रत पक्का लिया है ना! जब मधुबन आने का फार्म सबसे भराते हो, तो यह भी फार्म में भराते हो ना - खाना-पीना शुद्ध है? भराते हो ना! तो खाने-पीने का व्रत पक्का है? है पक्का कि कभी-कभी कच्चा हो जाता है? डबल विदेशियों का तो डबल पक्का होगा ना! डबल विदेशियों का डबल पक्का है या कभी थक जाते हो तो कहते हो अच्छा आज थोड़ा खा लेते हैं। थोड़ा ढीला कर देते

हैं, नहीं। खाने-पीने का पक्का है, इसीलिए भक्त लोग भी खाने-पीने का व्रत लेते हैं। तीसरा व्रत लेते हैं जागरण का - रात जागते हैं ना! तो आप ब्राह्मण भी अज्ञान नींद से जागने का व्रत लेते हो। बीच-बीच में अज्ञान की नींद तो नहीं आती है ना! भक्त लोग आपको कॉपी कर रहे हैं, तो आप पक्के हैं तभी तो कॉपी करते हैं। कभी भी अज्ञान अर्थात् कमजोरी की, अलबेलेपन की, आलस्य की नींद नहीं आये। या थोड़ा-थोड़ा झुटका आवे तो हर्जा नहीं है? झुटका खाते हो? ऐसे अमृतवेले भी कई झुटके खाते हैं। लेकिन यह सोचो कि हमारे यादगार में भक्त लोग क्या-क्या कॉपी कर रहे हैं! वह इतने पक्के रहते हैं, कुछ भी हो जाए, लेकिन व्रत नहीं तोड़ते हैं। आज के दिन भक्त लोग व्रत रखेंगे खाने-पीने का भी और आप क्या करेंगे आज? पिकनिक करेंगे? वह व्रत रखेंगे आप पिकनिक करेंगे, केक काटेंगे ना! पिकनिक करेंगे क्योंकि आपने जन्म से व्रत ले लिया है इसीलिए आज के दिन पिकनिक करेंगे।

बापदादा अभी बच्चों से क्या चाहते हैं? जानते तो हो। संकल्प बहुत अच्छे करते हो, इतने अच्छे संकल्प करते हैं जो सुन-सुन खुश हो जाते हैं। संकल्प करते हो लेकिन बाद में क्या होता है? संकल्प कमजोर क्यों हो जाते हैं? जब चाहते भी हो क्योंकि बाप से प्यार बहुत है, बाप भी जानते हैं कि बापदादा से सभी बच्चों का दिल से प्यार है और प्यार में सभी हाथ उठाते हैं कि 100 परसेन्ट तो क्या लेकिन 100 परसेन्ट से भी ज्यादा प्यार है और बाप भी मानते हैं प्यार में सब पास हैं। लेकिन क्या है? लेकिन है कि नहीं है? लेकिन आता है कि नहीं आता है? पाण्डव, बीच-बीच में लेकिन आ जाता है? ना नहीं करते हैं, तो हाँ है। बापदादा ने मैजारिटी बच्चों की एक बात नोट की है, प्रतिज्ञा कमजोर होने का एक ही कारण है, एक ही शब्द है। सोचो, वह एक शब्द क्या है? टीचर्स बोलो एक शब्द क्या है? पाण्डव बोलो एक शब्द क्या है? याद तो आ गया ना! एक शब्द है - 'मैं'। अभिमान के रूप में भी 'मैं' आता है और कमजोर करने में भी 'मैं' आता है। मैंने जो कहा, मैंने जो

किया, मैंने जो समझा, वही राइट है। वही होना चाहिए। यह अभिमान का 'मैं'। मैं जब पूरा नहीं होता है तो फिर दिलशिकस्त में भी आता है, मैं कर नहीं सकता, चल नहीं सकता, बहुत मुश्किल है। एक बॉडीकॉन्सेसनेस का 'मैं' बदल जाए, 'मैं' स्वमान भी याद दिलाता है और 'मैं' देह-अभिमान में भी लाता है। 'मैं' दिलशिकस्त भी करता है और 'मैं' दिलखुश भी करता है और अभिमान की निशानी जानते हो क्या होती है? कभी भी किसी में भी अगर बॉडीकॉन्सेस का अभिमान अंश मात्र भी है, उसकी निशानी क्या होगी? वह अपना अपमान सहन नहीं कर सकेगा। अभिमान अपमान सहन नहीं करायेगा। जरा भी कोई कहेगा ना - यह ठीक नहीं है, थोड़ा निर्माण बन जाओ, तो अपमान लगेगा, यह अभिमान की निशानी है।

बापदादा वतन में मुस्करा रहे थे - यह बच्चे शिवरात्रि पर यहाँ-वहाँ भाषण करते हैं ना, अभी बहुत भाषण कर रहे हैं ना। उसमें कहते हैं, बापदादा को बच्चों की प्वाइंट याद आई। तो उसमें कहते हैं कि शिवरात्रि पर बकरे की बलि चढ़ाते हैं - वह बकरा में-में बहुत करता है ना, तो ऐसे शिवरात्रि पर यह ''मैं'' ''मैं'' की बलि चढ़ा दो। तो बाप सुन-सुनकर मुस्करा रहे थे। तो इस 'मैं' की आप भी बलि चढ़ा दो। सरेण्डर कर सकते हो? कर सकते हैं? पाण्डव कर सकते हो? डबल फारनेर्स कर सकते हो? फुल सरेण्डर या सरेण्डर? फुल सरेण्डर। आज बापदादा झण्डे पर ऐसे ही प्रतिज्ञा नहीं करायेगा। आज प्रतिज्ञा करो और फाइल में कागज जमा करना पड़े, ऐसी प्रतिज्ञा नहीं करायेगा। क्या सोचते हो, दादियां आज भी ऐसी प्रतिज्ञा करायें? फाइनल करेंगे या फाइल में जमा करेंगे? बोलो, (फाइनल कराओ) हिम्मत है? हिम्मत है? सुनने में मगन हो गये हैं, हाथ नहीं उठा रहे हैं। कल तो कुछ नहीं हो जायेगा! नहीं ना! कल माया चक्कर लगाने आयेगी। माया का भी आपसे प्यार है ना क्योंकि आजकल तो सभी धूमधाम से सेवा का प्लैन बना रहे हैं ना। जब सेवा जोर-शोर से कर रहे हो तो सेवा जोर-शोर से करना अर्थात् सम्पूर्ण समाप्ति के समय को समीप लाना है। ऐसे नहीं समझो भाषण

करके आये लेकिन समय को समीप ला रहे हो। सेवा अच्छी कर रहे हो। बापदादा खुश है। लेकिन बापदादा देखते हैं कि समय समीप आ रहा है, ला रहे हो आप, ऐसे ही लाख डेढ़ लाख इकट्ठा नहीं किया, यह समय को समीप लाया। अभी गुजरात ने किया, बॉम्बे करेगा और भी कर रहे हैं। चलो लाख नहीं तो 50 हज़ार ही सही लेकिन सन्देश दे रहे हो तो सन्देश के साथ-साथ सम्पन्नता की भी तैयारी है? तैयारी है? विनाश को बुला रहे हो तो तैयारी है? दादी ने क्वेश्चन किया था कि अभी क्या ऐसा प्लैन बनायें जो जल्दी-जल्दी प्रत्यक्षता हो जाए? तो बापदादा कहते हैं - प्रत्यक्षता तो सेकण्ड की बात है लेकिन प्रत्यक्षता के पहले बापदादा पूछते हैं स्थापना वाले एवररेडी हैं? पर्दा खोलें? कि कोई कान का श्रृंगार कर रहा होगा, कोई माथे का? तैयार हैं? हो जायेंगे, कब? डेट बताओ। जैसे अभी डेट फिक्स की ना! इस मास के अन्दर सन्देश देना है, ऐसे सभी एवररेडी, कम से कम 16 हज़ार तो एवररेडी हों, 9 लाख छोड़ो, उसको भी छोड़ दो। 16 हज़ार तो तैयार हों? हैं तैयार? बजायें ताली? ऐसे ही हाँ नहीं करना। एवररेडी हो जाओ तो बापदादा टच करेगा, ताली बजायेगा, प्रकृति अपना काम शुरू करेगी। साइंस वाले अपना काम शुरू कर देंगे। क्या देरी है, सब रेडी हैं। १६ हजार तैयार हैं? हैं तैयार? हो जायेंगे। (आपको ज्यादा पता है) यह जवाब तो छुड़ाने का है। 16 हज़ार की रिपोर्ट आनी चाहिए एवररेडी, सम्पूर्ण पवित्रता से सम्पन्न हो गये। बापदादा को ताली बजाने में कोई देरी नहीं है। डेट बताओ। (आप डेट दो) सभी से पूछो। देखो होना तो है ही लेकिन जो सुनाया एक 'मैं' शब्द का सम्पूर्ण परिवर्तन, तब बाप के साथ चलेंगे। नहीं तो पीछे-पीछे चलना पड़ेगा। बापदादा इसीलिए अभी गेट नहीं खोलते हैं क्योंकि साथ चलना है।

ब्रह्मा बाप सभी बच्चों से पूछते हैं कि गेट खोलने की डेट बताओ। गेट खोलना है ना! चलना है ना! आज मनाना अर्थात् बनना। सिर्फ केक नहीं काटेंगे लेकिन मैं को समाप्त करेंगे। सोच रहे हैं या सोच लिया है? क्योंकि बापदादा के पास अमृतवेले सबके बहुत वैरायटी संकल्प पहुंचते हैं। तो

आपस में राय करना और डेट बाप को बताना। जब तक डेट नहीं फिक्स की है ना, तब तक कोई कार्य नहीं होता। पहले आपस में महारथी डेट फिक्स करो फिर सब फालो करेंगे। फालो करने वाले तैयार हैं और आपकी हिम्मत से और बल मिल जायेगा। जैसे देखो अभी उमंग उल्हास दिलाया तो तैयार हो गये ना! ऐसे सम्पन्न बनने का प्लैन बनाओ। धुन लगाओ, कर्मातीत बनना ही है। कुछ भी हो जाए बनना ही है, करना ही है, होना ही है। साइंस वालों का भी आवाज, विनाश करने वालों का भी आवाज बाप के कानों में आता है, वह भी कहते हैं क्यों रोकते हैं, क्यों रोकते हैं...। एडवांस पार्टी भी कहती है डेट फिक्स करो, डेट फिक्स करो। ब्रह्मा बाप भी कहते हैं डेट फिक्स करो। तो यह मीटिंग करो। बाकी सेवा जो कर रहे हैं, बापदादा सन्तुष्ट हैं। हर एक कर रहा है, फारेन भी कर रहा है, भारत में सब ज़ोन वाले भी कर रहे हैं, प्रवृत्ति वाले भी कर रहे हैं, सब कर रहे हैं। इसकी मुबारक हो, सेवा की मुबारक हो, मुबारक हो। अब यह कमाल करके दिखाओ। दादियों को खास कह रहे हैं, बड़े भाईयों को खास कह रहे हैं। अब दूसरी शिवरात्रि में धमाल और कमाल दोनों साथ-साथ हों। ठीक है। आगे लाइन वाली टीचर्स ठीक है? मीटिंग करेंगे ना! बापदादा को अभी डेट चाहिए, ऐसे नहीं हो जायेगा, कर रहे हैं, यह नहीं। यह बहुत हो गया। पहले बच्चे डेट देवें फिर बाप फाइनल करेंगे। बापदादा तो कहते हैं दूसरी शिवरात्रि पर कमाल और धमाल दोनों साथ हों। अभी करो तैयारी। टीचर्स मंजूर है? डबल विदेशी मंजूर है? पहली लाइन मंजूर है? पाण्डव मंजूर है? (हाँ जी) मुबारक हो। बहुत दु:खी हैं। बापदादा को अभी इतना दु:ख देखा नहीं जाता है। पहले तो आप शक्तियों को, देवता रूप पाण्डवों को रहम आना चाहिए। कितना पुकार रहे हैं। अभी आवाज पुकार का आपके कानों में गूंजना चाहिए। समय की पुकार का प्रोग्राम करते हो ना! अभी भक्तों की पुकार भी सुनो, दु:खियों की पुकार भी सुनो। सेवा में नम्बर अच्छा है, यह तो बापदादा भी सर्टीफिकेट देते हैं, उमंग-उत्साह अच्छा है, गुजरात ने नम्बरवन लिया, तो

नम्बरवन की मुबारक है। अभी थोड़ी-थोड़ी पुकार सुनो तो सही, बिचारे बहुत पुकार रहे हैं, जिगर से पुकार रहे हैं, तड़फ रहे हैं। साइंस वाले भी बहुत चिल्ला रहे हैं, कब करें, कब करें, कब करें, पुकार रहे हैं। आज भले केक काट लो, लेकिन कल से पुकार सुनना। मनाना तो संगमयुग के स्वहेज़ हैं। एक तरफ मनाना दूसरे तरफ आत्माओं को बनाना। अच्छा। तो क्या सुना?

आपका गीत है - दु:खियों पर कुछ रहम करो। सिवाए आपके कोई रहम नहीं कर सकता। इसलिए अभी समय प्रमाण रहम के मास्टर सागर बनो। स्वयं पर भी रहम, अन्य आत्माओं प्रति भी रहम। अभी अपना यही स्वरूप लाइट हाउस बन भिन्न-भिन्न लाइट्स की किरणें दो। सारे विश्व की अप्राप्त आत्माओं को प्राप्ति की अंचली की किरणें दो। अच्छा।

**डबल विदेशी –** डबल विदेशियों को देखकरके बापदादा को डबल खुशी होती है क्यों? डबल क्यों खुशी होती है? बापदादा को इस बात की विशेष खुशी होती है कि डबल विदेशियों ने डबल कमाल दिखाई है। कौन सी कमाल दिखाई है? देखो अभी इस ग्रुप में भी भिन्न-भिन्न देश के वृक्ष की टालियां आई हुई हैं। अभी भी 60 देशों से आये हुए हैं और आगे भी बहुत हैं। तो भिन्न-भिन्न वृक्ष की डालियां एक चंदन का वृक्ष बन गये हैं। यह कमाल की है। एक ही वृक्ष की डालियां हो ना! कि अलग-अलग हैं? एक हैं? और दूसरी कमाल - भिन्न-भिन्न देश का कल्चर एक कल्चर बना दिया। न विदेश का कल्चर, न भारत का कल्चर लेकिन एक ब्राह्मण कल्चर बन गया। तो अभी किस कल्चर के हो? विदेश के या ब्राह्मण कल्चर है? ब्राह्मण कल्चर। तो एक कल्चर, एक चंदन का वृक्ष बन गये। तो डबल कमाल पर बापदादा को डबल खुशी होती है। 60 देश याद हैं या एक ही मधुबन याद है? मधुबन निवासी हो ना! इसलिए बापदादा को डबल खुशी है। आप सबको बहुत खुशी है ना! कितनी खुशी है? बहुत खुशी है। सदा खुश रहो, आबाद रहो, औरों को भी खुशी से आबाद करते रहो। सभा अच्छी लगती है, इन्टरनेशनल सभा है ना! तो आप सभी को बापदादा अलौकिक जन्म की

मुबारक दे रहे हैं। मुबारक हो, मुबारक हो। अच्छा।

**सेवा का टर्न कर्नाटक का है –** अच्छा है, यह गोल्डन चांस सेवा का, परिवार के नजदीक लाने का चांस है। देखो सेवा में आये हो तो सबकी नज़र कहाँ पड़ती है। कर्नाटक वाले सेवा कर रहे हैं। तो सबको कर्नाटक याद आता है और आपको याद की दुआयें मिलती हैं। अभी कर्नाटक में एक बापदादा की श्रेष्ठ आशा है, वह अभी पूरी नहीं की है। बताऊं क्या? बताऊं टीचर्स? कर्नाटक में बापदादा ने देखा है कि वारिस क्वालिटी बन सकते हैं। जितने वारिस क्वालिटी, भले दो-चार स्थान और भी हैं, उसकी बात नहीं करते हैं लेकिन कर्नाटक की धरनी से वारिस बहुत निकल सकते हैं। (सभी ने ताली बजाई) सिर्फ ताली नहीं बजाना, निकाल के दिखाना है। अच्छे अच्छे हैं, बापदादा की नज़र पड़ती है लेकिन टीचर्स की नज़र नहीं पड़ी है। सुना। पाण्डव, सुना। बहुत निकल सकते हैं। बापदादा को कोने-कोने में याद आते हैं। सारा यज्ञ कर्नाटक के वारिस चला सकते हैं। क्या समझा? अभी निकालना और बहुत सहज निकल सकते हैं। सिर्फ अटेन्शन नहीं दिया है। जनरल सेवा में लग गये हैं। पर्सनल सेवा, मन्सा सेवा का चमत्कार वारिस निकाल सकता है। पालना चाहिए। उठाओ, पान की बीड़ा उठाओ। दादी को कहो हम सहयोगी बनेंगे। बनायेंगे और बनेंगे। बनेंगे? अच्छा। देखेंगे, 6 मास में देखेंगे। (तीनों दादियाँ आयें) दादियाँ तो आ जायेंगी, पहले आप निकालो। दादियाँ आयेंगी. कुछ वारिस तैयार करो फिर दादियों को बुलाओ। आयेंगी। जो प्लैन बनाने चाहो, बनाओ लेकिन वारिस निकल सकते हैं। पालना देनी पड़ेगी। टीचर्स यह एक क्लास करके जाना कि वारिस क्वालिटी कैसे निकाली जाती है। (दादी जानकी से) यह क्लास कराना। क्या समझते हो, हो सकता है। अच्छा, 6 मास का टाइम दे रहे हैं, देखेंगे। देखो कहाँ से माइक ज्यादा निकल सकते हैं, कहाँ से वारिस ज्यादा निकल सकते हैं। होना ही है। जब समय समाप्त होगा तो सब निकलेंगे ना। निकलेंगे ज़रूर। सुना। सिर्फ कांध नहीं हिलाना, करके दिखाना। कर्नाटक

वाले कांध बहुत अच्छा हिलाते हैं, ऐसे ऐसे करते हैं। अच्छा लगता है। क्वालिटी बहुत है। अच्छा।

**स्पार्क ग्रुप –** अच्छा, ऐसा ही प्लैन बनाओ जो आपकी मीटिंग से आप ही अपने-अपने स्थान पर समय को समीप लाने के एक्जैम्पल बन जाओ। यही प्लैन बना रहे हो ना! कि आने वाले समय में क्या तैयारी चाहिए! बापदादा यही इशारा देते हैं - कोई भी समस्या को सामना करने के लिए सहज विधि है पहले  एकाग्रता की शक्ति। मन एकाग्र हो जाए, तो एकाग्रता की शक्ति निर्णय बहुत अच्छा करती है। इसीलिए देखो कोर्ट में भी तराजू दिखाते हैं। निर्णय की निशानी तराजू इसलिए दिखाते हैं - एकाग्र कांटा हो जाता है। तो कोई भी समस्या को जिस समय चारों ओर हलचल हो उस समय अगर मन की एकाग्रता की शक्ति हो, जहाँ मन को चाहो वहाँ एकाग्र हो जाए, निर्णय हो जाए किस परिस्थिति में कौन सी शक्ति कार्य में लायें, तो एकाग्रता की शक्ति दृढ़ता स्वत: ही दिलाती है और दृढ़ता सफलता की चाबी है। तो ऐसे अपने को एक एक्जैम्पुल बनाके औरों को प्रेरणा देते रहो। ठीक है ना! अच्छा है। हर एक वर्ग अपने सेवा की उन्नति के उमंग-उत्साह में अच्छा है। अच्छा है और अच्छा ही होगा। अच्छा है, सब भिन्न-भिन्न सेन्टर के अच्छे-अच्छे कार्य में लगे हुए हैं, प्लैन बनाने में। सफलता तो है ही। अच्छा।

अच्छा - सभी मीठी-मीठी माताओं को, कुमारियों को खास बापदादा की दुआओं भरी यादप्यार। मातायें तो शृंगार हैं। माताओं के बिना शृंगार नहीं होता, न सेन्टर का, न मधुबन का। खास माताओं को आगे बढ़ाने के लिए बाप को आना पड़ा। अगर माताओं को उठायेंगे तो सारा हाल खड़ा हो जायेगा, इसलिए बैठे रहो। आज पाण्डव भी कम नहीं हैं, आधा-आधा है। अच्छा है, देखो विजय का गायन पाण्डवों का है। शक्तियों का गायन शक्ति देने का है। तो पाण्डव नाम ही विजय की स्मृति दिलाते हैं। इसीलिए हर एक पाण्डव को अपने मस्तक में विजय का तिलक सदा स्मृति में रखना चाहिए।

अच्छा - बच्चे भी आये हैं। बच्चे कहते हैं हम नहीं रह जायें। बच्चों से भी श्रृंगार है। छोटे-छोटे बच्चे भी, बापदादा ने सुना कि कई बच्चे, माँ-बाप को ज्ञान में ले आये हैं। वाह! बच्चे वाह! परिवार के कल्याण के लिए बच्चे निमित्त बन जाते हैं। तो बच्चों की भी बलिहारी है।

अच्छा। सभी टीचर्स तो हैं ही बापदादा के राइट हैण्डस। पाण्डव लेफ्ट हैण्ड नहीं हैं, पाण्डव भी राइट हैण्ड हैं। लेफ्ट हैण्ड तो दूसरे हैं, आप सब राइट हैण्डस हो। टीचर्स को अभी साक्षात्कार मूर्त बनना है। अभी थोड़ा सा यह 'मैं' को आज फुल सरेण्डर करेंगे ना तो साक्षात्कार होने शुरू हो जायेंगे। यह मैं पन का पर्दा थोड़ा आगे आ जाता है, यह पर्दा हट जायेगा तो हर एक से बाप का साक्षात्कार होगा। तब यह नारा लगेगा - साक्षात् बाप आ गये, आ गये, आ गये। साक्षात्कार दिव्य दृष्टि से नहीं, साक्षात् रूप का साक्षात्कार होगा। सबके मुख से एक ही आवाज निकलेगा - यह तो साक्षात् बाप हैं। ऐसी तैयारी कर रहे हो ना! अच्छा।

**सर्व साक्षात् बाप मूर्त श्रेष्ठ आत्माओं को, सदा उमंग-उत्साह में रहने वाले बाप के समीप आत्माओं को, सदा सर्व कदम बाप समान करने वाले बच्चों को, चारों ओर के ब्राह्मण जन्म के मुबारक पात्र बच्चों को, सदा एकाग्रता की शक्ति सम्पन्न आत्माओं को बापदादा का यादप्यार और पदमापद्मगुणा जन्म मुबारक हो, मुबारक हो, मुबारक हो और नमस्ते।**

**दादियों से** – (गुजरात की सेवा का समाचार सुनाया-सब एकमत हो गये जो 28 दिन में इतना बड़ा प्रोग्राम किया) प्रत्यक्ष स्वरूप तो देख लिया ना - कि संकल्प में कितनी शक्ति है। व्यर्थ से छुट्टी हो गई। एकता आ गई। सेवा और योग दोनों अच्छे चल रहे हैं। (थके भी नहीं) सेवा का चार्ट चारों ओर का अच्छा है, अभी सिर्फ सबको सम्पन्न बनाओ। कर्नाटक बहुत कुछ कर सकता है। सिर्फ पालना चाहिए वहाँ। (कर्नाटक में बहुत सेन्टर हैं) सेन्टर तो क्या लेकिन हस्तियां भी हैं। कोई करके दिखावे, कर्नाटक में कोई सेवा करके दिखावे। कर सकते हैं, प्लैन बनाओ। अच्छा है। बाकी आप (दादी) तो हैं ही सदा भुजाओं में। भुजाओं में समाई हुई रहती हैं। बापदादा की

सहयोगी भुजायें भी हो और भुजाओं में ही रहती हो। सेवा के लिए भुजायें हो और रहने के लिए भुजाओं में हो। अच्छा - दादियां कह रही हैं, हम भुजायें भी हैं, भुजाओं में भी हैं, ततत्वम्। आप कहाँ रहते हो? बाप की भुजाओं में रहते हो ना, कि बाहर निकल जाते हो? जो प्यारे होते हैं वह सदा भुजाओं में ही रहते हैं। और भुजायें बनके सेवा में लग जाते हैं। कितने भाग्यवान हो, भगवान की भुजायें, तो भुजाओं को ही बाहुबल कहा जाता है। तो बाप की भुजायें अर्थात् बाप के बल की निशानी हो। इसीलिए देवियों को, देवताओं को ज्यादा भुजायें ही दिखाई हैं। टांगे नहीं दिखाई हैं, भुजायें दिखाई हैं। सिर भी रावण को दिखाये हैं। देवी-देवताओं को भुजायें दिखाई हैं क्योंकि भुजायें बल की निशानी हैं। तो कितनी भुजायें हैं, देखो। अच्छा। फर्स्ट भुजायें हों। आदि रत्नों ने एकता का ठेका उठाया हुआ है। एक है स्थापना के आदि रत्न और दूसरे हैं सेवा के आरम्भ के आदि रत्न। दोनों आदि रत्नों का महत्त्व है। है ना! सेवा के आदि रत्न हैं ना - यह सामने बैठे हैं सब। अच्छा है। समय को समीप लावें। प्रवृत्ति वाले और ही निवृत्त ज्यादा रहते हैं। देखो, जब से प्रवृत्ति वाले सेवा में आगे आये हैं तब से वायुमण्डल परिवर्तन हुआ है। नहीं तो आप लोगों से भागते थे, अभी कहते हैं आओ, हमारे पास आओ। यह प्रवृत्ति वालों की कमाल है। ऐसे नहीं है कि प्रवृत्ति वाले 108 की माला में नहीं आ सकते हैं। मन से सरेण्डर, सरेण्डर की लिस्ट में ही हैं। अच्छा।

**67वीं त्रिमूर्ति शिव जयन्ती पर प्यारे अव्यक्त बापदादा ने अपने हस्तों से शिव ध्वज फहराया और सबको बधाईयां दी।**

आज के दिन सभी ने अपने जन्म दिन की मुबारक दी और ली और झण्डा भी लहराया। लेकिन अभी वह दिन जल्दी लाना है जो विश्व के ग्लोब के ऊपर सर्व आत्मायें खड़ी होकर आप सबके फेस में बाप का झण्डा देखें। कपड़े का झण्डा तो निमित्त मात्र है लेकिन एक-एक बच्चे का फेस बाप का चित्र दिखावे। ऐसा झण्डा लहराना है। वह दिन भी बहुत-बहुत-बहुत जल्दी लाना है, आना है, आना है। ओम् शान्ति।

17-03-2003

# इस वर्ष - स्वमान में रहना, सम्मान देना, सबका सहयोगी बनना और समर्थ बनाना

आज भाग्य विधाता बापदादा चारों ओर के हर एक बच्चे के मस्तक में भाग्य की तीन लकीरें देख रहे हैं। एक परमात्म पालना की भाग्यवान लकीर, दूसरी सत शिक्षक की श्रेष्ठ शिक्षा की भाग्यवान लकीर, तीसरी श्रीमत की चमकती हुई लकीर। चारों ओर के बच्चों के मस्तक बीच तीनों लकीरें बहुत अच्छी चमक रही हैं। आप सभी भी अपने तीनों भाग्य की लकीर को देख रहे हैं ना। जब भाग्य विधाता आप बच्चों का बाप है तो आपके सिवाए श्रेष्ठ भाग्य और किसका हो सकता है! बापदादा देख रहे हैं विश्व की अनेक करोड़ आत्मायें हैं लेकिन उन करोड़ों में से 6 लाख परिवार... कितने थोड़े हैं! कोटों में कोई हो गये ना! वैसे हर मानव के जीवन में यह तीनों बातें पालना, पढ़ाई और श्रेष्ठ मत, तीनों ही आवश्यक हैं। लेकिन यह परमात्म पालना और देव आत्मायें वा मानव आत्माओं की मत, पालना, पढ़ाई में रात-दिन का अन्तर है। तो इतना श्रेष्ठ भाग्य जो संकल्प में भी नहीं था लेकिन अब हर एक का दिल गाता है - पा लिया। पा लिया वा पाना है? क्या कहेंगे? पा लिया ना! बाप भी ऐसे बच्चों के भाग्य को देख हर्षित होते हैं। बच्चे कहते वाह बाबा वाह! और बाप कहते वाह बच्चे वाह! बस इसी भाग्य को सिर्फ स्मृति में नहीं रखना है लेकिन सदा स्मृति स्वरूप रहना है। कई बच्चे सोचते बहुत अच्छा हैं लेकिन सोचना स्वरूप नहीं बनना है, स्मृति स्वरूप बनना है। स्मृति स्वरूप सो समर्थ स्वरूप है। सोचना स्वरूप समर्थ स्वरूप नहीं है।

बापदादा बच्चों की भिन्न-भिन्न लीला देखते मुस्कराते रहते हैं। कोई-कोई सोचता स्वरूप रहते हैं, स्मृति स्वरूप सदा नहीं रहते। कभी सोचता स्वरूप, कभी स्मृति स्वरूप। जो स्मृति स्वरूप रहते हैं वह निरन्तर नेचरल स्वरूप रहते हैं। जो सोचता स्वरूप रहते हैं उन्हें मेहनत करनी पड़ती है। यह संगमयुग मेहनत का युग नहीं है, सर्व प्राप्तियों के अनुभवों का युग है।

63 जन्म मेहनत की लेकिन अब मेहनत का फल प्राप्त करने का युग अर्थात् समय है।

बापदादा देख रहे थे कि देहभान की स्मृति में रहने में क्या मेहनत की - मैं फलाना हूँ, मैं फलाना हूँ... यह मेहनत की? नेचरल रहा ना! नेचर बन गई ना बॉडी कान्सेस की! इतनी पक्की नेचर हो गई जो अभी भी कभी-कभी कई बच्चों को आत्म-अभिमानी बनने के समय बॉडी कान्सेसनेस अपने तरफ आकर्षित कर लेती है। सोचते हैं मैं आत्मा हूँ, मैं आत्मा हूँ, लेकिन देहभान ऐसा नेचरल रहा है जो बार-बार न चाहते, न सोचते देहभान में आ जाते हैं। बापदादा कहते हैं अब मरजीवा जन्म में आत्म-अभिमान अर्थात् देही-अभिमानी स्थिति भी ऐसे ही नेचर और नेचरल हो। मेहनत नहीं करनी पड़े - मैं आत्मा हूँ, मैं आत्मा हूँ। जैसे कोई भी बच्चा पैदा होता है और जब उसे थोड़ा समझ में आता है तो उसको परिचय देते हैं आप कौन हो, किसके हो, ऐसे ही जब ब्राह्मण जन्म लिया तो आप ब्राह्मण बच्चों को जन्मते ही क्या परिचय मिला? आप कौन हो? आत्मा का पाठ पक्का कराया गया ना! तो यह पहला परिचय नेचरल नेचर बन जाए। नेचर नेचरल और निरन्तर रहती है, याद करना नहीं पड़ता। ऐसे हर ब्राह्मण बच्चे की अब समय प्रमाण देही-अभिमानी स्टेज नेचरल हो। कई बच्चों की है, सोचना नहीं पड़ता, स्मृति स्वरूप हैं। अब निरन्तर और नेचरल स्मृति स्वरूप बनना ही है। लास्ट अन्तिम पेपर सभी ब्राह्मणों का यही छोटा-सा है - ''नष्टोमोहा स्मृति स्वरूप।''

तो इस वर्ष में क्या करेंगे? कई बच्चे पूछते हैं - इस वर्ष में क्या विशेष लक्ष्य रखें? तो बापदादा कहते हैं सदा देही-अभिमानी, स्मृति स्वरूप भव। जीवनमुक्ति तो प्राप्त होनी ही है लेकिन जीवनमुक्त होने के पहले मेहनत मुक्त बनो। यह स्थिति समय को समीप लायेगी और आपके सर्व विश्व के भाई और बहनों को दुःख, अशान्ति से मुक्त करेगी। आपकी यह स्थिति आत्माओं के लिए मुक्तिधाम का दरवाजा खोलेगी। तो अपने भाई बहनों के ऊपर रहम नहीं आता! कितना चारों ओर आत्मायें चिल्ला रही हैं तो आपकी

मुक्ति सर्व को मुक्ति दिलायेगी। यह चेक करो - नेचरल स्मृति सो समर्थ स्वरूप कहाँ तक बने हैं? समर्थ स्वरूप बनना ही व्यर्थ को सहज समाप्त कर देगा। बार-बार मेहनत नहीं करनी पड़ेगी।

अभी इस वर्ष बापदादा बच्चों के स्नेह में कोई भी बच्चे की किसी भी समस्या में मेहनत नहीं देखने चाहते। समस्या समाप्त और समाधान समर्थ स्वरूप। क्या यह हो सकता है? बोलो दादियां हो सकता है? टीचर्स बोलो, हो सकता है? पाण्डव हो सकता है? फिर बहाना नहीं बताना, यह था ना, यह हुआ ना! यह नहीं होता तो नहीं होता! बापदादा बहुत मीठे-मीठे खेल देख चुके हैं। कुछ भी हो, हिमालय से भी बड़ा, सौ गुणा समस्या का स्वरूप हो, चाहे तन द्वारा, चाहे मन द्वारा, चाहे व्यक्ति द्वारा, चाहे प्रकृति द्वारा समस्या, पर-स्थिति आपकी स्व-स्थिति के आगे कुछ भी नहीं है और स्व-स्थिति का साधन है - स्वमान। नेचरल रूप में स्वमान हो। याद नहीं करना पड़े, बार-बार मेहनत नहीं करनी पड़े, नहीं-नहीं मैं स्वदर्शन चक्रधारी हूँ, मैं नूरे रत्न हूँ, मैं दिलतख्तनशीन हूँ.... हूँ ही। और कोई होने हैं क्या! कल्प पहले कौन बने थे? और बने थे या आप ही बने थे? आप ही थे, आप ही हैं, हर कल्प आप ही बनेंगे। यह निश्चित है। बापदादा सब चेहरे देख रहे हैं यह वही कल्प पहले वाले हैं। इस कल्प के हो या अनेक कल्प के हो? अनेक कल्प के हो ना! हो? हाथ उठाओ जो हर कल्प वाले हैं? फिर तो निश्चित है ना, आपको तो पास सर्टीफिकेट मिल गया है ना कि लेना है? मिल गया है ना? मिल गया है या लेना है? कल्प पहले मिल गया है, अभी क्यों नहीं मिलेगा। तो यही स्मृति स्वरूप बनो कि सर्टीफिकेट मिला हुआ है। चाहे पास विद आनर का, चाहे पास का, यह फर्क तो होगा, लेकिन हम ही हैं। पक्का है ना! कि ट्रेन में जाते-जाते भूलता जायेगा, प्लेन में जाके उड़ जायेगा? नहीं।

जैसे देखो इस वर्ष संकल्प दृढ़ किया कि शिवरात्रि चारों ओर उमंग-उत्साह से मनानी है, मना ली ना! दृढ़ संकल्प से जो सोचा वह हो गया ना! तो यह किस बात की कमाल है? एकता और दृढ़ता। सोचा था 67 प्रोग्राम

करने का लेकिन बापदादा ने देखा कि उससे भी ज्यादा कई बच्चों ने प्रोग्राम किये हैं। यह है समर्थ स्वरूप की निशानी, उमंग-उत्साह का प्रत्यक्ष प्रमाण। स्वत: ही चारों ओर कर लिया ना! ऐसे ही सब मिलकर एक दो को हिम्मत बढ़ाके यह संकल्प करो - अब समय को समीप लाना ही है। आत्माओं को मुक्ति दिलानी है। लेकिन तब होगा जब आप सोचना स्मृति स्वरूप में लायेंगे।

बापदादा ने सुना है कि फारेन वालों की भी विशेष स्नेह मिलन वा मीटिंग है और भारत वालों की भी मीटिंग है तो मीटिंग में सिर्फ सेवा के प्लैन नहीं बनाना, बनाना लेकिन बैलेन्स का बनाना। ऐसा एक दो के सहयोगी बनो जो सभी मास्टर सर्वशक्तिवान बन आगे उड़ते चलें। दाता बनकर सहयोग दो। बातें नहीं देखो, सहयोगी बनो। स्वमान में रहो और सम्मान देकर सहयोगी बनो क्योंकि किसी भी आत्मा को अगर आप दिल से सम्मान देते हो, यह बहुत-बहुत बड़ा पुण्य है क्योंकि कमजोर आत्मा को उमंग-उत्साह में लाया तो कितना बड़ा पुण्य है! गिरे हुए को गिराना नहीं है, गले लगाना है अर्थात् बाहर से गले नहीं लगाना, गले लगाना अर्थात् बाप समान बनाना। सहयोग देना।

तो पूछा है ना कि इस वर्ष क्या-क्या करना है? बस सम्मान देना और स्वमान में रहना। समर्थ बन समर्थ बनाना। व्यर्थ की बातों में नहीं जाना। जो कमजोर आत्मा है ही कमजोर, उसकी कमजोरी को देखते रहेंगे तो सहयोगी कैसे बनेंगे! सहयोग दो तो दुआयें मिलेंगी। सबसे सहज पुरुषार्थ है, और कुछ भी नहीं कर सकते हो तो सबसे सहज पुरुषार्थ है - दुआयें दो, दुआयें लो। सम्मान दो और महिमा योग्य बनो। सम्मान देने वाला ही सर्व द्वारा माननीय बनते हैं। और जितना अभी माननीय बनेंगे, उतना ही राज्य अधिकारी और पूज्य आत्मा बनेंगे। देते जाओ लेने का नहीं, लो और दो यह तो बिजनेस वालों का काम है। आप तो दाता के बच्चे हो। बाकी बापदादा चारों ओर के बच्चों की सेवा को देख खुश है, सभी ने अच्छी सेवा की है। लेकिन अभी

आगे बढ़ना है ना! वाणी द्वारा सभी ने अच्छी सेवा की, साधनों द्वारा भी अच्छी सेवा की रिज़ल्ट निकाली। अनेक आत्माओं का उल्हना भी समाप्त किया। साथ-साथ समय के तीव्रगति की रफ्तार देख बापदादा यही चाहते हैं कि सिर्फ थोड़ी आत्माओं की सेवा नहीं करनी है लेकिन विश्व की सर्व आत्माओं के मुक्तिदाता निमित्त आप हो क्योंकि बाप के साथी हो, तो समय की रफ्तार प्रमाण अभी एक ही समय इक्ट्ठा तीन सेवायें करनी हैं :-

एक वाणी, दूसरा स्व शक्तिशाली स्थिति और तीसरा श्रेष्ठ रूहानी वायब्रेशन  जहाँ भी सेवा करो वहाँ ऐसा रूहानी वायब्रेशन फैलाओ जो वायब्रेशन के प्रभाव में सहज आकर्षित होते रहें। देखो, अभी लास्ट जन्म में भी आप सबके जड़ चित्र कैसे सेवा कर रहे हैं? क्या वाणी से बोलते? वायब्रेशन ऐसा होता जो भक्तों की भावना का फल सहज मिल जाता है। ऐसे वायब्रेशन शक्तिशाली हों, वायब्रेशन में सर्व शक्तियों की किरणें फैलती हों, वायुमण्डल बदल जाए। वायब्रेशन ऐसी चीज़ है जो दिल में छाप लग जाती है। आप सबको अनुभव है किसी आत्मा के प्रति अगर कोई अच्छा या बुरा वायब्रेशन आपके दिल में बैठ जाता है तो कितना समय चलता है? बहुत समय चलता है ना! निकालने चाहो तो भी नहीं निकलता है, किसका बुरा वायब्रेशन बैठ जाता है तो सहज निकलता है? तो आपका सर्व शक्तियों की किरणों का वायब्रेशन, छाप का काम करेगा। वाणी भूल सकती है, लेकिन वायब्रेशन की छाप सहज नहीं निकलती है। अनुभव है ना! है ना अनुभव?

यह गुजरात ने, बाम्बे ने जो उमंग-उत्साह दिखाया, उसको भी बापदादा पदम-पद्मगुणा मुबारक देते हैं। क्यों? विशेषता क्या रही? क्यों मुबारक देते हैं? फंक्शन तो बड़े-बड़े करते रहते हो लेकिन खास मुबारक क्यों दे रहे हैं? क्योंकि दोनों तरफ की विशेषता रही - एकता और दृढ़ता की। जहाँ एकता और दृढ़ता है वहाँ एक वर्ष के बजाए एक मास वर्ष के समान है। सुना - गुजरात और बाम्बे ने।

**गुजरात –** गुजरात वाले बहुत हैं। सेवा का टर्न है। गुजरात से 4500 आये हैं। (आज की सभा में करीब 18-19 हज़ार भाई बहनें डायमण्ड हाल में मुरली सुन रहे हैं) सभी को मुबारक हो। सिर्फ टीचर्स को नहीं, पहले आप लोगों को, अगर आपका सहयोग नहीं होता ना, तो टीचर्स भी क्या करती। इसीलिए गुजरात के सर्व बच्चों को अभी के गोल्डन चांस की भी मुबारक है और सेवा की भी मुबारक है, ऐसे ही सदा स्व उन्नति में, सेवा की उन्नति में एक ने कहा, दूसरे ने हाँ जी किया, ऐसे सदा एकता और दृढ़ता से बढ़ते रहना। मुबारक हो, मुबारक हो। अच्छा।

**मुम्बई, महाराष्ट्र –** (बाम्बे के शिवाजी पार्क में करीब 75-80 हज़ार का विशाल संगठन हुआ) अच्छा मुबारक तो मिल गई। बापदादा दोनों को बहुत-बहुत, महाराष्ट्र, बाम्बे, आन्ध्रप्रदेश सभी को, सर्व ब्राह्मण परिवार की तरफ से और बापदादा की तरफ से गुजरात और महाराष्ट्र को दिल की बहुत-बहुत दुआयें हो। यह दिल की दुआयें, सदा दिल में उमंग-उत्साह बढ़ाती रहेंगी। ठीक है ना पाण्डव! सभी ने बहुत अच्छी सेवा की। सबके सहयोग से लाखों का प्रोग्राम सफल हुआ। अच्छा।

**बिज़नेस इन्डस्ट्री वर्ग –** बापदादा बिज़नेस वर्ग वालों को विशेष संकल्प दे रहे हैं, क्योंकि बिज़नेस वालों के पास ग्राहक तो लेने के लिए आते ही हैं, आपको जाना नहीं पड़ता है, आते ही हैं। तो जो भी सम्बन्ध-सम्पर्क में आते हैं उन्हों को कम से कम सन्देश देते रहो, हर एक बिज़नेस या इन्डस्ट्री वाले ने अपना-अपना कार्ड छपाया हुआ है, जिसमें अच्छे से अच्छा शार्ट में ज्ञान का स्लोगन हो, एड्रेस हो और दो शब्दों में निमन्त्रण हो। ऐसे सबने अपना-अपना कार्ड छपाया है, जिसने छपाया है वह हाथ उठाओ। इतनों ने छपाया ही नहीं है। बिजनेस वाले तो घर बैठे सेवा कर सकते हैं। उल्हना तो नहीं देंगे कि हम ग्राहक बनकर आपके पास आये, हमको सन्देश भी नहीं दिया। तो कार्ड ज़रूर छपाना। ऐसा सुन्दर कार्ड छपाना जो वेस्ट पेपर बाक्स में कोई डाले नहीं, सम्भाल के रखे। और बिज़नेसमैन को सौदा कराना तो बहुत अच्छा

आता है ना, बिज़नेसमैन वह अच्छा है जो कोई भी ग्राहक को सौदे के बिना वापस नहीं भेजे। तो आप भगवान से सौदा नहीं कराते हो! सिर्फ कपड़े का और चीज़ों का कराते हो! बिज़नेसमैन बहुत ही आत्माओं को सहयोगी बना सकते हो और सहयोगी से धीरे-धीरे योगी भी बन जायेंगे। तो सहयोगी की लिस्ट हर एक को इस वर्ष में बनानी है। हर एक बिज़नेसमैन ने कितनी आत्माओं को सन्देश दिया, कितनी आत्माओं को सहयोगी बनाया, कितनी आत्माओं को सहजयोगी बनाया? ठीक है, करेंगे? दादी कहती है ना संख्या बढ़ाओ तो हर एक बिज़नेसमैन भी संख्या बढ़ा सकता है। ठीक है ना। अभी बापदादा भी रिज़ल्ट देखेंगे। ऐसे नहीं सोचना बापदादा को पता क्या पड़ेगा। बापदादा देखता है, वतन में बैठकर भी देख सकता है। पूछने की भी ज़रूरत नहीं पड़ेगी। तो बिज़नेस वाले कमाल करेंगे ना। जो अच्छा काम करते हैं तो उनके लिए कहते हैं मुख में गुलाब और बापदादा कहते हैं बिजनेसमैन के मुख में गुलाबजामुन। पड़ गया मुख में! अच्छा।

**स्पोर्ट विंग (खेलकूद प्रभाग) –** खेल-कूद भी चाहिए ज़रूर। आप कौन सा खेल कराते हो? खेल देखते हो या कराते भी हो? देखते तो सभी हैं, आजकल तो सभी देखने में मशगूल (मगन) रहते हैं। बापदादा को पता है। अच्छा यह भी बहुत ज़रूरी है क्योंकि आजकल आत्माओं में टेन्शन बहुत है तो खेलकूद भी चाहिए ना। बापदादा ने सुना कि फारेन में एक बच्चे ने बच्चों के लिए खेल बहुत अच्छा बनाया है। किसने बनाया है? बापदादा को समाचार मिला और बापदादा को पसन्द आया है, सभी को दिखाना। तो खेलकूद डिपार्टमेंट एक इसकी इन्वेन्शन देख करके ऐसी कोई इन्वेन्शन्स निकालो, जिसमें खेल का खेल हो और ज्ञान का ज्ञान हो। चाहे कोई कोर्स कराओ तो भी खेल में। अच्छी इन्वेन्शन है, मुबारक हो। तो ऐसा कोई रमणीक प्रोग्राम बनाओ। भाषण तो सभी ने बहुत सुने हैं ना लेकिन ऐसी कोई नई चीज़ निकालो जो न चाहते हुए भी लोग आवें और आपके भाई बहन जाग जावें। बाकी अच्छा है प्लैन बनाते रहते हो, मीटिंग करते रहते हो,

बापदादा को यह बच्चों का प्लैन अच्छा लगता है। तो इस वर्ष में ऐसे कोई चीज़ बनाना जैसे बापदादा को याद है जब पहले मेले करते थे उसमें भी ऐसी ऐसी चीज़ें रखते थे जो लोग स्वत: ही एक दो को भेजते थे कि आप भी जाके देखो। तो ऐसी इन्वेन्शन निकालना। ठीक है ना! इसकी इन्चार्ज (शशी बहन) है, फिर तो होशियार है, करेंगे। अच्छा। मुबारक हो।

**एज्युकेशन विंग –** एज्युकेशन का महत्त्व है, इसलिए गवर्मेन्ट भी एज्युकेशन की तरफ बहुत रूचि रख रही है तो आप सभी भी ने मिलकर एज्युकेशन के प्रोग्राम किये भी हैं, कर भी रहे हैं लेकिन और भी आगे बढ़ाते चलना। इस वर्ग से भी बहुत आत्मायें निकल सकती हैं। अच्छा।

**विदेश के 125 भाई-बहनें मीटिंग के लिए आये हैं –** तो क्या कमाल करेंगे? इतने सभी बापदादा के सिकीलधे सर्विसएबुल इक्ट्ठे होंगे तो क्या-क्या जलवा दिखायेंगे? कोई नवीनता करेंगे ना! अच्छा है। सभी मिलकर ऐसा कोई ज्वालारूप प्रोग्राम बनाओ, साधारण प्लैन नहीं, ज्वाला रूप प्लैन बनाओ। एक तो सब ज्वाला रूप हो जाएं, बन जाएं। स्व में ज्वाला स्वरूप और सेवा में ऐसे इन्वेन्शन निकालो जो शार्टकट हो क्योंकि आजकल के समय अनुसार लोगों को सबसे बड़ी समस्या समय निकालने की है। तो ऐसा कोई प्लैन बनाओ, चाहे वृत्ति हो, चाहे दृष्टि हो, चाहे वायब्रेशन हो, थोड़े समय में वह समझ जाए कि यहाँ से ही कुछ मिल सकता है। चुम्बक जैसी सेवा का प्लैन बनाओ। जैसे चुम्बक से कोई हटने चाहते हैं तो भी नहीं हटते हैं। दूर से ही समीप आ जाते हैं। ऐसे नया प्लैन बनाओ, डबल विदेशी हैं ना! और आपके निमित्त बनी हुई दादी या दीदियां, आपकी दीदियां और दादियां सभी होशियार हैं। पाण्डव भी कम नहीं हैं। देखो, यहाँ 5 पाण्डव खड़े हैं। तो 5 पाण्डवों ने क्या किया था? अक्षोणी सेना को खत्म कर दिया। तो पाण्डव भी कम नहीं हैं। एक एक पाण्डव महान है। तो करेंगे ना कमाल? कैसे भी बनाओ, चाहे वृत्ति से, चाहे दृष्टि से, चाहे दृढ़ संकल्प से, कोई प्लैन बनाना। दादियां, दीदियां ठीक है ना! डबल फारेनर्स इन्डिया की टीचर्स से कम नहीं

हैं, बहुत संख्या है। फिर तो कमाल हुई पड़ी है। अच्छा है आप पहले प्लैन निकालना फिर इन्डिया की जो मीटिंग होगी वह उस प्लैन में रत्न जड़ित भरेंगी। आप घाट बनाना उसमें हीरा मोती इन्डिया की मीटिंग वाले लगायेंगे। लगायेंगे ना? मीटिंग में लगायेंगे? मुबारक हो। बापदादा साकार रूप में सामने अभी देख-देख खुश हो रहे हैं, फारेन में इतने तैयार हो गये हैं, देखो। सभी को बहुत अच्छा लगता है, खुशी होती है। सभी ने देखा कितने टीचर्स तैयार हो गये हैं। वह भी विशेष टीचर्स हैं, दूसरे तो बहुत हैं। तो बापदादा डबल विदेशी सेवाधारी बच्चों को देख बहुत-बहुत-बहुत-बहुत खुश हैं। यह समझते हैं, हम क्यों ताली बजायें, दूसरे बजायें ना? मुबारक तो आप लोग देंगे ना। (सभी ने तालियां बजाई) अच्छा किया खूब ताली बजाओ।

**(76 देशों के डबल विदेशी आये हुए हैं, कुमारों की रिट्रीट भी चली)–** कुमारों ने निशानी अच्छी लगाई है। यूथ ग्रुप ने कोई नया प्लैन बनाया, या अभी सोच रहे हो? आप भी ब्राह्मण परिवार से ब्राह्मण संसार का वर्ल्ड कप लो। अभी दिल्ली वालों ने यूथ के प्रोग्राम का प्लैन नहीं बनाया है। दिल्ली वाले उठो दिल्ली वालों को वर्ल्ड के कुमारों को, यूथ को इक्ट्ठा कर, चुन करके और ब्राह्मण संसार से वर्ल्ड कप दिलाना है। करना है ना? हिम्मत है ना? प्लैन बनाना। बना सकते हो। प्राइममिनिस्टर और प्रेजीडेंट यूथ के फेवर में हैं। अभी वर्तमान समय वर्ल्ड में एक क्रिकेट का खेल नहीं कहते हैं लेकिन और खेल चल रहा है एक तरफ है हलचल और दूसरे तरफ है अचल। तो अभी दोनों का फुल फोर्स है, हलचल का भी फोर्स है तो अचल स्थिति वालों का भी फोर्स है इसलिए वायुमण्डल प्रमाण फायदा उठा सकते हैं। प्लैन बनाना। यह मीटिंग करेंगे ना, उसमें बनाना। बहुत अच्छा दिल्ली वाले। यूथ आप भी सोचो, आप भी प्लैन बनाना सुनाना शुरू करो और दिल्ली वाले भी प्लैन बनाना शुरू करें, कमाल करके दिखाना, विजय तो आपकी है ही। अच्छा।

**अहमदाबाद से ट्रेनिंग की कुमारियां आई हैं –** कुमारियां क्या सोच रही

हैं? कुमारियां तो बहुत लक्की हैं। सरेण्डर हुई और दीदी कहलाई। और देखो कितना भाग्य है जो टीचर बनने से बापदादा के मुरली सुनाने का तख्त मिलता है। गुरू की गद्दी मिलती है। बापदादा टीचर्स को कहते ही हैं गुरुभाई हैं। तो ऐसे बनेंगी ना! अभी ट्रेनिंग कर रही हैं, या पूरी कर ली? पूरी हो गई। अभी सेन्टर्स पर रहती हैं, मुबारक हो। देखो ऐसी टीचर बनना जो सभी कहें टीचर है तो यह! नि:स्वार्थ सेवाधारी टीचर। टीचर्स तो बहुत हैं लेकिन आप ऐसी टीचर बनना, नि:स्वार्थ सेवाधारी। निर्माण और निर्मलचित। ऐसी बनेंगी ना! उमंग अच्छा है। उमंग भी है, उत्साह भी है, सफल होंगे नहीं लेकिन हुए पड़े हैं। अच्छा।

अभी सेकण्ड में ज्ञान सूर्य स्थिति में स्थित हो चारों ओर के भयभीत, हलचल वाली आत्माओं को, सर्व शक्तियों की किरणें फैलाओ। बहुत भयभीत हैं। शक्ति दो। वायब्रेशन फैलाओ। अच्छा। **(बापदादा ने ड्रिल कराई)**

चारों ओर के बच्चों के भिन्न-भिन्न यादप्यार और समाचार के पत्र और ई-मेल बाप के पास पहुंच गये हैं। हर एक कहता है मेरी भी याद देना, मेरी भी याद देना। बापदादा कहते हैं हर एक प्यारे बच्चों की बापदादा के पास याद पहुंच गई है। दूर बैठे भी बापदादा के दिलतख्त नशीन हैं। तो आप सबको जिन्होंने भी कहा है ना - याद देना, याद देना। तो बाबा के पास पहुंच गई। यही बच्चों का प्यार और बाप का प्यार बच्चों को उड़ा रहा है। अच्छा।

**चारों ओर के अति श्रेष्ठ भाग्यवान, कोटों में कोई विशेष आत्माओं को सदा स्वमान में रहने वाले, सम्मान देने वाले, सर्विसएबुल बच्चों को, सदा स्मृति स्वरूप सो समर्थ स्वरूप आत्माओं को, सदा अचल अडोल स्थिति के आसन पर स्थित सर्वशक्ति स्वरूप बच्चों को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।**

**दादी जी से** – बापदादा आपके ऊपर विशेष खुश है। क्यों खुश है? विशेष इस बात पर खुश है कि जैसे ब्रह्मा बाप सभी को आर्डर करता था -

यह करना है, अभी करना है, ऐसे आपने भी ब्रह्मा बाप को फालो किया। (आप भी मेरे साथ हैं) वह तो है ही, निमित्त तो आप बनी ना। और ऐसा दृढ़ संकल्प किया जो चारों ओर सफलता है, इसीलिए आपमें रूहानी ताकत बहुत गुप्त भरी हुई है। तबियत ठीक है, रूहानी शक्ति इतनी भरी हुई है जो तबियत कुछ भी नहीं है। कमाल है ना! (गुजरात ने किया, बाम्बे ने एक-एक लाख का प्रोग्राम किया, अभी पंजाब और मद्रास कर रहा है) यह कलकत्ता भी करेगा। **(दादा निर्मलशान्ता से)** आप सिर्फ बैठ जाना कुर्सी पर बस और कुछ नहीं करना, आपके सब सहयोगी बनेंगे। सब आपेही तैयारी कर लेंगे। (बाबा को बिठा देंगे) बाबा के साथ आप भी बैठना। दोनों बैठना।

**(अगली सीजन में बापदादा का प्रोग्राम कैसे चलेगा?)** जैसे चलता है वैसे ही चलेगा। बाबा का मिलना चलता रहेगा। अभी तो एक साल की बात हो रही है। फिर अगले साल, अगले साल की बतायेंगे।

दादियों का मिलना देखकर सबकी दिल होती है हम भी दादी होते तो मिलते ना। आप भी दादी बनेंगे। अभी बापदादा ने प्लैन बनाया है दिल में, अभी दिया नहीं है। तो जो सेवा के, ब्रह्मा बाबा के साकार समय में सेवा में आदि रत्न निकले हैं, उन्हों का संगठन पक्का करना है। (कब करेंगे?) जब आप करो। यह ड्युटी आपकी (दादी जानकी की) है। आपके दिल का संकल्प भी है ना? क्योंकि जैसे आप दादियों का एकता और दृढ़ता का संगठन पक्का है, ऐसे आदि सेवा के रत्नों का संगठन पक्का हो, इसकी बहुत-बहुत आवश्यकता है क्योंकि सेवा तो बढ़नी ही है। तो संगठन की शक्ति जो चाहे वह कर सकती है। संगठन की निशानी का यादगार है पांच पाण्डव। पांच हैं लेकिन संगठन की निशानी है। अच्छा - अभी जो साकार ब्रह्मा के होते हुए सेवा के लिए सेन्टर पर रहे हैं, सेवा में लगे हैं, वह उठो। भाई भी हैं, पाण्डवों के बिना थोड़ेही गति है। यहाँ तो थोड़े हैं लेकिन और भी हैं। संगठन को जमा करने की जिम्मेवारी इनकी (दादी जानकी की) है, यह (दादी) तो बैकबोन है। बहुत अच्छे-अच्छे रत्न हैं। अच्छा। सब ठीक हैं। कुछ

भी करते रहते हो लेकिन आपके संगठन की महानता है। किला मजबूत है। अच्छा।

**सभी बच्चों से मिलन मनाने के पश्चात बापदादा के साथ बच्चों ने होली खेली - खूब गुलाबवाशी एक दूसरे पर डाली, बाद में बापदादा ने सभी बच्चों को होली उत्सव की याद दी।**

चारों ओर के होली बच्चे परमात्मा के संग-संग का होली का उत्सव मना रहे हो, उमंग और उत्साह है और सदा ही इसी उत्सव में उत्साह में रहना। तो हर दिन उत्सव हो जायेगा। उत्साह में रहना अर्थात् उत्सव मनाना। तो सभी उत्साह में हैं ना। तो होली है और होली मना रहे हैं। सदा इस परमात्म संग के रंग की होली में रहना। अच्छा। सभी को होली उत्सव की मुबारक। ओम् शान्ति।

**(प्यारे अव्यक्त बापदादा अपने कार्यक्रम अनुसार इस 2002-2003 की सीजन में 10 बार मधुबन/शान्तिवन में पधारे और सभी बच्चों को अनेकानेक वरदानों से भरपूर किया। उसके पश्चात 13 अप्रैल को वार्षिक बड़ी मीटिंग में भी बापदादा पधारे तथा सभी बच्चों को 108 विजयी रत्नों की माला तैयार करने और सन शोज़ फादर करने की प्रेरणा दी तथा निर्मल और निर्माण बन संस्कार मिलन की महारास करने का इशारा देते हुए सभी का स्नेह मिलन कराया। हाथों में हाथ मिलवाते हुए महारास कराई, इस अलौकिक पालना के दृश्य ने तो सभी के दिल पर अपनी अमिट छाप डाल दी)।**

17-10-03

## ‘‘पूरा वर्ष - सन्तुष्टमणि बन सदा सन्तुष्ट रहना और सबको सन्तुष्ट करना’’

आज दिलाराम बापदादा अपने चारों ओर के, सामने वालों को भी और दूर सो समीप वालों को भी हर एक राज़ दुलारे, अति प्यारे बच्चों को देख हर्षित हो रहे हैं। हर एक बच्चा राजा है इसलिए राज-दुलारे हैं। यह परमात्म प्यार, दुलार विश्व में बहुत थोड़ी सी आत्माओं को प्राप्त होता है। लेकिन आप सभी परमात्म प्यार, परमात्म दुलार के अधिकारी हैं। दुनिया की आत्मायें पुकार रही हैं आओ, आओ लेकिन आप सभी परमात्म प्यार अनुभव कर रहे हो। परमात्म पालना में पल रहे हो। ऐसा अपना भाग्य अनुभव करते हो? बापदादा सभी बच्चों को डबल राज्य अधिकारी देख रहे हैं। अभी के भी स्व राज्य अधिकारी राजे हो और भविष्य में तो राज्य आपका जन्म सिद्ध अधिकार है। तो डबल राजे हो। सभी राजा हो ना, प्रजा तो नहीं! राजयोगी हो या कोई-कोई प्रजायोगी भी है? है कोई प्रजा योगी, पीछे वाले राजयोगी हो? प्रजायोगी कोई नहीं है ना! पक्का? सोच के हाँ करना! राज अधिकारी अर्थात् सर्व सूक्ष्म और स्थूल कर्मेन्द्रियों के अधिकारी क्योंकि स्वराज्य है ना? तो कभी-कभी राजे बनते हो या सदा राजे रहते हो? मूल है अपने मन-बुद्धि-संस्कार के भी अधिकारी हो? सदा अधिकारी हो या कभी-कभी? स्व राज्य तो सदा स्वराज्य होता है या एक दिन होता है दूसरे दिन नहीं होता है। राज्य तो सदा होता है ना? तो सदा स्वराज्य अधिकारी अर्थात् सदा मन-बुद्धि-संस्कार के ऊपर अधिकार। सदा है? सदा में हाँ नहीं करते? कभी मन आपको चलाता है या आप मन को चलाते? कभी मन मालिक बनता है? बनता है ना! तो सदा स्वराज्य अधिकारी सो विश्व राज्य अधिकारी।

सदा चेक करो - जितना समय और जितनी पावर से अपने कर्मेन्द्रियों, मन-बुद्धि-संस्कार के ऊपर अभी अधिकारी बनते हो उतना ही भविष्य में राज्य अधिकार मिलता है। अगर अभी परमात्म पालना, परमात्म पढ़ाई, परमात्म श्रीमत के आधार पर यह एक संग-मयुग का जन्म सदा अधिकारी नहीं तो 21 जन्म कैसे राज्य अधिकारी बनेंगे? हिसाब है ना! इस समय का स्वराज्य, स्व का राजा बनने से ही 21 जन्म की गैरन्टी है। मैं कौन और क्या बनूंगा, अपना भविष्य वर्तमान के अधिकार द्वारा स्वयं ही जान सकते हो। सोचो, आप विशेष आत्माओं की अनादि आदि पर्सनैलिटी और रॉयल्टी कितनी ऊंची है! अनादि रूप में भी देखो जब आप आत्मायें परमधाम में रहती तो कितनी चमकती हुई आत्मायें दिखाई देती हो। उस चमक की रॉयल्टी, पर्सनैलिटी कितनी बड़ी है। दिखाई देती है? और बाप के साथ-साथ आत्मा रूप में भी रहते हो, समीप रहते हो। जैसे आकाश में कोई-कोई सितारे बहुत ज्यादा चम-कने वाले होते हैं ना! ऐसे आप आत्मायें भी विशेष बाप के साथ और विशेष चमकते हुए सितारे होते हो। परमधाम में भी आप बाप के समीप हो और फिर आदि सतयुग में भी आप देव आत्माओं की पर्सनैलिटी, रॉयल्टी कितनी ऊंची है। सारे कल्प में चक्कर लगाओ, धर्म आत्मा हो गये, महात्मा हो गये, धर्म पितायें हो गये, नेतायें हो गये, अभिनेतायें हो गये, ऐसी पर्सनैलिटी कोई की है, जो आप देव आत्माओं की सतयुग में है? अपना देव स्वरूप सामने आ रहा है ना? आ रहा है या पता नहीं हम बनेंगे या नहीं? पक्का है ना! अपना देव रूप सामने लाओ और देखो, पर्सनैलिटी सामने आ गई? कितनी रॉयल्टी है, प्रकृति भी पर्सनैलिटी वाली हो जाती है। पंछी, वृक्ष, फल, फूल सब पर्सनैलिटी वाले, रॉयल। अच्छा फिर आओ नीचे, तो अपना पूज्य रूप देखा है? आपकी पूजा होती है! डबल फारेनर्स पूज्य बनेंगे कि इन्डिया वाले बनेंगे? आप लोग देवियां, देवतायें बने हो? सूंढ वाला नहीं, पूंछ वाला नहीं। देवियां भी वह काली रूप नहीं, लेकिन देवताओं के मन्दिर में देखो, आपके पूज्य स्वरूप की कितनी रॉयल्टी है, कितनी पर्सनैलिटी है? मूर्ति होगी, 4 फुट, 5 फुट की और मन्दिर कितना बड़ा बनाते हैं। यह रॉयल्टी और पर्सनैलिटी है। आजकल के चाहे प्राइम मिनि-स्टर हो, चाहे राजा हो लेकिन धूप में बिचारे का बुत बनाके रख देंगे, क्या भी होता रहे। और आपके पूज्य स्वरूप की पर्सनैलिटी कितनी बड़ी है। है ना बढ़िया! कुमारियां बैठी हैं ना! रॉयल्टी है ना आपकी? फिर अन्त में संगमयुग में भी आप सबकी रॉयल्टी कितनी ऊंची है। ब्राह्मण जीवन की पर्सनैलिटी कितनी बड़ी है! डायरेक्ट भगवान ने आपके ब्राह्मण जीवन में पर्सनैलिटी और रॉयल्टी भरी है। ब्राह्मण जीवन का चित्रकार कौन? स्वयं बाप। ब्राह्मण जीवन की पर्सनैलिटी रॉयल्टी कौन सी है? प्युरिटी। प्युरिटी ही रॉयल्टी है। है ना! ब्राह्मण आत्मायें सभी जो भी बैठे हो तो प्युरिटी की रॉयल्टी है ना! हाँ, कांध हिलाओ। पीछे वाले हाथ उठा रहे हैं। आप पीछे नहीं हो, सामने हो। देखो नज़र पीछे जाती है, आगे तो ऐसे देखना पड़ता है पीछे आटोमेटिक जाती है।

तो चेक करो - प्युरिटी की पर्सनैलिटी सदा रहती है? मन्सा-वाचा-कर्मणा, वृत्ति, दृष्टि और कृति सबमें प्युरिटी है? मन्सा प्युरिटी अर्थात् सदा और सर्व प्रति शुभ भावना, शुभ कामना - सर्व प्रति। वह आत्मा कैसी भी हो लेकिन **प्युरिटी की रॉयल्टी की मन्सा है - सर्व प्रति शुभ भावना, शुभ कामना, कल्याण की भावना, रहम की भावना, दातापन की भावना।** और दृष्टि में या तो सदा हर एक के प्रति आत्मिक स्वरूप देखने में आये वा फरिश्ता रूप दिखाई दे। चाहे वह फरिश्ता नहीं बना है, लेकिन मेरी दृष्टि में फरिश्ता रूप और आत्मिक रूप ही हो और कृति अर्थात् सम्पर्क सम्बन्ध में, कर्म में आना, उसमें सदा ही सर्व प्रति स्नेह देना, सुख देना। चाहे दूसरा स्नेह दे, नहीं दे लेकिन मेरा कर्तव्य है स्नेह देकर स्नेही बनाना। सुख देना। स्लोगन है ना - ना दु:ख दो, ना दु:ख लो। देना भी नहीं है, लेना भी नहीं है। देने वाले आपको कभी दु:ख भी दे दें लेकिन आप उसको सुख की स्मृति से देखो। गिरे हुए

को गिराया नहीं जाता है, गिरे हुए को सदा ऊंचा उठाया जाता है। वह परवश होके दु:ख दे रहा है। गिर गया ना! तो उसको गिराना नहीं है और भी उस बिचारे को एक लात लगा लो, ऐसे नहीं। उसको स्नेह से ऊंचा उठाओ। उसमें भी फर्स्ट चैरिटी बिगन्स एट होम। पहले तो चैरिटी बिगन्स होम है ना, अपने सर्व साथी, सेवा के साथी, ब्राह्मण परिवार के साथी हर एक को ऊंचा उठाओ। वह अपनी बुराई दिखावे भी लेकिन आप उनकी विशेषता देखो। नम्बरवार तो हैं ना! देखो, माला आपका यादगार है। तो सब एक नम्बर तो नहीं है ना! 108 नम्बर हैं ना! तो नम्बरवार हैं और रहेंगे लेकिन मेरा फर्ज क्या है? यह नहीं सोचना अच्छा मैं 8 में तो हूँ ही नहीं, 108 में शायद आ जाऊंगी, आ जाऊंगा। तो 108 में लास्ट भी हो सकता है तो मेरे भी तो कुछ संस्कार होंगे ना, लेकिन नहीं। दूसरे को सुख देते-देते, स्नेह देते-देते आपके संस्कार भी स्नेही, सुखी बन ही जाने हैं। यह सेवा है और यह सेवा फर्स्ट चैरिटी बिगन्स एट होम।

बापदादा को आज एक बात पर हंसी आ रही थी, बतायें। देखना आपको भी हंसी आयेगी। बापदादा तो बच्चों का खेल देखते रहते हैं ना! बापदादा एक सेकण्ड में कभी किस सेन्टर का टी.वी. खोल देता है, कभी किस सेन्टर का, कभी फॉरेन का, कभी इन्डिया का स्विच ऑन कर देता है, पता पड़ जाता है, क्या कर रहे हैं क्योंकि बाप को बच्चों से प्यार है ना। बच्चे भी कहते हैं समान बनना ही है। पक्का है ना, समान बनना ही है! कुमारियां समान बनना है या ड्रामा में कुछ भी बन गये ठीक है? नहीं। समान बनना है, सभी कुमारियों को बनना ही है। मरना पड़े, क्या भी करना पड़े! सोच के हाथ उठाओ। हाँ जो समझते हैं, मरना पड़े, झुकना पड़े, सहन करना पड़े, सुनना पड़े, वह हाथ उठाओ। कुमारियां सोच के हाथ उठाना। इन्हों का फोटो निकालो। कुमारियां बहुत हैं। मरना पड़ेगा? झुकना पड़ेगा? पाण्डव उठाओ। सुना, समान बनना है। समान नहीं बनेंगे तो मजा नहीं आयेगा। परमधाम में भी समीप नहीं रहेंगे। पूज्य में भी फर्क पड़ जायेगा, सतयुग के राज्य भाग्य में भी फर्क पड़ जायेगा।

ब्रह्मा बाप से आपका प्यार है ना, डबल विदेशियों का सबसे ज्यादा प्यार है। जिसका ब्रह्मा बाबा से जिगरी, दिल का प्यार है वह हाथ उठाओ। अच्छा, पक्का प्यार है ना? अभी क्वेश्चन पूछेंगे, प्यार जिससे होता है, तो प्यार की निशानी है जो उसको अच्छा लगता, वह प्यार करने वाले को भी अच्छा लगता, दोनों के संस्कार, संकल्प, स्वभाव टैली खाते हैं तभी वह प्यारा लगता है। तो ब्रह्मा बाप से प्यार है तो 21 ही जन्म, पहले जन्म से लेकर, दूसरे तीसरे में आये तो अच्छा नहीं है लेकिन फर्स्ट जन्म से लेके लास्ट जन्म तक साथ रहेंगे, भिन्न-भिन्न रूप में साथ रहेंगे। तो साथ कौन रह सकता है? जो समान होगा। वह नम्बरवन आत्मा है। तो साथ कैसे रहेंगे? नम्बरवन बनेंगे तब तो साथ रहेंगे, सबमें नम्बरवन, मन्सा में, वाणी में, कर्मणा में, वृत्ति में, दृष्टि में, कृति में, सबमें। तो नम्बरवन हैं या नम्बरवार हैं? तो अगर प्यार है तो प्यार के लिए कुछ भी कुर्बानी करना मुश्किल नहीं होता। लास्ट जन्म कलियुग के अन्त में भी बॉडी कान्सेस प्यार वाले जान भी कुर्बान कर देते हैं। तो आपने अगर ब्रह्मा बाबा के प्यार में अपने संस्कार परिवर्तन किया तो क्या बड़ी बात है! बड़ी बात है क्या? नहीं है। तो आज से सबके संस्कार चेंज हो गये! पक्का? रिपोर्ट आयेगी, आपके साथी लिखेंगे, पक्का? सुन रही हैं दादियां, कहते हैं संस्कार बदल गये। या टाइम लगेगा? क्या? मोहिनी (न्युयार्क) सुनावे, बदलेंगे ना! यह सभी बदलेंगे ना? अमेरिका वाले तो बदल जायेंगे। हंसी की बात तो रह गई।

हंसी की यह बात है - तो सभी कहते हैं कि पुरुषार्थ तो बहुत करते हैं, और बापदादा को देख करके रहम भी आता है पुरुषार्थ बहुत करते हैं, कभी-कभी मेहनत बहुत करते हैं और कहते क्या हैं - क्या करें, मेरे संस्कार ऐसे हैं! संस्कार के ऊपर कहकर अपने को हल्का कर देते हैं लेकिन बाप ने आज देखा कि यह जो आप कहते हो कि मेरा संस्कार है, तो क्या आपका यह संस्कार है? आप आत्मा हो, आत्मा हो ना! बॉडी तो नहीं हो ना! तो आत्मा के संस्कार क्या हैं? और ओरीज्नल आपके संस्कार कौन से हैं? जिसको आज आप मेरा कहते हो वह मेरा है या रावण का है? किसका है? आपका है? नहीं है? तो मेरा क्यों कहते हो! कहते तो ऐसे ही हो ना कि मेरा संस्कार ऐसा है? तो आज से यह नहीं कहना, मेरा संस्कार। नहीं। कभी यहाँ वहाँ से उड़के किचड़ा आ जाता है ना! तो यह रावण की चीज़ आ गई तो उसको मेरा कैसे कहते हो! है मेरा? नहीं है ना? तो अभी कभी नहीं कहना, जब मेरा शब्द बोलो तो याद करो मैं कौन और मेरा संस्कार क्या? बॉडी कान्सेस में मेरा संस्कार है, आत्म-अभिमानी में यह संस्कार नहीं है। तो अभी यह भाषा भी परिवर्तन करना। मेरा संस्कार कहके अलबेले हो जाते हो। कहेंगे भाव नहीं है, संस्कार है। अच्छा दूसरा शब्द क्या कहते हैं? मेरा स्वभाव। अभी स्वभाव शब्द कितना अच्छा है। स्व तो सदा अच्छा होता है। मेरा स्वभाव, स्व का भाव अच्छा होता है, खराब नहीं होता है। तो यह जो शब्द यूज़ करते हो ना, मेरा स्वभाव है, मेरा संस्कार है, अभी इस भाषा को चेंज करो, जब भी मेरा शब्द आवे, तो याद करो मेरा संस्कार ओरीज्नल क्या है? यह कौन बोलता है? आत्मा बोलती है यह मेरा संस्कार है? तो जब यह सोचेंगे ना तो अपने ऊपर ही हंसी आयेगी, आयेगी ना हंसी? हंसी आयेगी तो जो खिटखिट करते हो वह खत्म हो जायेगी। इसको कहते हैं भाषा का परिवर्तन करना अर्थात् हर आत्मा के प्रति स्वमान और सम्मान में रहना। स्वयं भी सदा स्वमान में रहो, औरों को भी स्वमान से देखो। स्वमान से देखेंगे ना तो फिर जो कोई भी बातें होती हैं, जो आपको भी पसन्द नहीं हैं, कभी भी कोई खिटखिट होती है तो पसन्द आता है? नहीं आता है ना? तो देखो ही एक दो को स्वमान से। यह विशेष आत्मा है, यह बाप के

पालना वाली ब्राह्मण आत्मा है। यह कोटों में कोई, कोई में भी कोई आत्मा है। सिर्फ एक बात करो - अपने नयनों में बिन्दी को समा दो, बस। एक बिन्दी से तो देखते हो, दूसरी बिन्दी भी समा दो तो कुछ भी नहीं होगा, मेहनत करनी नहीं पड़ेगी। जैसे आत्मा, आत्मा को देख रही है। आत्मा, आत्मा से बोल रही है। आत्मिक वृत्ति, आत्मिक दृष्टि बनाओ। समझा - क्या करना है? अभी मेरा संस्कार कभी नहीं कहना, स्वभाव कहो तो स्व के भाव में रहना। ठीक है ना।

बापदादा इस सीजन के पहले टर्न में, पहला टर्न तो आप सबका है ना, तो जब पहला टर्न लिया है, तो पहला नम्बर रिटर्न भी देना है। देना पड़ेगा ना! और डबल विदेशियों की यह विशेषता तो जन्म से है - जो भी करेंगे वह पक्का ही करेंगे। अधूरा नहीं करते हैं, पक्का ही करते हैं। हाँ या ना। हाँ ना के बीच में लटकते नहीं हैं। तो रिटर्न करना है ना! बस इस सीज़न में, पूरी सीज़न में, आज फर्स्ट चांस है, बापदादा यही चाहते हैं कि **यह पूरा वर्ष चाहे सीजन 6 मास चलती है लेकिन पूरा ही वर्ष सभी को जब भी मिलो, जिससे भी मिलो, चाहे आपस में, चाहे और आत्माओं से लेकिन जब भी मिलो, जिससे भी मिलो उसको सन्तुष्टता का सहयोग दो। स्वयं भी सन्तुष्ट रहो और दूसरे को भी सन्तुष्ट करो। इस सीजन का स्वमान है - सन्तुष्टमणि। सदा सन्तुष्ट-मणि।** भाई भी मणि हैं, मणा नहीं होता है, मणि होता है। एक एक आत्मा हर समय सन्तुष्टमणि है। और स्वयं सन्तुष्ट होंगे तो दूसरे को भी सन्तुष्ट करेंगे। सन्तुष्ट रहना और सन्तुष्ट करना। ठीक है, पसन्द है? कुमारियों को पसन्द है? जिसको पसन्द है और करेगा, सिर्फ सुनने में पसन्द नहीं, करने में पसन्द है - वह सभी हाथ उठाओ। हाथ देख करके तो बापदादा की दिल खुश हो गई। बहुत अच्छा, मुबारक हो, मुबारक हो। कुछ भी हो जाए, अपने स्वमान की सीट पर एकाग्र रहो, भटको नहीं, कभी किस सीट पर, कभी किस सीट पर, नहीं। अपने स्वमान की सीट पर एकाग्र रहो। और एकाग्र सीट पर सेट होके अगर कोई भी बात आती है ना तो एक कार्टून शो के मुआफ़िक देखो, कार्टून देखना अच्छा लगता है ना, तो यह समस्या नहीं है, कार्टून शो चल रहा है। कोई शेर आता है, कोई बकरी आती है, कोई बिच्छू आता है, कोई छिपकली आती है गंदी - कार्टून शो है। अपनी सीट से अपसेट नहीं हो। मजा आयेगा। अच्छा शेर भी आया, कुत्ता भी आया, बिल्ली भी आई, आने दो - देखते रहो।

बापदादा ने सुनाया था - तो आप सब अपने स्वमान के शान की सीट पर रहो तो परेशान नहीं होंगे। स्वमान की शान में नहीं रहते हो तो परेशान होते हो। छोटा सा पेपर टाइगर होता है लेकिन परेशान हो जाते हैं। तो इस वर्ष एकाग्र होके स्वमान की सीट पर रहना, ऐसे नहीं कहना मैं जानती तो हूँ, सुना भी है, जाना भी है, लेकिन .... नहीं। सुनना और जानना तो ठीक है लेकिन अपने को मान कर एकाग्र होके सीट पर बैठना, मान करके नहीं चलते हो, सिर्फ जानते और सुनते हो। सीट पर स्वरूप में स्थित होके बैठो। समझा।

बापदादा को समाचार मिला था - कि यह चार ग्रुप हैं ना। एक कुमारियों का, एक कम्प्युटर ग्रुप, एक मैनेजमेंट ग्रुप, एक हेल्थ का.... चार ही ग्रुप का समाचार मिला, अच्छा है लेकिन कम्प्युटर चलाते भी कम्प्युटर वाली कुर्सी पर भले बैठना लेकिन अपने स्वमान की सीट को छोड़ना नहीं। डबल सीट पर बैठना, सिर्फ कम्प्युटर की सीट पर नहीं। तो डबल सेवा हो जायेगी। बहुत सेवा कर सकते हो। हेल्थ वाले भी बहुत सेवा कर सकते हैं। दिखाया था, किताब बनाया है ना, सब समाचार सुना है। किताब किसने बनाया है? अच्छा बनाया है। लेकिन हेल्थ के साथ स्वमान पहले। स्वमान की सीट को नहीं छोड़ना, कभी किस सीट पर, कभी किस सीट पर नहीं। श्रेष्ठ स्वरूप के स्मृति की सीट पर। अपनी सीट नहीं छोड़ना। कुमारियों ने भी जो प्रॉमिस किया है, बहुत अच्छा किया है। बापदादा अभी प्रॉमिस की मुबारक दे रहे हैं लेकिन लेनी कौन सी मुबारक है? प्रैक्टिकल की। तो आज सिर्फ प्रॉमिस की मुबारक दे रहे हैं फिर प्रैक्टिकल रिजल्ट की मुबारक देंगे। वह मुबारक लेनी है ना। अच्छे-अच्छे बैठे हैं, दिखाई दे रहा है। अच्छी स्वमान वाली कुमारियां हैं।

(10 साल वाले भी बैठे हैं) यह भी बहुत कमाल है, 10 साल अमर रहे हैं। तो अमरनाथ बाबा की तरफ से अमर भव का वरदान है। हाथ उठाओ 10 साल वाले। आंटी अंकल को तो बहुत साल हो गये।

तो 10 साल वालों को बापदादा 9 रत्नों की माला पहना रहे हैं। 9 रत्न निर्विघ्न बनाने के होते हैं। 8 शक्तियां और बाप, सदा स्मृति में रहे। अच्छा है। फॉरेन में रहते अभी 10 साल पास किया तो अमर हो गये ना! कि समझते हो पता नहीं आगे क्या हो? अच्छा 10 साल वालों ने जो हाथ उठाया, उन्हों को अपने फ्युचर का भी निश्चय है कि समझते हैं पता नहीं चल सकेंगे या नहीं चल सकेंगे? जो समझते हैं अन्त तक साथ रहना ही है, अमर रहना है, कुछ भी हो जाए, हिमालय जितना पहाड़ भी गिर जाए, गिरेगा, पक्के हैं? बहुत अच्छा। अच्छा इन्डिया वालों ने उठाया। इन्डिया वाले समझते हैं हम हैं ही पक्के? यह 10 साल वाले नहीं लेकिन सभी को अपना निश्चय चाहिए **कुछ भी हो जाए, साथ रहेंगे, साथ चलेंगे, साथ राज्य में आयेंगे।** पक्का है ना! साथ रहेंगे ना! बाप को अकेला छोड़के नहीं चले जाना। अकेला थोड़ेही अच्छा लगेगा। आपको भी अच्छा नहीं लगेगा, बाप को भी अच्छा नहीं लगेगा। इसलिए छोड़ना नहीं। कोई भी बात आवे आप दिल से बोलो बाबा, मेरा बाबा, बाबा हाजिर है। आपकी समस्या को हल कर देंगे। दिल से बोलना, बाबा यह बात है, बाबा यह करो, बाबा यह... बाप बंधा हुआ है। लेकिन दिल से, ऐसे नहीं मतलब के

टाइम याद करो और फिर भूल जाओ।

तो सभी डबल फारेनर्स अपने भाग्य को देख के खुश हो रहे हैं। पहला चांस मिला है और स्पेशल चांस मिला है। तो पूरा सीजन जो बाप ने कहा वह निभायेंगे ना। सोचने वाले नहीं बनना, निभाने वाले। जब मेरा कह दिया, मेरा बाबा और बाबा ने भी कहा मेरा बच्चा, पक्का सौदा हो गया ना! दादियां ठीक है? फारेनर्स को देखके खुशी हो रही है ना! बहुत खुशी। दादी को तो बहुत उमंग आता है। अगर कुछ हो सके ना, तो दादी सबको यहाँ ही बिठा देवे। यह सब हाजिर हैं कि सोचेंगे, लण्डन के डायमण्ड हॉल का क्या होगा? नहीं, यह सब एवररेडी हैं। अगर बापदादा आर्डर करे आ जाओ, कुछ भी सोचो नहीं, सेवा को, सेन्टर को, साथियों को कुछ नहीं सोचो, आ जाओ, तो आ जायेंगे? (हाँ जी) अच्छा है। वह भी दिन आयेगा, आर्डर आयेगा आ जाओ क्योंकि बाप का प्यार है ना, तो अलग-अलग नहीं करके, साथ चलेंगे। जो पक्के होंगे वह रहेंगे। तो सभी निर्विघ्न, कि अभी कोने में कोई विघ्न रह गया। नहीं ना! कोई विघ्न अभी अन्दर है? थोड़ा थोड़ा तो है? नहीं है? सभी निर्विघ्न हैं? आज सब यहाँ छोड़ के जाओ, ओम् शान्ति भवन है ना, तो ओम् शान्ति हो जायेगा। क्या करना है? कांटे को फौरन निकाला जाता है। अगर कांटा जल्दी नहीं निकालो तो टांग कटवानी पड़ती है, इसलिए विघ्न को समाप्त करो। अपने ओरीज्नल संस्कार को इमर्ज करो। अच्छा - सब ग्रुप ठीक है। अभी ग्रुप-ग्रुप हाथ उठाओ।

कुमारियों का ग्रुप हाथ उठाओ। कम्प्युटर ग्रुप पीछे बैठे हैं, हेल्थ वाले, एस.एम.एल. वाले, अच्छा है, चारों ही ग्रुप का समाचार अच्छा है। अच्छा। सामने पत्र भी रखे हैं।

चारों ओर के पत्र और कार्ड भी आये हैं, दिल के पत्र भी आये हैं, कागज के पत्र भी आये हैं, दोनों ही बापदादा के पास पहुंचते हैं। बापदादा को अपने दिल का प्यार भी भेजते और साथ-साथ कोई-कोई सेवा का समाचार भी अपना अच्छा भेजते हैं। कोई-कोई थोड़ा सा याद के साथ फरियाद भी करते हैं, बाबा यह कर लेना, यह कर लेना। लेकिन अच्छा है - अगर लिखते हैं तो लिखने वाले को सहयोग भी मिलता है। सच्ची दिल और साफ दिल होती है ना, तो साफ दिल मुराद हांसिल हो जाती है। अभी भी चारों ओर सुनते भी हैं, कोई-कोई देखते भी हैं लेकिन सुनते तो काफी हैं। आप इस हॉल में बैठे हो वह अपने देश के हाल में बैठे हैं। यह भी साइंस के साधन आप ब्राह्मणों के लिए ही निकले हैं। आप स्थापना के कार्य में लगाते और कोई फिर विनाश के कार्य में लगाते। लेकिन बापदादा साइंस वाले बच्चों को भी मुबारक देते हैं कि इन्वेन्शन अच्छी निकाली है जो दूर बैठे भी बच्चे सुन रहे हैं, देख रहे हैं। अच्छा।

चारों ओर के राज दुलारे बच्चों को, सर्व स्नेही, सहयोगी, समान बनने वाले बच्चों को, सदा अपने श्रेष्ठ स्व भाव और संस्कार को स्वरूप में इमर्ज करने वाले बच्चों को, सदा सुख देने, सर्व को स्नेह देने वाले बच्चों को, सदा सन्तुष्टमणि बन सन्तुष्टता की किरणें फैलाने वाले बच्चों को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

**दादी जी से:-** बहुत अच्छी तन्दरूस्त हो गई। कोई ऐसी बात नहीं, बाकी भी ठीक हो जायेगा। (बाबा का वरदान है) खुद भी वरदानी है ना, इसलिए वरदान जल्दी लग जाता है। सभी का आपसे बहुत प्यार है। सभी का प्यार है क्योंकि बाप ने आपको निमित्त बनाया है। बाप स्वयं तो अव्यक्त हुए, लेकिन साकार रूप में आपको निमित्त बनाया।

**गंगें दादी से:-** महारथियों की महफिल अच्छी लगती है। अभी सभी महारथी इक्ट्ठे हुए ना। बापदादा को भी बहुत अच्छा लगा।

**रूकमणी दादी से:-** वर्तमान भविष्य अच्छा बना रही हो।

**विदेश की बड़ी बहिनों से:-** सभी अच्छी सर्विस में लगे हुए हैं। बापदादा को भी खुशी होती है कि वृद्धि कर रहे हैं और विधि पूर्वक चल रहे हैं। विधि भी है, वृद्धि भी है। जहाँ तहाँ प्रोग्राम तो बहुत अच्छे हो ही रहे हैं। आपस में मिलकर विश्व में आवाज फैलाने का प्लैन बनाते ही रहते हैं।

(कम्प्युटर से सेवा का प्लैन बना रहे हैं) कोने कोने में कम्प्युटर तो है ही, समय भी कम और चारों ओर फैल जाता। कुमारियां भी अच्छी-अच्छी हैं। अच्छे प्लैन बनाये हैं, बापदादा खुश हैं। चारों तरफ के बनाये हैं, हेल्थ भी आ गई, कम्प्युटर भी आ गये, कोर्स भी आ गये।

**विदेश के मुख्य भाईयों से:-** बहुत अच्छा, पाण्डव सेना भी कम नहीं हैं। शक्तियां, शक्तियां हैं लेकिन पाण्डव सुभान अल्लाह। पाण्डवों के साथ तो पाण्डवपति है ही। देखो एक-एक की अपनी-अपनी विशेषता है, बापदादा तो एक-एक की विशेषता को देख रहे हैं और हर एक अपनी विशेषता का पार्ट अच्छा बजा रहे हैं। ऐसे है ना। अंकल भी अपना पार्ट अच्छा बजा रहे हैं, यह रोबिन भी बजा रहे हैं, गोबिन्द, निज़ार भी बजा रहे हैं। अच्छा पार्ट बजाया ना। अच्छे-अच्छे पाण्डव भी निकले हैं तो शक्तियां भी निकली हैं। बापदादा को यही खुशी है कि डबल फॉरेनर्स का ग्रुप सेवा के लिए बहुत अच्छा तैयार हुआ है। सबमें सेवा का उमंग है। है ना उमंग? अंकल फाउण्डेशन है। अच्छे हैं। सदा अमर भव। याद और सेवा में अमर भव। अच्छा। आज से क्वेश्चन पूछना खत्म। मायाजीत हैं ये क्वेश्चन पूछेंगे क्या? मायाजीत हो गये ना! अभी कोई किससे यह नहीं पूछना कि मायाजीत हैं? हैं नहीं लेकिन

मायाजीत के नशे में बहुत उड़ रहे हैं। उड़ती कला वाले हैं, किससे भी पूछो तो कहो दिलखुश फरिश्ता है। माया का नाम ही नहीं लो। नाम सहित खत्म करो क्योंकि कुछ समय मायाजीत बनके रहने का अभ्यास जरूर करना पड़े। जो बहुतकाल मायाजीत रहते हैं उन्हें बहुतकाल राज्य भाग्य मिलता है। इसलिए सदा मायाजीत। हैं ही मायाजीत। बापदादा की नज़र है, संगठन को नज़र से निहाल तो होना ही है। अच्छा - ओम् शान्ति।

(EO) 15-11-2003

## ''मन को एकाग्र कर, एकाग्रता की शक्ति द्वारा फरिश्ता स्थिति का अनुभव करो''

आज सर्व खजानों के मालिक अपने चारों ओर के सम्पन्न बच्चों को देख रहे हैं। हर एक बच्चे को सर्व खजानों के मालिक बनाया है। ऐसा खजाना मिला है जो और कोई दे नहीं सकता। तो हर एक अपने को खजानों से सम्पन्न अनुभव करते हो? सबसे श्रेष्ठ खजाना है ज्ञान का खजाना, शक्तियों का खजाना, गुणों का खजाना, साथ-साथ बाप और सर्व ब्राह्मण आत्माओं द्वारा दुआओं का खजाना। तो चेक करो यह सर्व खजाने प्राप्त हैं? सर्व खजानों से जो सम्पन्न आत्मा है उसकी निशानी सदा नयनों से, चेहरे से, चलन से खुशी औरों को भी अनुभव होगी। जो भी आत्मा सम्पर्क में भी आयेगी वह अनुभव करेगी कि यह आत्मा अलौकिक खुशी से, अलौकिक न्यारी दिखाई देती है। आपकी खुशी को देख दूसरी आत्मायें भी थोड़े समय के लिए खुशी अनुभव करेंगी। जैसे आप ब्राह्मण आत्माओं की सफेद ड्रेस सभी को कितनी न्यारी और प्यारी लगती है। स्वच्छता, सादगी और पवित्रता अनुभव होती है। दूर से ही जान जाते हैं यह ब्रह्माकुमार कुमारी है। ऐसे ही आप ब्राह्मण आत्माओं के चलन और चेहरे से सदा खुशी की झलक, खुशनसीब की फलक दिखाई दे। आज सर्व आत्मायें महान दु:खी हैं, ऐसी आत्मायें आपका खुशनुम: चेहरा देख, चलन देख एक घड़ी की भी खुशी की अनुभूति करें, जैसे प्यासी आत्मा को अगर एक बूंद पानी की मिल जाती है तो कितना खुश हो जाता है। ऐसे खुशी की अंचली आत्माओं के लिए बहुत आवश्यक है। ऐसे सर्व खजानों से सदा सम्पन्न हो। हर ब्राह्मण आत्मा स्वयं को सर्व खजानों से सदा भरपूर अनुभव करते हो वा कभी-कभी? खजाने अविनाशी हैं, देने वाला दाता भी अविनाशी है तो रहना भी अविनाशी चाहिए क्योंकि आप जैसी अलौकिक खुशी सारे कल्प में सिवाए आप ब्राह्मणों के किसको भी प्राप्त नहीं होती। यह अभी की अलौकिक खुशी आधाकल्प प्रालब्ध के रूप में चलती है, तो सभी खुश हैं! इसमें तो सभी ने हाथ उठाया, अच्छा - सदा खुश हैं? कभी खुशी जाती तो नहीं? कभी-कभी तो जाती है! खुश रहते हो लेकिन सदा एकरस, उसमें अन्तर आ जाता है। खुश रहते हो लेकिन परसेन्टेज़ में अन्तर आ जाता है।

बापदादा ऑटोमेटिक टी.वी. से सब बच्चों के चेहरे देखते रहते हैं। तो क्या दिखाई देता है? एक दिन आप भी अपने खुशी के चार्ट को चेक करो - अमृतवेले से लेकर रात तक क्या एक जैसी परसेन्टेज़ खुशी की रहती है? वा बदलती है? चेक करना तो आता है ना, आजकल देखो साइंस ने भी चेकिंग की मशीनरी बहुत तेज कर दी है। तो आप भी चेक करो और अविनाशी बनाओ। सभी बच्चों का बापदादा ने भी वर्तमान पुरुषार्थ चेक किया। पुरुषार्थ सब कर रहे हैं - कोई यथा शक्ति, कोई शक्तिशाली। तो आज बापदादा ने सभी बच्चों के मन की स्थिति को चेक किया क्योंकि मूल है ही मनमनाभव। सेवा में भी देखो तो मन्सा सेवा श्रेष्ठ सेवा है। कहते भी हो मन जीत जगतजीत, तो मन की गति को चेक किया। तो क्या देखा? मन के मालिक बन मन को चलाते हो लेकिन कभी-कभी मन आपको भी चलाता है। मन परवश भी कर देता है। बापदादा ने देखा मन से लगन लगाते हैं लेकिन मन की स्थिति एकाग्र नहीं होती है।

वर्तमान समय मन की एकाग्रता, एकरस स्थिति का अनुभव करायेगी। अभी रिजल्ट में देखा कि मन को एकाग्र करने चाहते हो लेकिन बीच-बीच में भटक जाता है। **एकाग्रता की शक्ति अव्यक्त फरिश्ता स्थिति का सहज अनुभव करायेगी।** मन भटकता है, चाहे व्यर्थ बातों में, चाहे व्यर्थ संकल्पों में, चाहे व्यर्थ व्यवहार में। जैसे कोई-कोई को शरीर से भी एकाग्र होकर बैठने की आदत नहीं होती है, कोई को होती है। तो मन जहाँ चाहो, जैसे चाहो, जितना समय चाहो उतना और ऐसा एकाग्र होना इसको कहा जाता है मन वश में है। एकाग्रता की शक्ति, मालिकपन की शक्ति सहज निर्विघ्न बना देती है। युद्ध नहीं करनी पड़ती है। एकाग्रता की शक्ति से स्वत: ही एक बाप दूसरा न कोई - यह अनुभूति होती है। स्वत: होगी, मेहनत नहीं करनी पड़ेगी। एकाग्रता की शक्ति से स्वत: ही एकरस फरिश्ता स्वरूप की अनुभूति होती है। ब्रह्मा बाप से प्यार है ना - तो ब्रह्मा बाप समान बनना अर्थात् फरिश्ता बनना। एकाग्रता की शक्ति से स्वत: ही सर्व प्रति स्नेह, कल्याण, सम्मान की वृत्ति रहती ही है क्योंकि एकाग्रता अर्थात् स्वमान की स्थिति। फरिश्ता स्थिति स्वमान है। जैसे ब्रह्मा बाप को देखा, वर्णन भी करते हो जैसे सम्पन्नता का समय समीप आता रहा तो क्या देखा? चलता-फिरता फरिश्ता रूप, देहभान रहित। देह की फीलिंग आती थी? सामने जाते रहे तो देह देखने आती थी या फरिश्ता रूप अनुभव होता था? कर्म करते भी, बातचीत करते भी, डायरेक्शन देते भी, उमंग-उत्साह बढ़ाते भी देह से न्यारा, सूक्ष्म प्रकाश रूप की अनुभूति की। कहते हो ना कि ब्रह्मा बाबा बात करते-करते ऐसे लगता था जैसे बात कर भी रहा है लेकिन यहाँ नहीं है, देख

रहा है लेकिन दृष्टि अलौकिक है, यह स्थूल दृष्टि नहीं है। देह-भान से न्यारा, दूसरे को भी देह का भान नहीं आये, न्यारा रूप दिखाई दे, इसको कहा जाता है देह में रहते फरिश्ता स्वरूप। हर बात में, वृत्ति में, दृष्टि में, कर्म में न्यारापन अनुभव हो। यह बोल रहा है लेकिन न्यारा-न्यारा, प्यारा-प्यारा लगता है। आत्मिक प्यारा। ऐसे फरिश्तेपन की अनुभूति स्वयं भी करे और औरों को भी कराये क्योंकि बिना फरिश्ता बने देवता नहीं बन सकते हैं। फरिश्ता सो देवता है। तो नम्बरवन ब्रह्मा की आत्मा ने प्रत्यक्ष साकार रूप में भी फरिश्ता जीवन का अनुभव कराया और फरिश्ता स्वरूप बन गया। उसी फरिश्ते रूप के साथ आप सभी को भी फरिश्ता बन परमधाम में चलना है। तो इसके लिए मन की एकाग्रता पर अटेन्शन दो। ऑर्डर से मन को चलाओ। करना है तो मन द्वारा कर्म हो, नहीं करना है और मन कहे करो, यह मालिकपन नहीं है। अभी कई बच्चे कहते हैं, चाहते नहीं हैं लेकिन हो गया। सोचते नहीं हैं लेकिन हो गया, करना नहीं चाहिए लेकिन हो जाता है। यह है मन के वशीभूत अवस्था। तो ऐसी अवस्था अच्छी तो नहीं लगती है ना! फालो ब्रह्मा बाप। ब्रह्मा बाप को देखा सामने खड़े होते भी क्या अनुभव होता? फरिश्ता खड़ा है, फरिश्ता दृष्टि दे रहा है। **तो मन के एकाग्रता की शक्ति सहज फरिश्ता बना देगी।** ब्रह्मा बाप भी बच्चों को यही कहते हैं - समान बनो। शिव बाप कहते हैं निराकारी बनो, ब्रह्मा बाप कहते हैं फरिश्ता बनो। तो क्या समझा? रिजल्ट में क्या देखा? मन की एकाग्रता कम है। बीच-बीच में चक्कर बहुत लगाता है मन, भटकता है। जहाँ जाना नहीं चाहिए वहाँ जाता है तो उसको क्या कहेंगे? भटकना कहेंगे ना! तो एकाग्रता की शक्ति को बढ़ाओ। मालिकपन के स्टेज की सीट पर सेट रहो। जब सेट होते हैं तो अपसेट नहीं होते, सेट नहीं हैं तो अपसेट होते हैं। तो भिन्न-भिन्न श्रेष्ठ स्थितियों की सीट पर सेट रहो, इसको कहते हैं एकाग्रता की शक्ति। ठीक है? ब्रह्मा बाप से प्यार है ना! कितना प्यार है? कितना है? बहुत प्यार है! तो प्यार का रेसपान्ड बाप को क्या दिया है? बाप का भी प्यार है तब तो आपका भी प्यार है ना! तो रिटर्न क्या दिया? समान बनना - यही रिटर्न है। अच्छा।

यह सीजन का फर्स्ट टर्न है। तो फर्स्ट में फर्स्ट नम्बर आ गये हैं। बापदादा को भी जितने ज्यादा बच्चे दिखाई देते तो अच्छा लगता है। जितना हाल बनाया है उतने ही आते हैं। अभी बड़ा हाल बनाओ तो बहुत आवें। अभी देखो तो फुल हो गया है ना! फुल होना इशारा करता है कि और बड़ा बनाओ। हाल सज जाता है ना! और ऐसी श्रेष्ठ आत्माओं से हाल सजा हुआ है तो कितना अच्छा लगता है। मधुबन वालों को भी, चाहे शान्तिवन हो, चाहे पाण्डव भवन हो, अगर खाली-खाली होता है तो अच्छा नहीं लगता है ना। भरा हुआ होता है तो अच्छा लगता है कि मधुबन वालों को एकान्त चाहिए? एकान्त चाहिए वा संगठन, रिमझिम अच्छी लगती है? फिर भी बीच में एकान्त भी मिल जाती है। अच्छा।

डबल विदेशी भी आये हैं। अच्छा है, डबल विदेशियों से भी मधुबन का श्रृंगार हो जाता है। इन्टरनेशनल हो जाता है ना! अच्छा है, बापदादा ने दादी का संकल्प सुना। (आज सवेरे क्लास में दादी जी ने सभी को देश-विदेश में सेवा की धूम मचाने का संकल्प दिया था, भारत का कोई भी गांव, कोई भी देश इस वर्ष सन्देश से वंचित न रहे, ऐसा प्लैन बनाओ) संकल्प दिया है ना - अच्छा है। देखेंगे विदेश पूरा करता है या भारत पूरा करता है! सन्देश तो मिलना चाहिए। इतनी आपको प्राप्ति हुई, बाप मिला, खजाना मिला, पालना मिली, कम से कम अपने भाई-बहिनों को सन्देश तो पहुंचाना चाहिए। उल्हना तो नहीं देंगे ना कि हमको पता ही नहीं। तो सन्देश जरूर देना, आवश्यक है। और मुश्किल क्या है? हर एक ज़ोन अपने-अपने ज़ोन के साइड को बांटो, और क्या है! हर ज़ोन में कितने सेन्टर हैं, एक-एक सेन्टर को भी बांटों तो क्या बड़ी बात है। देखो, मधुबन में वर्गीकरण की सेवा होती है, उससे आवाज चारों ओर फैलता है। आप देखेंगे जब से यह वर्गीकरण की सेवा शुरू की है तो आई.पी. क्वालिटी में आवाज ज्यादा फैला है। वी.वी.आई.पी. की तो बात छोड़ो, उन्हों को फुर्सत कहाँ है। और बड़े-बड़े प्रोग्राम किये हैं उससे भी आवाज तो फैलता है। अभी देहली और कलकत्ता कर रहे हैं ना! अच्छे प्लैन बना रहे हैं। मेहनत भी अच्छी कर रहे हैं। बापदादा के पास समाचार पहुंचता रहता है। देहली का आवाज फॉरेन तक पहुंचना चाहिए। मीडिया वाले क्या करते हैं? सिर्फ भारत तक। फॉरेन से आवाज आये कि देहली में यह प्रोग्राम हुआ, कलकत्ता में यह प्रोग्राम हुआ। यह वहाँ का आवाज इन्डिया में आवे। इन्डिया के कुम्भकरण तो विदेश से जागने हैं ना! तो विदेश की खबर का महत्व होता है। प्रोग्राम भारत में हो और समाचार विदेश की अखबारों से पहुंचे तब फैलेगा। भारत का आवाज विदेश में पहुंचे और विदेश का आवाज भारत में पहुंचे, उसका प्रभाव होता है। अच्छा है। प्रोग्राम जो बना रहे हैं, अच्छे बना रहे हैं। बापदादा देहली वालों को भी मुहब्बत के मेहनत की मुबारक देते हैं। कलकत्ता वालों को भी इनएडवांस मुबारक है क्योंकि सहयोग, स्नेह और हिम्मत जब तीनों बातें मिल जाती हैं तो आवाज बुलन्द होता है। आवाज फैलेगा, क्यों नहीं फैलेगा। अभी मीडिया वाले यह कमाल करना, सभी ने टी.वी. में देखा, यह टी.वी. में आया, सिर्फ यह नहीं। वह तो भारत में आ रहा है। अभी और विदेश तक पहुंचो। अभी देखेंगे यह साल आवाज फैलाने का कितना हिम्मत और जोर-शोर से मनाते हो। बापदादा को समाचार मिला कि डबल फारेनर्स को बहुत उमंग है। है ना? अच्छा है। एक दो को देख और उमंग आता है, जो ओटे वह ब्रह्मा समान। अच्छा है। तो दादी को भी संकल्प आता है, बिजी करने का तरीका अच्छा आता है। अच्छा है, निमित्त है ना।

अच्छा - सभी उड़ती कला वाले हो? उड़ती कला फास्ट कला है। चलती कला, चढ़ती कला यह फास्ट कला नहीं है। उड़ती कला

फास्ट भी है और फर्स्ट लाने वाली भी है। अच्छा -

मातायें क्या करेंगी? मातायें अपने हमजिन्स को जगाओ। कम से कम मातायें कोई उल्हना देने वाली नहीं रह जायें। माताओं की संख्या सदा ज्यादा होती है। बापदादा को खुशी होती है और इस ग्रुप में सभी की संख्या अच्छी आई है। कुमारों की संख्या भी अच्छी आई है। देखो, कुमार अपने हमजिन्स को जगाओ। अच्छा है। कुमार यह कमाल दिखावें कि स्वप्न मात्र पवित्रता में परिपक्व हैं। बापदादा विश्व में चैलेन्ज करके बताये कि ब्रह्माकुमार यूथ कुमार, डबल कुमार हैं ना। ब्रह्माकुमार भी हो और शरीर में भी कुमार हो। तो पवित्रता की परिभाषा प्रैक्टिकल में हो। तो आर्डर करें, आपको चेक करें पवित्रता के लिए। करें आर्डर? इसमें हाथ नहीं उठा रहे हैं। मशीनें होती हैं चेक करने की। स्वप्न तक भी अपवित्रता हिम्मत नहीं रखे। कुमारियों को भी ऐसे बनना है, कुमारी अर्थात् पूज्य पवित्र कुमारी। कुमार और कुमारियां यह बापदादा को प्रॉमिस करें कि हम सभी इतने पवित्र हैं जो स्वप्न में भी संकल्प नहीं आ सकता, तब कुमार और कुमारियों की पवित्रता सेरीमनी मनायेंगे। अभी थोड़ा-थोड़ा है, बापदादा को पता है। अपवित्रता की अविद्या हो क्योंकि नया जन्म लिया ना। अपवित्रता आपके पास्ट जन्म की बात है। मरजीवा जन्म, जन्म ही ब्रह्मा मुख से पवित्र जन्म है। तो पवित्र जन्म की मर्यादा बहुत आवश्यक है। कुमार कुमारियों को यह झण्डा लहराना चाहिए। पवित्र हैं, पवित्र संस्कार विश्व में फैलायेंगे, यह नारा लगे। सुना कुमारियों ने। देखो कुमारियां कितनी हैं। अभी देखेंगे कुमारियां यह आवाज फैलाती हैं या कुमार? ब्रह्मा बाप को फॉलो करो। अपवित्रता का नाम निशान नहीं, ब्राह्मण जीवन माना यह है। माताओं में भी मोह है तो अपवित्रता है। मातायें भी ब्राह्मण हैं ना। तो ना माताओं में, ना कुमारियों में, ना कुमारों में, न अधर कुमार कुमारियों में। ब्राह्मण माना ही है पवित्र आत्मा। अपवित्रता का अगर कोई कार्य होता भी है तो यह बड़ा पाप है। इस पाप की सजा बहुत कड़ी है। ऐसे नहीं समझना यह तो चलता ही है। थोड़ा बहुत तो चलेगा ही, नहीं। यह फर्स्ट सबजेक्ट है। नवीनता ही पवित्रता की है। ब्रह्मा बाप ने अगर गालियां खाई तो पवित्रता के कारण। हो गया, ऐसे छूटेंगे नहीं। अलबेले नहीं बनो इसमें। कोई भी ब्राह्मण चाहे सरेण्डर है, चाहे सेवाधारी है, चाहे प्रवृत्ति वाला है, इस बात में धर्मराज भी नहीं छोड़ेगा, ब्रह्मा बाप भी धर्मराज को साथ देगा। इसलिए कुमार कुमारियां कहाँ भी हो, मधुबन में हो, सेन्टर पर हो लेकिन इसकी चोट, संकल्प मात्र की चोट बहुत बड़ी चोट है। गीत गाते हो ना - पवित्र मन रखो, पवित्र तन रखो.. गीत है ना आपका। तो मन पवित्र है तो जीवन पवित्र है इसमें हल्के नहीं होना, थोड़ा कर लिया क्या है! थोड़ा नहीं है, बहुत है। बापदादा आफीशियल इशारा दे रहा है, इसमें नहीं बच सकेंगे। इसका हिसाब-किताब अच्छी तरह से लेंगे, कोई भी हो। इसलिए सावधान, अटेन्शन। सुना - सभी ने ध्यान से। दोनों कान खोल के सुनना। वृत्ति में भी टचिंग नहीं हो। दृष्टि में भी टचिंग नहीं। संकल्प में नहीं तो वृत्ति दृष्टि क्या है! क्योंकि समय सम्पन्नता का समीप आ रहा है, बिल्कुल प्युअर बनने का। उसमें यह चीज़ तो पूरा ही सफेद कागज पर काला दाग है।

अच्छा - सभी जहाँ-जहाँ से भी आये हैं, सब तरफ से आये हुए बच्चों को मुबारक हो।

**सेवा का टर्न कर्नाटक का है:-** अच्छा चांस है। कर्नाटक के सेवाधारी उठो। बहुत सेवाधारी आ गये हैं। आधी सभा तो कर्नाटक है। बहुत अच्छा। (2500 कर्नाटक के हैं) अच्छा है, वृद्धि अच्छी है। तो विधि और वृद्धि दोनों का बैलेन्स रखने वाले। अभी कर्नाटक ने नाटक में हीरो पार्ट नहीं बजाया है। कर्नाटक नाम ही है, नाटक करने वाले, नाटक में भी हीरो पार्ट करने वाले। तो हीरो पार्ट नहीं बजाया है। संख्या अच्छी है, उसकी मुबारक है। अभी कोई हीरो पार्ट बजाओ जो किसी ज़ोन ने नहीं किया हो। लाख को इक्ट्ठा करना यह तो कॉमन हो गया। कोई नवीनता करके दिखाओ जो सभी हियर-हियर करें। कर सकते हैं लेकिन अभी गुप्त हैं, प्रत्यक्ष नहीं हुए हैं। तो टीचर्स करना है ना! कोई हीरो पार्ट करके दिखाओ। सेन्टर खोला, गीता पाठशाला खोली - यह तो कॉमन हो गया। नई बात करके दिखाओ। पाण्डव करेंगे ना नई बात। नई बात करेंगे ना! हाँ, अच्छे अच्छे पुराने-पुराने सर्विसएबुल हैं। करो कमाल। जो सारे ज़ोन तालियां बजावें। बापदादा की कर्नाटक में उम्मीदें बहुत हैं। लेकिन अभी उम्मीदों के ही तारे हैं, अभी उम्मीदों के तारे से सफलता के तारे प्रत्यक्ष हो जाओ। होना है, ठीक है? टीचर्स भी बहुत हैं। सिर्फ टीचर्स हाथ उठाओ। देखो, कितनी टीचर्स हैं। पाण्डव भी हैं। ज़ोन के हेड भी हैं ना, वह भी हाथ उठाओ। देखो कितने हैण्डस हैं। बहुत अच्छे-अच्छे हैण्डस हैं सिर्फ अभी पर्दे के अन्दर हैं, स्टेज पर नहीं आये हैं। अच्छा - मुबारक हो।

**इन्दौर कन्या छात्रावास की कुमारियों से :-** कुमारियां अभी कमाल करेंगी या सिर्फ डांस करेंगी? अभी जितनी छोटी उतनी कमाल करके दिखाओ। छोटी कुमारी चैलेन्ज करे। अनुभव के आधार से चैलेन्ज करे तो सब लोग प्रभावित हो जाते हैं। अच्छा है अपनी जीवन को सेफ तो कर लिया है। दुनिया के संग से बच गई हो। अभी आपस में ऐसे प्लैन बनाओ। कोई सेवा का नया प्लैन सोचो, छोटे होते भी कमाल का प्लैन बनाके दिखाओ। कर सकते हैं। देखो, जब स्थापना हुई तो छोटी-छोटी कुमारियों ने ही तो कमाल की ना। आप भी कोई कमाल का प्लैन बनाओ। अच्छा है। संग अच्छा है, वातावरण अच्छा है, सेफ्टी भी है, समय भी है, अभी प्लैन बनाना। ठीक है ना। बनायेंगी प्लैन? ऐसा प्लैन बनाओ जो बड़े तो बड़े रहें छोटे सुभानअल्ला हो जाएं। अच्छा।

अच्छा - मन को आर्डर से चलाओ। सेकण्ड में जहाँ चाहो वहाँ मन लग जाये, टिक जाये। यह एक्सरसाइज़ करो। (ड्रिल) अच्छा -

कई जगह बच्चे सुन रहे हैं। याद भी कर रहे हैं, सुन भी रहे हैं। यह सुनकर खुश भी हो रहे हैं कि साइंस के साधन वास्तव में सुख-दाई आप बच्चों के लिए हैं।

चारों ओर के सर्व खजानों से सदा सम्पन्न बच्चों को, सदा खुशनसीब, खुशनुम: चेहरे और चलन से खुशी की अंचली देने वाले विश्व कल्याणकारी बच्चों को, सदा मन के मालिक बन एकाग्रता की शक्ति द्वारा मन को कन्ट्रोल करने वाले मनजीत, जगतजीत बच्चों को, सदा ब्राह्मण जीवन की विशेषता पवित्रता के पर्सनैलिटी में रहने वाले पवित्र ब्राह्मण आत्माओं को, सदा डबल लाइट बन फरिश्ता जीवन में ब्रह्मा बाप को फालो करने वाले, ऐसे ब्रह्मा बाप समान बच्चों को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते। चारों ओर सुनने वाले, याद करने वाले सर्व बच्चों को भी बहुत-बहुत दिल की दुआओं सहित यादप्यार, सर्व को नमस्ते।

**दादियों से:-** ड्रामा में हर एक को अच्छा पार्ट मिला हुआ है। अच्छा लगता है ना अपना पार्ट। बापदादा भी खुश होते हैं। आपके (दादी जी के) अच्छे सहयोगी हैं ना, राइट हैण्ड हैं ना। है ना राइट हैण्ड? देखो यह सारा ग्रुप, यह सब आप के राइट हैण्ड हैं। कितने अच्छे राइट हैण्ड हैं। देखो, आपके भी (दादी जानकी जी के) राइट हैण्ड हैं। विदेश की सेवा के भी राइट हैण्ड हैं। (तीन चार को स्टेज पर बुलाओ) आप लोगों के ऊपर, राइट हैण्डस के ऊपर जिम्मेवारी है। निमित्त यह हैं लेकिन जिम्मेवार आप हो (विदेश की बहनों से) क्योंकि हैण्ड ही तो काम करते हैं ना। आप देखो शरीर में सबसे ज्यादा काम कौन करता है? हैण्ड। तो आप सब राइट हैण्डस हो और हैण्डस जितना चाहें उतना कर सकते हैं। इनका काम है (दादियों का) मस्तक का काम, आपका है हैण्डस का काम। यह प्रेरणा देंगी, राय देंगी, डायरेक्शन देंगी लेकिन करने वाले आप हैं। अभी यह थोड़ेही जाके कोर्स करायेंगी। अभी इनका भी (बड़ी बहनों का) पार्ट पूरा हुआ कोर्स कराने का। मधुबन के राइट हैण्डस भी अच्छे हैं तो फारेन के भी अच्छे हैं। कमाल करने वाले हैं। बापदादा खुश होते हैं देखो, एक-एक कितना अच्छा रत्न है।

**(सभा से)** आप सभी भी राइट हैण्डस हो ना? राइट हैण्ड। राइट हैण्ड अर्थात् सदा राइट कर्म करने वाले। कभी भी वेस्ट कर्म करने वाले नहीं, राइट कर्म करने वाले। बापदादा को अच्छा लगता है, आप सभी श्रृंगार हो। निमित्त जितने हैं, और भी हैं। लेकिन बाप-दादा जब देखते हैं ना सभी एक दो के सहयोगी बन बहुत अच्छा कार्य कर रहे हैं, खुश होते हैं। आप निमित्त बनने वालों की युनिटी और प्युरिटी दोनों सारे परिवार को हिम्मत देती है। पाण्डव भी हैं। पाण्डवों को स्टेज पर बुलाया नहीं है, लेकिन हैं पाण्डव भी साथ। कितना अच्छा चांस सभी ने लिया। पहुंच गये तो चांस ले लिया। देखो, बापदादा जब देखते हैं ना एक-एक को, तो सोचते हैं इनको बुलाके बात करें लेकिन साकार शरीर माना बंधन। साकार शरीर के बंधन में आ गये ना, साकार शरीर के बंधन में इतना कर नहीं सकते लेकिन वतन में कर सकते हैं इसीलिए तो बंधनमुक्त हो गये ना। वहाँ जगह का सवाल नहीं, समय का सवाल नहीं लेकिन आपको पता है, एक गुप्त बात बताते हैं, बापदादा वतन में ग्रुप-ग्रुप को बुलाते हैं और उनसे रूहरिहान भी करते हैं। जैसे साकार में याद है - ब्रह्मा बाप ने एक एक ग्रुप को अपने पास भोजन पर बुलाया था, याद है? (क्लिफ्टन पर) ऐसे बापदादा वतन में बुलाते जरूर हैं लेकिन साकार में नहीं कर सकते। अच्छा। मधुबन के कितने अच्छे-अच्छे, सेवाधारी बैठे हैं, देखो कितने अच्छे-अच्छे डिपार्टमेंट के बैठे हैं। डबल फारेनर्स देखो कितने अच्छे-अच्छे हैं। मातायें देखो सभी अच्छे ते अच्छी हैं, लेकिन सभी को कैसे बुलायें। स्टेज पर सभी आ सकते हो? नहीं आ सकते। अच्छा है मधुबन की आकर्षण सभी को छत्रछाया का काम कराती है। जब पहुंच जाते हैं तो कितना अच्छा अनुभव करते हैं। ओम् शान्ति।

30-11-2003

## ‘‘चारों ही सबजेक्ट में अनुभव की अथॉरिटी बन समस्या को समाधान स्वरूप में परिवर्तन करो’’

आज ब्राह्मण संसार का रचता अपने चारों ओर के ब्राह्मण बच्चों को देख रहे हैं। यह ब्राह्मण संसार छोटा सा संसार है, लेकिन अति श्रेष्ठ, अति प्यारा संसार है। यह ब्राह्मण संसार सारे विश्व की विशेष आत्माओं का संसार है। हर एक ब्राह्मण कोटों में कोई, कोई में भी कोई आत्मा है क्योंकि अपने बाप को पहचान, बाप के वर्से के अधिकारी बने हैं। जैसे बाप ऊंचे ते ऊंचा है तो बाप को पहचान बाप का बनने वाली आत्मायें भी विशेष आत्मायें हैं। हर ब्राह्मण आत्मा के जन्मते ही भाग्य विधाता बाप ने मस्तक पर श्रेष्ठ भाग्य की लकीर खींच ली है, ऐसी श्रेष्ठ भाग्यवान आत्मा हैं। ऐसे भाग्यवान अपने को समझते हो? इतना बड़ा रूहानी नशा अनुभव होता है? हर एक ब्राह्मण के दिल में दिलाराम, दिल का दुलार, दिल का प्यार दे रहे हैं। यह परमात्म प्यार सारे कल्प में एक द्वारा और एक समय ही प्राप्त होता है। यह रूहानी नशा सदा हर कर्म में रहता है? क्योंकि आप विश्व को चैलेन्ज करते हो कि हम कर्मयोगी जीवन वाले विशेष आत्मायें हैं। सिर्फ योग लगाने वाले योगी नहीं, योगी जीवन वाले हो। जीवन सदाकाल की होती है। नेचुरल और निरन्तर होती है। 8 घण्टे, 6 घण्टे के योगी जीवन वाले नहीं। योग अर्थात् याद तो ब्राह्मण जीवन का लक्ष्य है। जीवन का लक्ष्य स्वत: ही याद रहता है और जैसा लक्ष्य होता है वैसे लक्षण भी स्वत: ही आते हैं।

बापदादा हर ब्राह्मण आत्मा के मस्तक में चमकता हुआ भाग्य का सितारा देखते हैं। बापदादा सदा हर बच्चे को श्रेष्ठ स्वमानधारी,

स्वराज्यधारी देखते हैं। तो आप सभी भी अपने को स्वमानधारी आत्मा हूँ, स्वराज्यधारी आत्मा हूँ - ऐसे ही अनुभव करते हो? सेकण्ड में अगर स्मृति में लाओ कि मैं स्वमानधारी आत्मा हूँ, तो सेकण्ड में स्वमान की कितनी लिस्ट आ जाती! अभी भी अपने स्वमान की लिस्ट स्मृति में आई? लम्बी लिस्ट है ना! स्वमान, अभिमान को खत्म कर देता है क्योंकि स्वमान है श्रेष्ठ अभिमान। तो श्रेष्ठ अभिमान अशुद्ध भिन्न-भिन्न देह-अभिमान को समाप्त कर देता है। जैसे सेकण्ड में लाइट का स्विच ऑन करने से अंधकार भाग जाता है, अंधकार को भगाया नहीं जाता है या अंधकार को निकालने की मेहनत नहीं करनी पड़ती है लेकिन स्विच आन किया अंधकार स्वत: ही समाप्त हो जाता है। ऐसे स्वमान की स्मृति का स्विच ऑन करो तो भिन्न-भिन्न देह-अभिमान समाप्त करने की मेहनत नहीं करनी पड़ेगी। मेहनत तब तक करनी पड़ती है जब तक स्वमान के स्मृति स्वरूप नहीं बनते। बापदादा बच्चों का खेल देखते हैं - स्वमान को दिल में वर्णन करते हैं - ''मैं बापदादा के दिल तख्तनशीन हूँ'', वर्णन भी कर रहे हैं, सोच भी रहे हैं लेकिन अनुभव की सीट पर सेट नहीं होते। जो सोचते हैं वह अनुभव होना जरूरी है क्योंकि सबसे श्रेष्ठ अथॉरिटी अनुभव की अथॉरिटी है। तो बापदादा देखते हैं - सुनते बहुत अच्छा हैं, सोचते भी बहुत अच्छा हैं लेकिन सुनना और सोचना अलग चीज़ है, अनुभवी स्वरूप बनना - यही ब्राह्मण जीवन की श्रेष्ठ अथॉरिटी है। यही भक्ति और ज्ञान में अन्तर है। भक्ति में भी सुनने की मस्ती में बहुत मस्त होते हैं। सोचते भी हैं लेकिन अनुभव नहीं कर पाते हैं। ज्ञान का अर्थ ही है, ज्ञानी तू आत्मा अर्थात् हर स्वमान के अनुभवी बनना। अनुभवी स्वरूप रूहानी नशा चढ़ाता है। अनुभव कभी भी जीवन में भूलता नहीं है, सुना हुआ, सोचा हुआ भूल सकता है लेकिन अनुभव की अथॉरिटी कभी कम नहीं होती है।

तो बापदादा यही बच्चों को स्मृति दिलाते हैं - हर सुनी हुई बात जो भगवान बाप से सुनी, उसके अनुभवी मूर्त बनो। अनुभव की हुई बात हजार लोग भी अगर मिटाने चाहें तो मिट नहीं सकती। माया भी अनुभव को मिटा नहीं सकती। जैसे शरीर धारण करते ही अनुभव करते हो कि मैं फलाना हूँ, तो कितना पक्का रहता है! कभी अपनी देह का नाम भूलता है? कोई आपको कहे नहीं आप फलानी या फलाना नहीं हो, तो मान सकते हो? ऐसे ही हर स्वमान की लिस्ट अनुभव करने से कभी स्वमान भूल नहीं सकता। लेकिन बापदादा ने देखा कि अनुभव हर स्वमान का वा हर प्वाइंट का, अनुभवी बनने में नम्बरवार हैं। जब अनुभव कर लिया कि मैं हूँ ही आत्मा, आत्मा के सिवाए और हो ही क्या! देह को तो मेरा कहते हो लेकिन मैं हूँ ही आत्मा, जब हो ही आत्मा तो देहभान कहाँ से आया? क्यों आया? कारण, 63 जन्म का अभ्यास, मैं देह हूँ, उल्टा अभ्यास पक्का है। यथार्थ अभ्यास अनुभव में भूल जाता है। बापदादा बच्चों को जब मेहनत करता देखते हैं तो बच्चों पर प्यार आता है। परमात्म बच्चे और मेहनत! कारण, अनुभव मूर्त की कमी है। जब देहभान का अनुभव कुछ भी हो जाए, कोई भी कर्म करते देहभान भूलता नहीं है, तो ब्राह्मण जीवन अर्थात् कर्म-योगी जीवन, योगी जीवन का अनुभव भूल कैसे सकता!

तो चेक करो - हर सबजेक्ट को अनुभव में लाया है? ज्ञान सुनना सुनाना तो सहज है लेकिन ज्ञान स्वरूप बनना है। ज्ञान को स्वरूप में लाया तो स्वत: ही हर कर्म नॉलेजफुल अर्थात् नॉलेज की लाइट माइट वाला होगा। नॉलेज को कहा ही जाता है लाइट और माइट। ऐसे ही योगी स्वरूप, योगयुक्त, युक्तियुक्त स्वरूप। धारणा स्वरूप अर्थात् हर कर्म, हर कर्मेन्द्रिय, हर गुण के धारणा स्वरूप होगी। सेवा के अनुभवी मूर्त, सेवाधारी का अर्थ ही है निरन्तर स्वत: ही सेवाधारी, चाहे मन्सा, चाहे वाचा, चाहे कर्मणा, चाहे सम्बन्ध-सम्पर्क हर कर्म में सेवा नेचुरल होती रहे, इसको कहा जाता है चार ही सबजेक्ट में अनुभव स्वरूप। तो सभी चेक करो - कहाँ तक अनुभवी बने हैं? हर गुण का अनुभवी, हर शक्ति का अनुभवी। वैसे भी कहावत है कि अनुभव समय पर बहुत काम में आता है। तो अनुभवी मूर्त का अनुभव कैसी भी समस्या हो, अनुभवी मूर्त अनुभव की अथॉरिटी से समस्या को सेकण्ड में समाधान स्वरूप में परिवर्तन कर लेता है। समस्या, समस्या नहीं रहेगी, समाधान स्वरूप बन जायेगी। समझा।

अभी समय की समीपता, बाप समान बनने की समीपता समाधान स्वरूप का अनुभव कराये। बहुत समय समस्या का आना, समाधान करना यह मेहनत की, अब बापदादा हर एक बच्चे को स्वमानधारी, स्वराज्य अधिकारी, समाधान स्वरूप में देखने चाहते हैं। अनुभवी मूर्त सेकण्ड में परिवर्तन कर सकता है। अच्छा।

सब तरफ के पहुंच गये हैं। डबल फारेनर्स भी हर ग्रुप में अपना चांस अच्छा ले रहे हैं। अच्छा - इस ग्रुप में पाण्डव भी कम नहीं हैं। पाण्डव सभी हाथ उठाओ। मातायें, कुमारियां, टीचर्स हाथ उठाओ। पहले ग्रुप में मातायें ज्यादा थी लेकिन इस ग्रुप में पाण्डवों ने भी रेस अच्छी की है। पाण्डवों का नशा और निश्चय अभी तक गायन में भी गाया हुआ है। क्या गाया हुआ है? जानते हो? 5 पाण्डव लेकिन नशा और निश्चय के आधार से विजयी बने, यह गायन अभी तक है। तो ऐसे पाण्डव हो? अच्छा - नशा है? तो पाण्डव जब भी सुनते होंगे आप पाण्डव हो, तो पाण्डवों को पाण्डवपति तो नहीं भूलता है ना! कभी-कभी भूलता है? पाण्डव और पाण्डवपति, पाण्डवों को कभी भी पाण्डवपति भूल नहीं सकता। पाण्डवों को यह नशा होना चाहिए, हम कल्प-कल्प के पाण्डव, पाण्डवपति के प्यारे हैं। यादगार में पाण्डवों का भी नाम कम नहीं है। पाण्डवों का टाइटिल ही है विजयी पाण्डव। तो ऐसे पाण्डव हैं? बस हम विजयी पाण्डव हैं, सिर्फ पाण्डव नहीं, विजयी पाण्डव। विजय का तिलक अविनाशी मस्तक पर लगा हुआ ही है।

माताओं को क्या नशा रहता है? बहुत नशा रहता है! मातायें नशे में कहती हैं कि बाबा आया ही है हमारे लिए। ऐसे है ना! क्योंकि आधाकल्प में माताओं को मर्तबा नहीं मिला है, अभी संगम पर राजनीति में भी माताओं को अधिकार मिला है। हर डिपार्टमेंट में आप शक्तियों को बाप ने आगे रखा ना, तो संसार में भी हर वर्ग में अब माताओं को अधिकार मिलता है। कोई भी ऐसा वर्ग नहीं है जिसमें मातायें नहीं हो। यह संगमयुग का मर्तबा है। तो माताओं को रहता है - हमारा बाबा। रहता है - मेरा बाबा? नशा है? मातायें हाथ हिला रही हैं। अच्छा है। भगवान को अपना बना लिया तो जादूगरिनी तो मातायें हुई ना! बापदादा देखता है मातायें चाहे पाण्डव, बापदादा के सर्व सम्बन्धों से, प्यार तो सर्व संबंधों से है लेकिन किसको कौन सा विशेष संबंध प्यारा है, वह भी देखते हैं। कई बच्चों को खुदा को दोस्त बनाना बहुत अच्छा लगता है। इसीलिए खुदा दोस्त की कहानी भी है। बापदादा यही कहते, जिस समय जिस संबंध की आवश्यकता हो तो भगवान को उस संबंध में अपना बना सकते हो। सर्व संबंध निभा सकते हो। बच्चों ने कहा बाबा मेरा, और बाप ने क्या कहा, मैं तेरा।

मधुबन की रौनक अच्छी लगती है ना! चाहे कितना भी दूर बैठे सुने भी, देखें भी लेकिन मधुबन की रौनक अपनी है। मधुबन में बापदादा तो मिलते ही हैं लेकिन और कितनी प्राप्तियां होती हैं? अगर लिस्ट निकालो तो कितनी प्राप्ति है? सबसे बड़े ते बड़ी प्राप्ति सहज योग, स्वत: योग रहता है। मेहनत नहीं करनी पड़ती। अगर कोई मधुबन के वायुमण्डल का महत्व रखे, तो मधुबन का वायुमण्डल, मधुबन की दिनचर्या सहजयोगी स्वत:योगी बनाने वाली है। क्यों? मधुबन में बुद्धि में सिर्फ एक ही काम है, सेवाधारी ग्रुप आता है वह अलग बात है लेकिन जो रिफ्रेश होने के लिए आते हैं तो मधुबन में क्या काम है? कोई जिम्मेवारी है क्या? खाओ, पिओ, मौज करो, पढ़ाई करो। तो मधुबन, मधुबन ही है। विदेश में भी सुन रहे हैं। लेकिन वह सुनना और मधुबन में आना, इसमें रात-दिन का फर्क है। बापदादा साधनों द्वारा सुनने, देखने वालों को भी यादप्यार तो देते हैं, कोई बच्चे तो रात जागकर भी सुनते हैं। ना से अच्छा जरूर है लेकिन अच्छे ते अच्छा मधुबन प्यारा है। मधुबन में आना अच्छा लगा है, या वहाँ बैठकर मुरली सुन लो! क्या अच्छा लगता है? वहाँ भी तो मुरली सुनेंगे ना। यहाँ भी तो पीछे-पीछे टी.वी. में देखते हैं। तो जो समझते हैं मधुबन में आना ही अच्छा है, वह हाथ उठाओ। (सभी ने उठाया) अच्छा। फिर भी देखो भक्ति में भी गायन क्या है? मधुबन में मुरली बाजे। यह नहीं है लण्डन में मुरली बाजे। कहाँ भी हो, मधुबन की महिमा का महत्व जानना अर्थात् स्वयं को महान बनाना।

अच्छा - सब जो भी आये हैं वो योगी जीवन, ज्ञानी तू आत्मा जीवन, धारणा स्वरूप का अनुभव कर रहे हैं। अभी पहले टर्न में इस सीजन के लिए विशेष अटेन्शन दिलाया था कि यह पूरा सीजन सन्तुष्टमणि बन रहना है और सन्तुष्ट करना है। सिर्फ बनना है नहीं, करना भी है। साथ में अभी समय अनुसार कभी भी कुछ भी हो सकता है, प्रश्न नहीं पूछो कब होगा, एक साल में होगा, 6 मास में होगा। अचानक कुछ भी किसी समय भी हो सकता है इसलिए अपने स्मृति का स्विच बहुत पावरफुल बनाओ। सेकण्ड में स्विच ऑन और अनुभव स्वरूप बन जाओ। स्विच ढीला होता है ना तो घड़ी-घड़ी ऑन-ऑफ करना पड़ता है और समय लगता है, ठीक होने में। लेकिन सेकण्ड में स्विच ऑन स्वमान का, स्वराज्य अधिकारी का, अन्तर्मुखी होकर अनुभव करते जाओ। अनुभवों के सागर में समा जाओ। अनुभव की अथॉरिटी को कोई भी अथॉरिटी जीत नहीं सकती। समझा, क्या करना है? बापदादा इशारा तो दे देता है लेकिन इन्तजार नहीं करो, कब-कब-कब नहीं अब। एवररेडी। सेकण्ड में स्मृति का स्विच ऑन कर सकते हो? कर सकते हो? कैसे भी सरकमस्टांश हों, कैसी भी समस्या हो, स्मृति का स्विच ऑन करो। यह अभ्यास करो क्योंकि फाइनल पेपर सेकण्ड का ही होना है, मिनट भी नहीं। सोचने वाला नहीं पास कर सकेगा, अनुभव वाला पास हो जायेगा। तो अभी सेकण्ड में सभी ''मैं परमधाम निवासी श्रेष्ठ आत्मा हूँ'', इस स्मृति के स्विच को ऑन करो और कोई भी स्मृति नहीं हो। कोई बुद्धि में हलचल नहीं हो, अचल। (ड्रिल) अच्छा।

चारों ओर के श्रेष्ठ स्वमानधारी, अनुभवी आत्माओं को, सदा हर सबजेक्ट को अनुभव में लाने वाले, सदा योगी जीवन में चलने वाले निरन्तर योगी आत्माओं को, सदा अपने विशेष भाग्य को हर कर्म में इमर्ज स्वरूप में रखने वाले कोटों में कोई, कोई में भी कोई विशेष आत्माओं को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

**सेवा का टर्न पंजाब का है:-** पंजाब वाले कितने आये हैं, उठो। टीचर्स बहुत आई हैं। पाण्डव भी हैं। यज्ञ सेवा का चांस कितना श्रेष्ठ अनुभव है क्योंकि श्रेष्ठ यज्ञ है और यज्ञ सेवा करना अर्थात् पुण्य का खाता अपने खाते में जमा करना। तो हर एक ने कितने पुण्य जमा किये हैं? अगर दिल से सेवा की तो एक का 100 गुणा पुण्य जमा किया। अच्छा है। पंजाब भी कम नहीं है, होशियार है। पंजाब की यह कमाल है कि पंजाब के वायुमण्डल को शान्त कर दिया। अभी लड़ाई झगड़ा होता है क्या? नहीं होता है ना। कॉमन की बात दूसरी है। विशेष आतंकवाद तो नहीं है ना! और सेवा भी बढ़ाते रहते हैं। सेवा की वृद्धि का शौक अच्छा है। पाण्डव भी निर्विघ्न हैं ना? निर्विघ्न, जो समझते हैं माया का काम है आना और हमारा काम है विजय पाना, वह हाथ उठाओ। मातायें टीचर्स, माया तो सबके पास आती है। टीचर्स के पास भी आती है क्योंकि टीचर्स को आगे बढ़ना है ना, तो माया तो आयेगी ना! अच्छा है। यह सेवा का चांस एक्स्ट्रा आपके पुण्य का खाता बढ़ाती है और दुआयें कितनी मिलती हैं? सन्तुष्ट होके जाना अर्थात्

दुआयें मिलना। तो पंजाब ने दुआओं का खाता जमा किया। अच्छा है लेकिन पंजाब से कोई माइक और वारिस नहीं मिला है। जबसे बापदादा ने कहा है तो कोई भी ज़ोन ने अभी माइक और वारिस नहीं लाया है। स्टेज पर तो लाये। पंजाब तो होशियार है। वारिस निकालने में, माइक तैयार करने में तो होशियार हैं। देखो, पंजाब का कॉमन नारा है - वहाँ कहते हैं ना जो बोले सो निहाल, तो पंजाब लावे तो पंजाब निहाल। लाना है, लाना है। देख रहे हैं बापदादा, कौन सा ज़ोन पहले लाता है। उसका महत्व है ना? अभी किसी ने लाया नहीं है। बना रहे हैं, विदेश वाले भी कोशिश तो बहुत कर रहे हैं, लायेंगे। डबल विदेशी, वारिस लाना है ना? कहाँ हैं, डबल विदेशी हाथ उठाओ। अभी देखेंगे डबल विदेशी नम्बर पहला लेते हैं, या भारत नम्बर पहला लेते हैं? कोई भी लेवे। बाप-दादा अब यह चाहते हैं कि ब्रह्माकुमारियों का परिचय और संबंध जोड़ने का काम अभी माइक करें। आपने तो काफी समय कर लिया ना। अभी आप दृष्टि दो वह माइक बोले, यह भी होना ही है। तो पंजाब वालों को मुबारक हो, मुबारक हो, मुबारक हो। अच्छा।

**दादी जी से:-** सभी को उमंग-उत्साह में लाने का अच्छा कार्य कर रही हो। (अभी तो करोड़ों को सन्देश देने का प्लैन चल रहा है) करोड़ क्या सारे विश्व की आत्माओं को सन्देश मिलना है। अहो प्रभु तो कहेंगे ना! अहो प्रभू कहने के लिए भी तो तैयार करना है ना! (दादियों से) यह भी सहयोग दे रही हैं। अच्छा है, मधुबन को सम्भाल रहे हैं। अच्छा सहयोगी ग्रुप मिला है ना! एक-एक की विशेषता है। फिर भी आदि रत्नों का प्रभाव पड़ता है। चाहे कितनी भी आयु हो जाए, नये-नये भी आगे बढ़ रहे हैं लेकिन फिर भी आदि रत्नों की पालना अपनी है। इसीलिए ग्रुप अच्छा है। (मोहिनी बहन को देखकर) यह भी आदि रत्नों में है ना! अच्छा है। (रत-नमोहिनी दादी ने उड़ीसा की सेवा का समाचार सुनाया, मोहिनी बहन ने आसाम की सेवा का समाचार सुनाया, सभी ने आपको बहुत-बहुत याद दी है) सेवा तो चारों ओर अच्छी है। उन्हों को भी याद देना। सेवा तो बढ़नी ही है क्योंकि अभी सभी को आवश्य-कता है। अच्छा।

**नलिनी बहन, संतोष बहन, सरला बहन, अचल बहन, प्रेम बहन आदि पुरानी बड़ी बहिनों से:-**

सभी अपने को जिम्मेवार समझते हो? तो आप सबके ऊपर बेहद की जिम्मेवारी है। सिर्फ पंजाब, गुजरात, बॉम्बे नहीं, बेहद की जैसे दादियाँ हैं ना, तो बेहद में हैं ना। ऐसे निमित्त कहाँ के भी हो लेकिन सदा बेहद की जिम्मेवारी अपने ऊपर समझो। कोई भी समय कहाँ भी आवश्यकता हो तो एवररेडी हो। जैसे दादियाँ हैं वैसे आपका भी ग्रुप है। अभी कोई हैं, कोई नहीं हैं, लेकिन ऐसा सेकण्ड ग्रुप भी बहुत बुद्धिवान है, सर्विसएबुल है, बहुत काम कर सकते हैं। तो ये सदा समझो कि हम बेहद के हैं, हद के नहीं। तो एवररेडी हो? कोई समय भी बुलाया तो आ जायेंगी! या कहेंगी ज़ोन का बहुत बड़ा काम है, तबियत नहीं ठीक है! नहीं। तबियत को बापदादा आपेही चलायेगा। कोई भी जिम्मेवार हो, बापदादा की नज़र में हैं इसीलिए खास बुलाया है। (विशेष क्या आश है?) सोच चलाओ, क्या-क्या होना चाहिए, जैसे दादी को आता है ना वैसे आप भी समझो हमारी भी जिम्मेवारी है। मनन करो क्या होना चाहिए, कैसे होना चाहिए। कैसे नजदीक आवें, वारिस निकलें, माइक निकलें, सेवा में थोड़ा नवीनता आवे, यह सोचो। अच्छा।

(दिल्ली और कलकत्ते में बड़े कार्यक्रम होने वाले हैं)

बापदादा ने विशेष दिल्ली और कलकत्ते वालों को याद किया। दोनों जगह पर ही कार्य की तैयारियाँ हो रही हैं। बापदादा ने देखा है कि दोनों तरफ मेहनत अच्छी हो रही है और सभी मिलजुल करके दिल से सेवा के उमंग से कर रहे हैं इसलिये बापदादा जो भी निमित्त हैं, उन सबको, नाम नहीं लेते हैं लेकिन एक-एक को नाम से विशेषता सहित याद-प्यार दे रहे हैं। सफलता तो है ही और सफलता हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है, इस निश्चय और नशे से सफलता प्रत्यक्ष हो ही जायेगी। यह सन्देश सबको देते रहना। अच्छा।

अच्छा, आस्ट्रेलिया को याद-प्यार दिया था, लेकिन जनक बच्ची वहाँ है इसलिये उसके साथ आस्ट्रेलिया वालों को भी विशेष याद। आस्ट्रेलिया में ही तीन रिट्रीट हाउस हैं जो और कोई स्थान पर नहीं हैं, तो विशेष आत्मायें भी हैं, विशेषतायें भी हैं लेकिन वो गुप्त रहते हैं। तो स्टेज पर अपना पार्ट बजायेंगे तो बहुत सेवा में भी सहयोग मिलेगा। और उन आत्माओं को, निमित्त जो बनेंगे उनको भी विशेष दुआयें मिलेंगी। इसलिये आस्ट्रेलिया वाले और बहुत कुछ कर सकते हैं लेकिन गुप्त से अभी स्टेज पर आवें। अच्छा जनक बच्ची को खास याद। ऐसे तो सभी को नाम सहित याद है, कितने नाम लेवें। इसलिये एक मुख्य को दिया तो सबको दिया।

(परदादी की याद दी) अच्छा-कलकत्ता तक तैयार हो जायेगी। अच्छा है एक सैम्पल तो है ना। ब्रहमा बाप का सैम्पुल है। तो नाम भी देखो आप सबने परदादी रखा है। दादी भी नहीं परदादी। विशेषता है ना। अच्छा। तबियत ठीक हो रही है, हो जायेगी। नारायण दादा ने भी याद दी है, उसका भी आपरेशन हुआ है। उसको भी याद देना। याद करने वालों को याद का रेसपान्ड जरूर देना। आप सबको भी याद का रेसपान्ड मिल रहा है ना। आपको सम्मुख मिल रहा है, उन्हों को माइक द्वारा मिल रहा है। अच्छा। ओम् शान्ति।

15-12-2003

## ''प्रत्यक्षता के लिए साधारणता को अलौकिकता में परिवर्तन कर दर्शनीय मूर्त बनो''

आज बापदादा अपने चारों ओर के ब्राह्मण बच्चों के मस्तक के बीच भाग्य के तीन सितारे चमकते हुए देख रहे हैं। कितना श्रेष्ठ भाग्य है और कितना सहज प्राप्त हुआ है। एक है अलौकिक श्रेष्ठ जन्म का भाग्य, दूसरा है - श्रेष्ठ सम्बन्ध का भाग्य, तीसरा है - सर्व प्राप्तियों का भाग्य। तीनों भाग्य के चमकते हुए सितारों को देख बापदादा भी हर्षित हो रहे हैं। जन्म का भाग्य देखो - स्वयं भाग्य विधाता बाप द्वारा आप सबका जन्म है। जब जन्म-दाता ही भाग्य-विधाता है तो जन्म कितना अलौकिक और श्रेष्ठ है। आप सबको भी अपने इस भाग्य के जन्म का नशा और खुशी है ना! साथ-साथ सम्बन्ध की विशेषता देखो - सारे कल्प में ऐसा सम्बन्ध अन्य किसी भी आत्मा का नहीं है। आप विशेष आत्माओं को ही एक द्वारा तीन सम्बन्ध प्राप्त हैं। एक ही बाप भी है, शिक्षक भी है और सतगुरू भी है। ऐसे एक द्वारा तीन सम्बन्ध सिवाए ब्राह्मण आत्माओं के किसी के भी नहीं हैं। अनुभव है ना? बाप के सम्बन्ध से वर्सा भी दे रहे हैं, पालना भी कर रहे हैं। वर्सा भी देखो कितना ऊंचा और अविनाशी है। दुनिया वाले कहते हैं - हमारा पालनहार भगवान है लेकिन आप बच्चे निश्चय और नशे से कहते हो हमारा पालनहार स्वयं भगवान है। ऐसी पालना, परमात्म पालना, परमात्म प्यार, परमात्म वर्सा किसको प्राप्त है! तो एक ही बाप भी है, पालनहार भी है और शिक्षक भी है।

हर आत्मा के जीवन में विशेष तीन सम्बन्धी आवश्यक हैं लेकिन तीनों सम्बन्ध अलग-अलग होते हैं। आपको एक में तीन सम्बन्ध हैं। पढ़ाई भी देखो - तीनों काल की पढ़ाई है। त्रिकालदर्शी बनने की पढ़ाई है। पढ़ाई को सोर्स ऑफ इन्कम कहा जाता है। पढ़ाई से पद की प्राप्ति होती है। सारे विश्व में देखो - सबसे ऊंचे ते ऊंचा पद, राज्य पद गाया हुआ है। तो आपको इस पढ़ाई से क्या पद प्राप्त होता है? अब भी राजे और भविष्य भी राज्य पद। अभी स्व-राज्य है, राजयोगी स्वराज्य अधिकारी हो और भविष्य का राज्य भाग्य तो अविनाशी है ही। इससे बड़ा पद कोई होता नहीं। शिक्षक द्वारा शिक्षा भी त्रिकालदर्शी की है और पद भी दैवी राज्य पद है। ऐसा शिक्षक का संबंध सिवाए ब्राह्मण जीवन के न किसका हुआ है, न हो सकता है। साथ में सतगुरू का सम्बन्ध, सतगुरू द्वारा श्रीमत, जिस श्रीमत का गायन आज भी भक्ति में हो रहा है। आप निश्चय से कहते हो हमारा हर कदम किसके आधार से चलता है? श्रीमत के आधार से हर कदम चलता है। तो चेक करो - हर कदम श्रीमत पर चलता है? भाग्य तो प्राप्त है लेकिन भाग्य के प्राप्ति का जीवन में अनुभव है? हर कदम श्रीमत पर है वा कभी-कभी मनमत या परमत तो नहीं मिक्स होती? इसकी परख है - अगर कदम श्रीमत पर है तो हर कदम में पदमों की कमाई जमा का अनुभव होगा। कदम श्रीमत पर है तो सहज सफलता है। साथ-साथ सतगुरू द्वारा वरदानों की खान प्राप्त है। वरदान है उसकी पहचान - जहाँ वरदान होगा वहाँ मेहनत नहीं होगी। तो सतगुरू के सम्बन्ध में श्रेष्ठ मत और सदा वरदान की प्राप्ति है। और विशेषता सहज मार्ग की है, जब एक में तीन सम्बन्ध हैं तो एक को याद करना सहज है। तीन को अलग-अलग याद करने की जरूरत नहीं इसीलिए आप सब कहते हो एक बाबा दूसरा न कोई। यह सहज है क्योंकि एक में विशेष सम्बन्ध आ जाते हैं। तो भाग्य के सितारे तो चमक रहे हैं क्योंकि बाप द्वारा तो सर्व को प्राप्तियाँ हैं ही।

तीसरा भाग्य का सितारा है - सर्व प्राप्तियाँ, गायन है अप्राप्त नहीं कोई वस्तु ब्राह्मणों के खजाने में। याद करो अपने खजानों को। ऐसा खजाना वा सर्व प्राप्तियाँ और कोई द्वारा हो सकती हैं! दिल से कहा मेरा बाबा, खजाने हाजिर। इसलिए इतने श्रेष्ठ भाग्य सदा स्मृति में रहें, इसमें नम्बरवार हैं। अभी बापदादा यही चाहते कि **हर बच्चा जब कोटों में भी कोई है तो सब बच्चे नम्बरवार नहीं, नम्बरवन होने हैं।** तो अपने से पूछो नम्बरवार में हो या नम्बरवन हो? क्या हो? टीचर्स नम्बरवन या नम्बरवार? पाण्डव नम्बरवन हो या नम्बरवार हो? क्या हो? जो समझते हैं हम नम्बरवन हैं और सदा रहेंगे, ऐसे नहीं आज नम्बरवन और कल नम्बरवार में आ जाओ, जो इतने निश्चयबुद्धि हैं कि हम सदा जैसे बाप ब्रह्मा नम्बरवन, ऐसे फॉलो ब्रह्मा बाप नम्बरवन हैं और रहेंगे वह हाथ उठाओ। हैं? ऐसे ही नहीं हाथ उठा लेना, सोच समझके उठाना। लम्बा उठाओ, आधा उठाते हैं तो आधा हैं। हाथ तो बहुतों ने उठाया है, देखा, दादी ने देखा। अभी इन्हों से (नम्बरवन वालों से) हिसाब लेना। जनक (दादी जानकी) हिसाब लेना। डबल फारेनर्स ने हाथ उठाया। उठाओ, नम्बरवन? बापदादा की तो हाथ उठाके दिल खुश कर दी। मुबारक हो। अच्छा - हाथ उठाया इसका मतलब है कि आपको अपने में हिम्मत है और हिम्मत है तो बापदादा भी मददगार है ही। लेकिन अभी बापदादा क्या चाहते हैं? नम्बरवन हो, यह तो खुशी की बात है। लेकिन.... लेकिन बतायें क्या या लेकिन है ही नहीं? बापदादा के पास लेकिन है।

बापदादा ने देखा कि मन में समाया हुआ तो है लेकिन मन तक है, चेहरे और चलन तक इमर्ज नहीं है। अभी बापदादा नम्बरवन की स्टेज चलन और चेहरे पर देखने चाहते हैं। अब समय अनुसार नम्बरवन कहने वालों को हर चलन में दर्शनीय मूर्ति दिखाई देनी चाहिए। आपका चेहरा बतावे कि यह दर्शनीय मूर्त है। आपके जड़ चित्र अन्तिम जन्म तक भी, अन्तिम समय तक भी दर्शनीय मूर्त अनुभव होते हैं। तो चैतन्य में भी जैसे ब्रह्मा बाप को देखा, साकार स्वरूप में, फरिश्ता तो बाद में बना, लेकिन साकार स्वरूप में होते हुए आप सबको क्या दिखाई देता था? साधारण दिखाई देता था? अन्तिम 84 वाँ जन्म, पुराना जन्म, 60 वर्ष के बाद की आयु, फिर भी आदि से अन्त तक दर्शनीय मूर्त अनुभव की। की ना? साकार रूप में की ना? ऐसे जिन्होंने नम्बरवन में हाथ

उठाया, टी.वी. में निकाला है ना? बापदादा उनका फाइल देखेंगे, फाइल तो है ना बापदादा के पास। तो अब से आपकी हर चलन से अनुभव हो, कर्म साधारण हो, चाहे कोई भी काम करते हो, बिजनेस करते हो, डॉक्टरी करते हो, वकालत करते हो, जो भी कुछ करते हो लेकिन जिस स्थान पर आप सम्बन्ध-सम्पर्क में आते हो वह आपकी चलन से ऐसे महसूस करते हैं कि यह न्यारे और अलौकिक हैं? या साधारण समझते हैं कि ऐसे तो लौकिक भी होते हैं? काम की विशेषता नहीं लेकिन प्रैक्टिकल लाइफ की विशेषता। बहुत अच्छा बिजनेस है, बहुत अच्छा वकालत करता है, बहुत अच्छा डायरेक्टर है...., यह तो बहुत हैं। एक बुक निक-लता है जिसमें विशेष आत्माओं का नाम होता है। कितनों का नाम आता है, बहुत होते हैं। इसने यह विशेषता की, यह इसने विशे-षता की, नाम आ गया। तो जिन्होंने भी हाथ उठाया, उठाना तो सबको चाहिए लेकिन जिन्होंने उठाया है और उठाना ही है। तो आपकी प्रैक्टिकल चलन में चेंज देखें। यह अभी आवाज नहीं निकला है, चाहे इन्डस्ट्री में, चाहे कहाँ भी काम करते हो, एक-एक आत्मा कहे कि **यह साधारण कर्म करते भी दर्शनीय मूर्त हैं।** ऐसे हो सकता है, हो सकता है? आगे वाले बोलो, हो सकता है? अभी रिजल्ट में कम सुनाई देता है। साधारणता ज्यादा दिखाई देती है। हाँ कभी जब कोई विशेष कार्य करते हो, विशेष अटेन्शन रखते हो तब तो ठीक दिखाई देता है लेकिन आपको बाप से प्यार है, बाप से प्यार है? कितनी परसेन्ट? टीचर्स हाथ उठाओ। यह तो बहुत टीचर्स आ गई हैं। हो सकता है? कि कभी साधारण कभी विशेष? शब्द भी जो निकलता है ना, कोई भी कार्य करते भाषा भी अलौकिक चाहिए। साधारण भाषा नहीं।

अभी बापदादा की सभी बच्चों में यह श्रेष्ठ आशा है - फिर बाप की प्रत्यक्षता होगी। आपका कर्म, चलन, चेहरा स्वत: ही सिद्ध करेगा, भाषण से नहीं सिद्ध होगा। भाषण तो एक तीर लगाना है। लेकिन प्रत्यक्षता होगी, इनको बनाने वाला कौन! खुद ढूंढेंगे, खुद पूछेंगे आपको बनाने वाला कौन? रचना, रचता को प्रत्यक्ष करती है।

तो इस वर्ष क्या करेंगे? दादी ने तो कहा है गांव की सेवा करना। वह भले करना। लेकिन बापदादा अभी यह परिवर्तन देखने चाहता है। एक साल में सम्भव है? एक साल में? दूसरे वारी जब सीजन शुरू होगी तो कान्ट्रास्ट दिखाई दे, सब सेन्टरों से आवाज आवे कि महान परिवर्तन, फिर गीत गायेंगे परिवर्तन, परिवर्तन...। साधारण बोल अभी आपके भाग्य के आगे अच्छा नहीं लगता। कारण है 'मैं'। यह मैं, मैं-पन, मैंने जो सोचा, मैंने जो कहा, मैं जो करता हूँ... वही ठीक है। इस मैं पन के कारण अभिमान भी आता है, क्रोध भी आता है। दोनों अपना काम कर लेते हैं। बाप का प्रसाद है, मैं कहाँ से आया! प्रसाद को कोई मैं पन में ला सकता है क्या? अगर बुद्धि भी है, कोई हुनर भी है, कोई विशेषता भी है। बापदादा विशेषता को, बुद्धि को आफरीन देता है लेकिन 'मैं' नहीं लाओ। यह मैं पन को समाप्त करो। यह सूक्ष्म मैं पन है। अलौकिक जीवन में यह मैं पन दर्शनीय मूर्त नहीं बनने देता। तो दादियां क्या समझती हो? परिवर्तन हो सकता है? तीनों पाण्डव (निर्वैर भाई, रमेश भाई, बृजमोहन भाई) बताओ। विशेष हो ना तीन। तीनों बताओ हो सकता है? हो सकता है? हो सकता है? अच्छा - अभी इसके कमाण्डर बनना और बात में कमाण्डर नहीं बनना। परिवर्तन में कमाण्डर बनना। मधुबन वाले बनेंगे? बनेंगे? मधुबन वाले हाथ उठाओ। अच्छा - बनेंगे? बॉम्बे वाले हाथ उठाओ, योगिनी भी बैठी है। (योगिनी बहन पार्ला) बॉम्बे वाले बनेंगे? अगर बनेंगे तो हाथ हिलाओ। अच्छा दिल्ली वाले हाथ उठाओ। तो दिल्ली वाले करेंगे? टीचर्स बताओ। देखना। हर मास बापदादा रिपोर्ट लेंगे। हिम्मत है ना? मुबारक हो।

अच्छा, इन्दौर वाले हाथ उठाओ। इन्दौर की टीचर्स हाथ उठाओ। तो टीचर्स करेंगी? इन्दौर करेगा? हाथ हिलाओ। सारे हाथ नहीं हिले। करेंगे, करायेंगे? दादियां देखना। देख रहे हैं टी.वी. में। गुजरात हाथ उठाओ। गुजरात करेगा? हाथ हिलाना तो सहज है। अभी मन को हिलाना है। क्यों, आपको तरस नहीं आता, इतना दु:ख देख करके? अभी परिवर्तन हो तो अच्छा है ना? **तो अभी प्रत्यक्षता का प्लैन है - प्रैक्टिकल जीवन।** बाकी प्रोग्राम करते हो, यह तो बिजी रहने के लिए बहुत अच्छा है लेकिन प्रत्यक्षता होगी आपके चलन और चेहरे से। और भी कोई ज़ोन रह गया? यू.पी. वाले हाथ उठाओ। यू.पी. थोड़े हैं। अच्छा यू.पी. करेंगे? महाराष्ट्र वाले हाथ उठाओ। लम्बा उठाओ। अच्छा। महाराष्ट्र करेगा? मुबारक हो। राजस्थान उठाओ। टीचर्स हाथ हिलाओ। कर्ना-टक उठाओ। अच्छा - कर्नाटक करेगा? आन्ध्र प्रदेश हाथ उठाओ। चलो यह चिटचैट की। डबल विदेशी हाथ उठाओ। जयन्ती कहाँ है? करेंगे डबल विदेशी? अभी देखो सभा के बीच में कहा है। सभी ने हिम्मत बहुत अच्छी दिखाई, इसके लिए पदमगुणा मुबारक हो। बाहर में भी सुन रहे हैं, अपने देशों में भी सुन रहे हैं, वह भी हाथ उठा रहे हैं।

वैसे भी देखो जो श्रेष्ठ आत्मायें होती हैं उन्हों के हर वचन को सत वचन कहा जाता है। कहते हैं ना सत वचन महाराज। तो आप तो महा महाराज हो। आप सबका हर वचन जो भी सुने वह दिल में अनुभव करे सत वचन है। मन में बहुत कुछ आपके भरा हुआ है, बापदादा के पास मन को देखने का टी.वी. भी है। यहाँ यह टी.वी. तो बाहर का शक्ल दिखाती है ना। लेकिन बापदादा के पास हर एक के हर समय के मन के गति का यन्त्र है। तो मन में बहुत कुछ दिखाई देता है, जब मन का टी.वी. देखते हैं तो खुश हो जाते हैं, बहुत खजाने हैं, बहुत शक्तियां हैं। लेकिन कर्म में यथा शक्ति हो जाता है। अभी कर्म तक लाओ, वाणी तक लाओ, चेहरे तक लाओ, चलन में लाओ। तभी सभी कहेंगे, जो आपका एक गीत है ना, शक्तियां आ गई....। सब शिव की शक्तियां हैं। पाण्डव भी

शक्तियां हो। फिर शक्तियां शिव बाप को प्रत्यक्ष करेंगी। अभी छोटे-छोटे खेलपाल बन्द करो। अब वानप्रस्थ स्थिति को इमर्ज करो। तो बापदादा सभी बच्चों को, इस समय बापदादा की आशाओं को पूर्ण करने वाले आशाओं के सितारे देख रहे हैं। कोई भी बात आवे तो यह स्लोगन याद रखना - **''परिवर्तन, परिवर्तन, परिवर्तन''।**

अच्छा - दिल्ली वालों ने अच्छी सेवा का सबूत दिया। क्यों, बापदादा सेवा में जो एडीशन चाहते थे वह आरम्भ किया है क्योंकि जो भी सम्बन्ध-सम्पर्क में आते हैं, वह अभी तक यही कहते हैं कि आपका कार्य अच्छा है लेकिन एडवरटाइज़ अच्छी नहीं है। गुप्त रहे हैं इसीलिए बाप प्रत्यक्ष भी नहीं हुआ है। तो दिल्ली में इस बारी यह जो मीडिया की सेवा हुई है, वह अभी आरम्भ हुई है। यह अच्छा नाम निकला, कि ब्रह्माकुमारियों का विशाल प्रोग्राम हुआ। तो मुबारक है दिल्ली वालों को, जो भी दिल्ली के आये हैं ना वह आगे आकर खड़े हो जाओ। बहुत बड़ा ग्रुप आ गया है। (करीब 900 का ग्रुप दिल्ली से आया है) देखो जो स्टेज पर हैं, उसको बाप-दादा नहीं देखता, आप सामने वालों को देखता। इसलिए अपना नाम सबसे पहले समझना। हर एक समझे, सेवा में बापदादा ने हमें नम्बरवन दिया। देखो बहुत आये हैं तो बहुतों को स्टेज पर तो नहीं बुला सकते हैं, सूक्ष्मवतन में आओ तो आ सकते हो। पीछे वाले यह नहीं समझना कि हम पीछे हैं, आप सबसे आगे हैं। जो भी टीचर्स हैं, एक-एक को नाम सहित बापदादा यादप्यार और मुबारक दे रहे हैं। नाम की माला नहीं जपेंगे लेकिन दिल में बापदादा हर एक की माला जप रहे हैं। इसलिए कभी भी नहीं सोचना हमारा नाम नहीं आया। सबका नाम है। साकार वतन है ना, तो साकार में साकार के समान विधि करनी पड़ती है। अभी इतनों को कैसे स्टेज पर बुलायेंगे। स्टेज ही दब जायेगी। जो पीछे वाले हैं ना, हाथ उठाओ। आप दिल पर हो, यह स्टेज पर हैं। तो बापदादा ने विशेषता क्या देखी? एक तो एकता, यह एकता की शक्ति, हाँ जी, हाँ जी, विचार दिया, फिर एकता के बन्धन में बंध गये। तो एकता सफलता का साधन है। आप एक-एक सफलता के सितारे हो। पीछे वालों को खास। एक-एक बाप के सामने हैं। अभी खुश हो गये या कहेंगे हमारा नाम नहीं आया। सभी ने मेहनत की है, जो छोटी-छोटी टीचर्स हैं उन्होंने ज्यादा की है। भाईयों ने भी बहुत मेह-नत की है। जिन्होंने जो भी ड्युटी उठाई वह सफलता पूर्वक की है, इसीलिए सफलता है। दिल्ली है, बापदादा की दिल है। तो पीछे वाले सामने आये, या पीछे रहे? उल्हना नहीं देना, हमको नहीं बुलाया, हमको नहीं बुलाया। नहीं, सब बाप के नयनों में हो। बाप के सम्मुख हो। छोटी टीचर्स को डबल मुबारक हो और पाण्डवों को सदा बाप का साथ रहेगा। अच्छा, खुश हो गये, सदा खुश रहना।

अभी विदेश कमाल करे। विदेश में प्रोग्राम हो और भारत में दिखाई दे। बड़ी बात नहीं है। चाहे लाख इक्ट्ठे नहीं हो, उसकी बात नहीं है लेकिन मीडिया का प्रभाव अच्छा हो। लाखों का अन्दाज वहाँ इक्ट्ठा होना और बात है लेकिन मीडिया द्वारा भारत में दिखाई दे, तब कुम्भकरण जागेंगे। अच्छा।

कलकत्ता वालों ने भी यादप्यार भेजा है। हर एक स्थान का अपना-अपना प्रभाव होता है। देहली में इन्टरनेशनल साधन हैं। कल-कत्ता की विशेषता फिर और होगी। कलकत्ता भी कम नहीं है। मेहनत अच्छी कर रहे हैं। और जो पुरुषार्थ करते हैं उसकी प्रालब्ध तो मिलती ही है। और सफलता तो बच्चों का जन्म सिद्ध अधिकार है। तो कलकत्ते वाले भी खूब धूम मचा रहे हैं, और धूम मचाते रहेंगे। इसलिए कलकत्ता दिल्ली से कम नहीं जायेगा, वह भी आगे जायेगा। हर एक स्थान की अपनी-अपनी रूपरेखा होती है। अभी बापदादा फॉरेन को कह रहा है, फॉरेन में प्रोग्राम हो और भारत देखे। भोपाल भी कर रहा है। आगरा तो म्युजियम है ना, वह परमा-नेंट होगा ना।

आस्ट्रेलिया के रॉबिन भाई से:- अभी बापदादा कह रहे हैं फॉरेन में ऐसा प्रोग्राम करो जो मीडिया द्वारा भारत में दिखाई दे। हो सकता है ना? तो अभी निमित्त बनना। कर सकते हैं, फॉरेन में तो छम-छम है। फॉरेन किसमें कम है। ताली बजाये, हाजिर। होना ही है। होना ही है। हर एक स्थान में उमंग-उत्साह है, वह टर्न बाई टर्न कर रहे हैं। जिसका होता है उसका दिखाई देता है। बाकी सभी अच्छी मेहनत कर रहे हैं। चाहे भोपाल है, चाहे आगरा है। सब मेहनत कर रहे हैं और करनी ही है और सफलता है ही है। ठीक है ना! अच्छा - जो भी विंग्स मीटिंग के लिए आये हैं, वह हाथ उठाओ।

**इन्जीनियर्स-साइंटिस्ट विंग, मेडिकल विंग, सोशल सर्विस विंग, यूथ विंग तथा गांव की सेवा के निमित्त राजस्थान के भाई बहिनें मीटिंग के लिए आये हैं :-**

अच्छा है, यह विंग्स की सेवा में अच्छी रिजल्ट दिखाई देती है क्योंकि हर एक विंग मेहनत करते हैं, सम्पर्क बढ़ाते जाते हैं। लेकिन बापदादा चाहते हैं जैसे मेडिकल विंग ने मेडीटेशन द्वारा हार्ट का प्रैक्टिकल करके दिखाया है। सबूत दिया है कि मेडीटेशन से हार्ट की तकलीफ ठीक हो सकती है और प्रूफ दिया है, दिया है ना प्रूफ! आप सबने सुना है ना! ऐसे दुनिया वाले प्रत्यक्ष सबूत चाहते हैं। इसी प्रकार से जो भी विंग आये हो, प्रोग्राम तो करना ही है, करते भी हो लेकिन ऐसा कोई प्लैन बनाओ, जिससे प्रैक्टिकल रिजल्ट सबकी सामने आवे। सभी विंग के लिए बापदादा कह रहे हैं। यह गवर्मेन्ट तक भी पहुंच तो रहा है ना! और यहाँ-वहाँ आवाज तो फैला है कि मेडीटेशन द्वारा भी हो सकता है। अभी इसको और बढ़ाना चाहिए लेकिन शुरू तो किया है ना! डाक्टर गुप्ता कहाँ है? और बढ़ाना चाहिए इसको, लेकिन फिर भी प्रैक्टिकल रूपरेखा तो है ना! ऐसे हर वर्ग को कोई प्रैक्टिकल प्रमाण दिखाना

चाहिए। कॉन्टैक्ट बढ़ाया है, आवाज फैलाया है, इसके लिए बापदादा मुबारक देते हैं। और मेहनत भी कर रहे हैं, सफलता भी है लेकिन ऐसा कोई प्लैन बनाओ, जैसे बड़े-बड़े चित्रों में बापदादा साकार में लिखाते थे, अंधों के आगे आइना। ऐसे प्रैक्टिकल सुन-करके ही समझ जायें कि हाँ यह ऐसा है। तो सभी विंग जो भी आये हैं, चाहे सोशल आया है, चाहे इन्जीनियर-साइंस है, चाहे मेडि-कल है, यूथ है, जो भी आये हो, ऐसा कोई नक्शा बनाओ, प्रैक्टिकल का सबूत दो जो सब फैल जाये कि मेडीटेशन द्वारा सब कुछ हो सकता है। सबका अटेन्शन मेडीटेशन के तरफ हो, आध्यात्मिकता की तरफ हो। समझा। विंग के हेड उठो। तो ऐसा कोई प्लैन बनाओ। मेडिकल वाले भी और आगे बीमारियों का भी कर सकते हैं। थोड़ा ट्रायल करते जायेंगे तो फैलता जायेगा। **दुआ भी सब कुछ कर सकती है - यह प्रत्यक्ष करो।** ठीक है। बहुत अच्छा किया है।

**सेवा का टर्न इन्दौर का है :-** अच्छा है, चांस मिलता है, चांसलर बनने के लिए। चांसलर का मर्तबा आगे होता है ना। तो जो भी चांस मिलता है उसमें एक तो अपना वर्तमान भी बनता है और समीप भी आते हैं। हर एक ज़ोन सबकी नजरों में आ जाते हैं। सेवा करते हो तो सबकी नजरों में आटोमेटिकली आ जाते हो। ब्राह्मण परिवार का सम्पर्क बहुत अच्छा हो जाता है। तो इन्दौर वालों ने भी अच्छा पार्ट बजाया है। वैसे रिजल्ट में देखने में आता है कि जो भी ज़ोन सेवा का चांस लेते हैं, तो अभी तक सभी ज़ोन ने बहुत अच्छा पार्ट बजाया है। सहयोग का सहयोग हो जाता है और समीपता की समीपता हो जाती है। दादियों की नज़र में आ जाते हैं ना। तो मुबारक है। इन्दौर ज़ोन के सेवाधारी या निमित्त बने हुओं को। जितनी भी आत्मायें हैं, उन्होंने आपका फायदा तो उठाया ना। और जितनों ने फायदा उठाया उसका शेयर, कितनी भी मात्रा में, थोड़े या बहुत, आपके खाते में शेयर जमा हो गया। तो बहुत अच्छा चांस लिया है। बहुत अच्छा। अच्छा -

आज के बापदादा के बोल का एक शब्द नहीं भूलना, वह कौन सा ? **परिवर्तन।** मुझे बदलना है। दूसरे को बदलकर नहीं बदलना है, मुझे बदलके औरों को बदलाना है। दूसरा बदले तो मैं बदलूं, नहीं। मुझे निमित्त बनना है। मुझे हे अर्जुन बनना है तब ब्रह्मा बाप समान नम्बरवन लेंगे। (पीछे वाले हाथ उठाओ) पीछे वालों को बापदादा पहला नम्बर यादप्यार दे रहे हैं। अच्छा -

चारों ओर के बहुत-बहुत-बहुत भाग्यवान आत्माओं को, सारे विश्व के बीच कोटों में कोई, कोई में भी कोई विशेष आत्माओं को, सदा अपने चलन और चेहरे द्वारा बापदादा को प्रत्यक्ष करने वाले विशेष बच्चों को, सदा सहयोग और स्नेह के बन्धन में रहने वाले श्रेष्ठ आत्माओं को, सदा ब्रह्मा बाप समान हर कर्म में अलौकिक कर्म करने वाले अलौकिक आत्माओं को, बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

---

31-12-2003

## ''इस वर्ष निमित्त और निर्माण बन जमा के खाते को बढ़ाओ और अखण्ड महादानी बनो''

आज अनेक भुजाधारी बापदादा अपने चारों ओर की भुजाओं को देख रहे हैं। कोई भुजायें साकार में सम्मुख हैं और कई भुजायें सूक्ष्म रूप में दिखाई दे रही हैं। बापदादा अपनी अनेक भुजाओं को देख हर्षित हो रहे हैं। सभी भुजायें नम्बरवार बहुत आलराउण्डर, एवररेडी, आज्ञाकारी भुजायें हैं। बापदादा सिर्फ इशारा करते तो राइट हैण्डस कहते - हाँ बाबा, हाज़िर बाबा, अभी बाबा। ऐसे मुरब्बी बच्चों को देख कितनी खुशी होती! बापदादा को रूहानी फखुर है कि सिवाए बापदादा के और किसी भी धर्म आत्मा, महान आत्मा को ऐसी और इतनी सहयोगी भुजायें नहीं मिलती। देखो सारे कल्प में चक्कर लगाओ ऐसी भुजायें किसको मिली हैं? तो बापदादा हर भुजा की विशेषता को देख रहे हैं। सारे विश्व से चुनी हुई विशेष भुजायें हो, परमात्म सहयोगी भुजायें हो। देखो आज इस हाल में भी कितने पहुंच गये हैं! (आज हाल में 18 हजार से भी अधिक भाई बहिनें बैठे हैं) सभी अपने को परमात्म भुजा हैं, यह अनुभव करते हो? फखुर है ना!

बापदादा को खुशी है कि चारों ओर से नया वर्ष मनाने के लिए सभी पहुंच गये हैं। लेकिन नया वर्ष क्या याद दिलाता है? नया युग, नया जन्म। जितना ही अति पुराना लास्ट जन्म है उतना ही नया पहला जन्म कितना सुन्दर है! यह श्याम और वह सुन्दर। इतना स्पष्ट जैसे आज के दिन पुराना वर्ष भी स्पष्ट है और नया वर्ष भी सामने स्पष्ट है। ऐसे अपना नया युग, नया जन्म स्पष्ट सामने आता है? आज लास्ट जन्म में हैं, कल फर्स्ट जन्म में होंगे। क्लीयर है? सामने आता है? जो आदि बच्चे हैं उन्होंने ब्रह्मा बाप का अनुभव किया। ब्रह्मा बाप को जैसे अपना नया जन्म, नये जन्म का राजाई शरीर रूपी वस्त्र सदा सामने खूंटी पर लटका हुआ दिखाई देता था। जो भी बच्चे मिलने जाते वह अनुभव करते, ब्रह्मा बाप का अनुभव रहा, आज बूढ़ा हूँ कल मिचनू सा बन जाऊंगा। याद है ना! पुरानों को याद है? है भी आज और कल का खेल। इतना स्पष्ट भविष्य अनुभव हो। आज स्वराज्य अधिकारी हैं कल विश्व राज्य अधिकारी। है नशा? देखो, आज बच्चे ताज पहनकर बैठे हैं। (रिट्रीट में आये हुए डबल विदेशी छोटे बच्चे ताज पहनकर बैठे हैं) तो क्या नशा है? ताज पहनने से क्या नशा है? यह फरिश्ते के नशे में हैं। हाथ हिला रहे हैं, हम नशे में हैं।

तो इस वर्ष क्या करेंगे? नये वर्ष में नवीनता क्या करेंगे? कोई प्लैन बनाया है? नवीनता क्या करेंगे? प्रोग्राम तो करते रहते हैं, लाख का भी किया, दो लाख का भी किया, नवीनता क्या करेंगे? आजकल के लोग एक तरफ स्व प्राप्ति के लिए इच्छुक भी हैं, लेकिन हिम्मतहीन हैं। हिम्मत नहीं है। सुनने चाहते भी हैं, लेकिन बनने की हिम्मत नहीं है। ऐसी आत्माओं को परिवर्तन करने के लिए पहले तो आत्माओं को हिम्मत के पंख लगाओ। हिम्मत के पंख का आधार है अनुभव। अनुभव कराओ। अनुभव ऐसी चीज़ है, जरा सा अंचली मिलने के बाद अनुभव किया तो अनुभव के पंख कहो, या अनुभव के पांव कहो उससे हिम्मत में आगे बढ़ सकेंगे। इसके लिए विशेष **इस वर्ष निरन्तर अखण्ड महादानी बनना पड़े, अखण्ड।** मन्सा द्वारा शक्ति स्वरूप बनाओ। महादानी बन मन्सा द्वारा, वायब्रेशन द्वारा निरन्तर शक्तियों का अनुभव कराओ। वाचा द्वारा ज्ञान दान दो, कर्म द्वारा गुणों का दान दो। सारा दिन चाहे मन्सा, चाहे वाचा, चाहे कर्म तीनों द्वारा अखण्ड महादानी बनो। समय प्रमाण अभी दानी नहीं, कभी-कभी दान किया, नहीं, अखण्ड दानी क्योंकि आत्माओं को आवश्यकता है। तो महादानी बनने के लिए पहले अपना जमा का खाता चेक करो। चार ही सबजेक्ट में जमा का खाता कितनी परसेन्ट में है? अगर स्वयं में जमा का खाता नहीं होगा तो महादानी कैसे बनेंगे! और जमा के खाते को चेक करने की निशानी क्या है? मन्सा, वाचा, कर्म द्वारा सेवा तो की लेकिन जमा की निशानी है - सेवा करते हुए पहले स्वयं की सन्तुष्टता। साथ-साथ जिन्हों की सेवा करते, उन आत्माओं में खुशी की सन्तुष्टता आई? अगर दोनों तरफ सन्तुष्टता नहीं तो समझो सेवा के खाते में आपकी सेवा का फल जमा नहीं हुआ।

बापदादा कभी-कभी बच्चों के जमा का खाता देखते हैं। तो कहाँ-कहाँ मेहनत ज्यादा है, लेकिन जमा का फल कम है। कारण? दोनों तरफ की सन्तुष्टता की कमी। अगर सन्तुष्टता का अनुभव नहीं किया, चाहे स्वयं, चाहे दूसरे तो जमा का खाता कम होता है। बापदादा ने जमा का खाता बहुत सहज बढ़ाने की गोल्डन चाबी बच्चों को दी है। जानते हो वह चाबी क्या है? मिली तो है ना! सहज जमा का खाता भरपूर करने की गोल्डन चाबी है - कोई भी मन्सा-वाचा-कर्म, किसी में भी सेवा करने के समय एक तो अपने अन्दर निमित्त भाव की स्मृति। निमित्त भाव, निर्माण भाव, शुभ भाव, आत्मिक स्नेह का भाव, अगर इस भाव की स्थिति में स्थित होकर सेवा करते हो तो सहज आपके इस भाव से आत्माओं की भावना पूर्ण हो जाती है। आज के लोग हर एक का भाव क्या है, वह नोट करते हैं। क्या निमित्त भाव से कर रहे हैं, वा अभिमान के भाव से! जहाँ निमित्त भाव है वहाँ निर्मान भाव ऑटोमेटिकली आ जाता है। तो चेक करो - क्या जमा हुआ? कितना जमा हुआ? क्योंकि इस समय संगमयुग ही जमा करने का युग है। फिर तो सारा कल्प जमा की प्रालब्ध है।

तो इस वर्ष क्या विशेष अटेन्शन देना है? अपने-अपने जमा का खाता चेक करो। चेकर भी बनो, मेकर भी बनो क्योंकि समय की समीपता के नज़ारे देख रहे हो। और सभी ने बापदादा से वायदा किया है कि हम समान बनेंगे। वायदा किया है ना? जिन्होंने वायदा किया है, वह हाथ उठाओ। किया है पक्का? कि परसेन्टेज़ में? पक्का किया है ना? तो ब्रह्मा बाप समान खाता जमा चाहिए ना! ब्रह्मा बाप के समान बनना है तो ब्रह्मा बाप का विशेष चरित्र क्या देखा? आदि से लेकर अन्त तक हर बात में, मैं कहा या बाबा कहा? मैं कर रहा हूँ, नहीं, बाबा करा रहा है। किससे मिलने आये हो? बाबा से मिलने आये हो। मैं पन का अभाव, अविद्या, यह देखा ना! देखा? हर मुरली में बाबा, बाबा कितना बार याद दिलाते हैं? तो समान बनना, इसका अर्थ ही है पहले मैं पन का अभाव हो। पहले सुनाया है - कि ब्राह्मणों का मैं-पन भी बहुत रॉयल है। याद है ना? सुनाया था ना! सब चाहते हैं कि बापदादा की प्रत्यक्षता हो। बापदादा की प्रत्यक्षता करें। प्लैन बहुत बनाते हो। अच्छे प्लैन बनाते हो, बापदादा खुश है। लेकिन यह रॉयल रूप का मैं-पन प्लैन में, सफलता में कुछ परसेन्टेज़ कम कर देता है। नेचुरल संकल्प में, बोल में, कर्म में, हर संकल्प में बाबा, बाबा स्मृति में हो। मैं-पन नहीं। बापदादा करावनहार करा रहा है। जगत-अम्बा की यही विशेष धारणा रही। जगत अम्बा का स्लोगन याद है, पुरानों को याद होगा। है याद? बोलो, (हुक्मी हुक्म चलाए रहा) यह थी विशेष धारणा जगत अम्बा की। तो नम्बर लेना है, समान बनना है तो मैं पन खत्म हो जाए। मुख से ऑटोमेटिक बाबा-बाबा शब्द निकले। कर्म में, आपकी सूरत में बाप की मूरत दिखाई दे तब प्रत्यक्षता होगी।

बापदादा यह रॉयल रूप के मैं-मैं के गीत बहुत सुनते हैं। मैंने जो किया वही ठीक है, मैंने जो सोचा वही ठीक है, वही होना चाहिए, यह मैं पन धोखा दे देता है। सोचो भले, कहो भले लेकिन निमित्त और निर्माण भाव से। बापदादा ने पहले भी एक रूहानी ड्रिल सिखाई है, कौन सी ड्रिल? अभी-अभी मालिक, अभी-अभी बालक। विचार देने में मालिक पन, मैजारिटी के फाइनल होने के बाद बालक पन। यह मालिक और बालक... यह रूहानी ड्रिल बहुत-बहुत आवश्यक है। सिर्फ बापदादा के तीन शब्द शिक्षा के याद रखो - सबको याद हैं! मन्सा में निराकारी, वाचा में निरंहकारी, कर्म में निर्विकारी। जब भी संकल्प करते हो तो निराकारी स्थिति में स्थित होके संकल्प करो और सब भूल जाए लेकिन यह तीन शब्द नहीं भूलो। यह साकार रूप की तीन शब्दों की शिक्षा सौगात है। तो ब्रह्मा बाप से साकार रूप में भी प्यार रहा है। अभी भी डबल फारेनर्स कई अनुभव सुनाते हैं कि ब्रह्मा बाप से बहुत प्यार है। देखा नहीं है तो भी प्यार है। है? हाँ डबल फारनेर्स ब्रह्मा बाप से प्यार ज्यादा है ना? है ना? तो जिससे प्यार होता है ना उसकी सौगात

बहुत सम्भाल के रखते हैं। चाहे छोटी सी भी सौगात होगी ना, तो जिससे अति प्यार होता है उसकी सौगात को छिपाके रखते हैं, सम्भाल के रखते हैं। तो ब्रह्मा बाप से प्यार है तो इन तीन शब्दों की शिक्षा से प्यार। इसमें सम्पन्न बनना या समान बनना बहुत सहज हो जायेगा। याद करो ब्रह्मा बाप ने क्या कहा!

तो नये वर्ष में वाचा की सेवा भले करो, धूमधाम से करो लेकिन अनुभव कराने की सेवा सदा अटेन्शन में रखो। सब अनुभव करें कि इस बहन द्वारा या भाई द्वारा हमें शक्ति का अनुभव हुआ, शान्ति का अनुभव हुआ, क्योंकि अनुभव कभी भूलता नहीं है। सुना हुआ भूल जाता है। अच्छा लगता है लेकिन भूल जाता है। अनुभव ऐसी चीज़ है जो खींच के उसको आपके नजदीक लायेगी। सम्पर्क वाला सम्बन्ध में आता रहेगा। क्योंकि सम्बन्ध के बिना वर्से के अधिकारी नहीं बन सकते हैं। तो अनुभव सम्बन्ध में लाने वाला है। अच्छा।

समझा, क्या करेंगे? चेक करो, चेकर भी बनो मेकर भी बनो। अनुभव कराने के मेकर बनो, जमा के खाते चेक करने के चेकर बनो। अच्छा।

सब पहुंच गये हो तो बापदादा सभी को दिल की दुआओं सहित पदमगुणा मुबारक दे रहे हैं। देखो पटरानी, पटराने बन गये हो ना? कुर्सी राना नहीं कहा जाता है, पटराना कहा जाता है। आज सारी सभा मैजारटी पटरानी, पटराने बन गये हैं। बैठ-बैठकर थक तो नहीं गये हैं। कुर्सी पर बैठने वालों को पट मिल गया है, तो थकावट तो नहीं, दर्द तो नहीं हो रहा है? खुशी में सब भूल जाता है। अच्छा - आज समाचार में सुनाया है कि एक तो बच्चों का ग्रुप आया है। बच्चे सब उठो। सभी को इन्हों का ताज दिखाई दे रहा है? तो ताजधारी बच्चे हैं। देखो, झण्डियां लहरा रहे हैं। अच्छा है। बच्चों को देख करके खुशी होती है ना! और सुना कि बच्चों ने भी रिट्रीट की है। अच्छा कितने बच्चे हैं? (रिट्रीट के लिए 11 देशों से 26 बच्चे आये हुए हैं) तो जो रिट्रीट की वह अपने-अपने देश में जाके औरों को भी रिट्रीट करायेंगे? हाँ जी की झण्डी हिलाते हैं। भूल नहीं जाना। ऐसा एक्जाम्पुल बनना जो सभी कहें वाह बच्चे वाह! सभी देशों से रिजल्ट आयेगी ना। जो पाठ पढ़ा वह कर्म तक लाना। सिर्फ कान तक नहीं, कर्म तक। अच्छा है। बच्चों को जैसा संग मिलता है वैसा रंग लगता है। तो बच्चों को देखकर बापदादा खुश होते हैं। खास मुबारक देते हैं। पहले तो ताज की मुबा-रक हो। सजधज के आये हैं। देखो आप बैठे यहाँ हो लेकिन सभी देश वाले आपको देख रहे हैं। अमेरिका भी देख रही है, लण्डन भी देख रहा है, आस्ट्रेलिया भी देख रहा है, सब आपको देख रहे हैं। कितने भाग्यवान हो! दूसरा ग्रुप है - यूथ ग्रुप। डबल फारेनर्स यह अच्छा करते हैं, ग्रुप ग्रुप की रिट्रीट कर लेते हैं। डबल फायदा उठाते हैं। बापदादा से भी मिलते हैं और साथ-साथ रिट्रीट भी करते हैं। (26 देशों से 160 यूथ आये हैं) आपको तो बहुत कुछ सेवा में दिखाना है। इन्टरनेशनल यूथ ग्रुप बनाया है। इसमें इन्ट-रनेशनल है ना! अच्छा यह तीन टीचर मिली हैं, त्रिमूर्ति। अच्छा है। बापदादा ने समाचार सुना था और रिजल्ट भी यूथ ग्रुप की सुनी। बापदादा को एक बात बहुत अच्छी लगी, जो सभी के लिए बहुत अच्छी है। यूथ ग्रुप ने लक्ष्य रखा है कि हम सोल कान्सेसनेस, आत्म-अभिमानी ज्यादा में ज्यादा रहेंगे। आत्मा का पाठ पक्का किया है। किया है पक्का? हाथ हिलाओ। मधुबन तक रहेगा या वहाँ भी रहेगा? बच्ची ने सुनाया तो बापदादा ने पहले-पहले छोटे बच्चों की बोर्डिंग में भी आत्मा का पाठ पक्का कराया था, इन्होंने भी लक्ष्य रखा है कि बाडीकान्सेस नहीं होंगे, सोलकान्सेसनेस में रहेंगे। पक्का है ना? तो कैसे पता पड़ेगा कि पक्का है या कच्चा है? टीचर्स रिपोर्ट लिखेंगे? हर मास की चारों ओर की रिपोर्ट अपने पास मंगाओ और फिर वह रिपोर्ट मधुबन में भेजो। दादी दीदी के नाम से नहीं भेजना, उन्हों को काम बहुत होता है। आफिस में भेजना। और जब भी कोई समाचार का लेटर भेजते हो तो उसमें ऊपर से लिखो - इस डिपार्टमेंट के लिए यह समाचार है। यूथ रिजल्ट। तो पता पड़ेगा कि कहाँ तक प्रैक्टिकल में लाया है। आप लोग करेंगे तो सभी को उमंग आयेगा, उत्साह बढ़ेगा। अच्छी टॉपिक रखी है। कुछ भी हो जाए बाडीकान्सेस में नहीं आना। बापदादा को पसन्द आया। रिपोर्ट अच्छी है। अभी ऐसे ही अपना संगठन अपने-अपने देश में बढ़ाओ। उन्हों को भी उमंग-उत्साह मे लाओ। अगर यूथ आत्म-अभिमानी स्टेज में पक्के पास हो गये तो गवर्मेन्ट भी इनाम देगी, यह प्रेजीडेंट जो है ना, वह इनाम देगा। वह अच्छा है, जानता है। आपको इनाम की कोई आवश्यकता नहीं है लेकिन इससे सेवा होती है। टी.वी. में, रेडियो में आवाज फैलता है ना। ब्रह्माकुमार और ब्रह्माकुमारियां यह प्रतिज्ञा करके प्रैक्टिकल में चल रहे हैं। करेंगे ना, ऐसा शो करेंगे? करेंगे? अच्छा - चलो, बड़े तो बड़े हैं यूथ नम्बरवन हो जायें। बापदादा बहुत-बहुत इनएडवांस हर एक यूथ को दुआयें दे रहे हैं। तो बाप की दुआयें सदा साथ रखना। अच्छा है डबल फायदा लेते हैं, यह बहुत अच्छा है।

**सेवा का टर्न गुजरात का है**:- गुजरात की सभी टीचर्स खड़ी हो जाओ। टीचर्स ही बहुत हैं। टीचर्स की संख्या सबसे ज्यादा नम्बर-वन कौन सा जोन है? (पहला महाराष्ट्र, सेकण्ड नम्बर गुजरात है) फर्स्ट नम्बर महाराष्ट्र है! महाराष्ट्र में दूसरे भी हैं ना, आन्ध्र प्रदेश भी है। आन्ध्रप्रदेश छोटा नहीं है, काफी बड़ा है तो दोनों मिलाके नम्बरवन हैं और आप एक ही गुजरात के हो। मुबारक हो। इतनी निर्विघ्न सेवा है ना! जितनी टीचर्स हैं, जितने सेवा में नम्बरवन हो, वन हो गया ना। इतना ही निर्विघ्न में भी नम्बरवन। इस वर्ष सेवा का गोल्डन चांस मिला है, आपकी सेवा में नया वर्ष शुरू हो जायेगा। तो यह नवीनता करके गुजरात दिखाना। पूरा साल सारा गुज-

रात निर्विघ्न, नम्बरवन। हो सकता है? तो बापदादा सभी ज़ोन को आपका एक्जैम्पुल देंगे। बड़ा भी है और निर्विघ्न भी है। दोनों में नम्बरवन। ठीक है? सभी टीचर्स ने हाथ उठाया? फिर से उठाओ। सिर्फ हाथ नहीं उठाना, मन को उड़ाना। हाथ मन सहित है ना! ठीक है? फिर तो मुबारक है। इनएडवांस मुबारक और दुआयें हैं। दादियों की भी दुआयें हैं। देखो जनक बच्ची भी दुआयें दे रही है, बेड पर बैठकर भी दुआयें दे रही है। कमाल दिखाना। कोई भी बात हो समा देना। अन्दर मन में बापदादा को दे करके समा देना। एक - सहनशक्ति, दूसरी - समाने की शक्ति, अगर यह दोनों विशेष शक्तियां आपमें हैं तो पास विद आनर हो जायेंगी। इसको इमर्ज रखना। सहनशक्ति को भी और समाने की शक्ति को भी। ऐसे नहीं समाना जो बीमार हो जाओ, ऐसे नहीं। कई अन्दर समाने की कोशिश करते हैं ना तो बीमार हो जाते हैं, दिमाग खराब हो जाता है। ऐसे नहीं समाना। समाने की शक्ति से समाना। अच्छा है। गुजरात वाले कर सकते हैं। करना ही है। ठीक है ना! क्या, **कहो करना ही है। बापदादा भी कहते हैं हुआ ही पड़ा है।** अच्छा।

गुजरात के सेवाधारी तो बहुत हैं इसलिए उठाते नहीं हैं, बहुत संख्या है। अच्छा उठने चाहते हैं, चलो उठो। अच्छा, बहुत हैं। (3000 सेवाधारी हैं) देखो गुजरात को सब ज़ोन में से एक वरदान ज्यादा है। कौन सा ज्यादा है? (समीप रहने का) सबसे ज्यादा वरदान एक्स्ट्रा है कि गुजरात की धरनी पर भाग्यविधाता ब्रह्मा बाप की नज़र पड़ी। यह गुजरात भाग्य-विधाता ब्रह्मा बाप की नज़र से पैदा हुआ है। तो विशेष वरदान है। गुजरात ने आपेही सेन्टर नहीं खोले, बापदादा ने खुलवाये। इसलिए गुजरात को लिफ्ट है। अभी इसी लिफ्ट की गिफ्ट से सहज निर्विघ्न बन जाना। अच्छा। बहुत अच्छी सेवा की। गुजरात की दिल बड़ी है ना तो देखो संगठन भी बड़ा हो गया है। अच्छा।

**ज्युरिस्ट विंग:-** सभी ने देखा, आपके ब्राह्मण परिवार में एक ही ग्रुप में कितने वकील और जज हैं। देखा? बहुत वकील जज हैं। अभी आप लोगों ने बापदादा की एक आशा पूरी की नहीं है। की है? वकील और जज हैं तो हिलाओ। जनता को थोड़ा हिला के दिखाओ ना। गीता के भगवान पर हिलाके दिखाओ। कोई ऐसा प्लैन नहीं बनाया है। चलो थोड़ा-थोड़ा आवाज तो फैलाओ। इन्डी-विज्युअल ट्रायल तो करो हिलाके देखने की। बिचारे इसी एक गलती के कारण परमात्मा के वर्से से वंचित हैं। ऐसे वंचित आत्माओं को वर्सा दिलाने के निमित्त बनो। ठीक है ना! कोई प्लैन बनाओ। थोड़ा-थोड़ा भी रिहर्सल करो, हिलाके देखो क्या कहते हैं! जैसे देखो साइंस और साइलेन्स दोनों का मेल आजकल दुनिया समझती है होना चाहिए। ऐसे मेडीटेशन और मेडीसन इसका भी मेल समझते हैं। ऐसे ज्युरिस्ट क्या सिद्ध करेंगे? बापदादा ने पहले भी कहा है कि हर वर्ग को कुछ ऐसा स्लोगन बनाना चाहिए। जैसे साइंस साइलेन्स, ऐसे कुछ प्रैक्टिकल में स्लोगन बनाओ। याद है - पहले-पहले जब प्रदर्शनी शुरू की थी तब प्रोब रखते थे, प्रोब के रूप में ऐसी प्वाइंटस रखते थे, अभी नहीं रखते हैं लेकिन शुरू-शुरू में प्रोब रखते थे। अभी प्रदर्शनी में नहीं तो इन्डीविज्युअल ही सही। केस के लिए बापदादा नहीं कह रहे हैं, पहले तैयारी तो हो। पहले थोड़ी छेड़छाड़ करो, लोगों को मिलाओ। वह आपकी तरफ से तैयार होवें। अच्छा। तो बापदादा कहते हैं कि आप सेल्फ जज हो, तो ''जज़ योर सेल्फ'' इस टॉपिक को थोड़ा और आगे बढ़ाओ। जज़ेस को कहो सेल्फ योर जज बन करके सृष्टि का परिवर्तन करो। वह केस करने वाला जज भी और जज योर सेल्फ भी, दोनों हैं। ऐसे कुछ इन्वेंशन करो, स्लोगन बनाओ जो दो-दो शब्द मिलते हों। ऐसे कुछ टापिक बनाओ। ठीक है थोड़ा ट्रायल करो इन्डिपिडेंट। पहले थोड़ा ग्रुप तैयार करो, पीछे सोचो। रिट्रीट करते हो, इक्ट्ठे होते हो, कुछ सोचते हो इसकी मुबारक हो। (कान्फ्रेस भी बहुत करते हैं) करो बहुत अच्छा है। माइक कौन से निकले हैं, वह बाप के सामने नहीं आये हैं। माइक माना जिसके आवाज में ताकत हो, माइक उसको कहा जाता है। चाहे प्रेजीडेंट हो, प्राइममिनिस्टर हो लेकिन आवाज में ताकत नहीं तो माइक नहीं। माइक वह जिसकी आवाज में ताकत हो, ऐसा माइक तैयार करो। किसी भी रीति से बेधड़क होके माइक बनके आवाज करे, ऐसे माइक चाहिए। ऐसा माइक नहीं जो अपने ही समाज में करे। माइक तो बड़े आवाज वाला चाहिए। अच्छा।

**कलचरल विंग**:- कलचरल विंग ने क्या नया प्लैन बनाया? कोई नया प्लैन बनाया? (अभियान निकालने का और कान्फ्रेंस करने का प्लैन बनाया है) यह तो ठीक है, नया क्या बनाया? यह तो अच्छा है भले करो लेकिन कुछ नवीनता करो। (प्रदर्शनी बनाई है, इससे बापदादा की प्रत्यक्षता करेंगे) बापदादा यही चाहते हैं कि हर एक विंग कोई नया प्लैन बनाये, कितने समय से कान्फ्रेन्स की है, कितना टाइम हुआ है कान्फ्रेन्स करते, बहुत साल हो गये और प्रदर्शनी, अभियान यह तो करते रहते हो, अभी कोई नया प्लैन बनाओ। (कलचरल कार्निवल करने का विचार है) बनाओ प्लैन। अच्छा। सभी वर्ग के लिए बापदादा कह रहे हैं कि कोई नया प्लैन बनाओ। यह तो सभी को पता पड़ गया है कि ब्रह्माकुमारियां कान्फ्रेन्स करती हैं, अभियान भी निकालती हैं, यह सबको पता पड़ गया है। अभी कोई नया प्लैन ऐसा बनाओ जो सब समझें कि यह देखना जरूरी है क्योंकि आजकल नवीनता को पसन्द करते हैं। तो सोचो, टच हो जायेगा कोई बड़ी बात नहीं है और देखेंगे कौन सा वर्ग नवीनता दिखाता है। नम्बरवन एक तो बनेगा ना। तो करो। अमृतवेले योग के बाद, योग के टाइम नहीं करना लेकिन योग के बाद दिमाग में ताकत होती है उस समय सोचो, तो टचिंग हो जायेगी। बाकी जो किया है उसकी मुबारक है, जो प्लैन बनाया है वह भी करो लेकिन कुछ नया करके दिखाना। सोचो। बहुत

अच्छा।

(यू.पी. और राजस्थान में बड़ा मेला करने का उमंग दादी जी को आ रहा है) करना चाहिए क्योंकि राजस्थान और यू.पी. में बहुत समय हुआ है, ऐसा बड़ा प्रोग्राम नहीं हुआ है। अभी राजस्थान का माइक उमंग में है। (वाइसप्रेजीडेंट के लिए) उसका आवाज मदद कर सकता है क्योंकि सीट पर है तो फायदा लेना चाहिए। सीट पर बैठने वाली आत्मा का आवाज थोड़ा बुलन्द होता है, एडवरटाइज हो जाती है। करना चाहिए, यह संकल्प ठीक है। मदद चाहिए, तो एक दो की मदद ले लो लेकिन करना चाहिए।

**कलकत्ता में बहुत बड़ा प्रोग्राम हुआ, भोपाल में बड़ा मेला होने वाला है**

वैसे हर जगह के बड़े प्रोग्राम जो हुए हैं, हर जगह की अपनी-अपनी विशेषता रही है, कहाँ संख्या की, कहाँ प्रोप्रोगण्डा आलराउण्ड हुई है, जैसे दिल्ली में विदेश तक आवाज गया, कलकत्ता में दो लाख हो गये। अलग-अलग विशेषता हुई ना। ऐसे ही गुजरात ने पहला नम्बर लिया, इन्वेंशन की ना। बाम्बे में भी अच्छा आवाज फैला। मद्रास में तो ऐसा तीन दादियों का चित्र बनाया जो सब तरफ चला। (पहले गुजरात ने बनाया था) मद्रास ने थोड़ा अच्छा बनाया, शोभा थी। सभी जगह अच्छा बना। बापदादा तो बच्चों की यूनिटी, एकता और एकाग्रता पर दुआयें देता है। चाहे संख्या कितनी भी आई लेकिन नाम तो हुआ ना। ब्रह्माकुमारियां मैदान में तो आई ना, इसीलिए सभी स्थान की अपनी-अपनी विशेषता रही और सभी ने मिल करके संगठित रूप में किया, इसकी पहला नम्बर मुबारक है। अच्छा। भोपाल भी फंक्शन करने में होशियार है। करेंगे, वह भी कमाल करेंगे क्योंकि भोपाल में आई.पीज का कनेक्शन अच्छा है। काफी आई.पी इनके कनेक्शन में हैं, अभी उन्हों को कार्य में कितना लगाते हैं, वह प्रोग्राम बनाया होगा। बाकी वह भी होशियार हैं, कर लेंगे। अच्छा हो जायेगा।

अच्छा। अभी सभी क्या करेंगे? बापदादा को नये वर्ष की कोई गिफ्ट देंगे या नहीं? नये वर्ष में क्या करते हो? एक दो को गिफ्ट देते हो ना। एक कार्ड देते हैं, एक गिफ्ट देते हैं। तो बापदादा को कार्ड नहीं चाहिए, रिकार्ड चाहिए। सब बच्चों का रिकार्ड नम्बरवन हो, यह रिकार्ड चाहिए। निर्विघ्न हो, अभी यह कोई-कोई विघ्न की बातें सुनते हैं ना, तो बापदादा को एक हंसी का खेल याद आता है। मालूम है कौन सा हंसी का खेल है? वह खेल है - बूढ़े-बूढ़े गुड़ियों का खेल कर रहे हैं। हैं बूढ़े लेकिन खेल करते हैं गुड़ियों का, तो हंसी का खेल है ना। तो अभी जो छोटी-छोटी बातें सुनते हैं, देखते हैं ना तो ऐसे ही लगता है, वानप्रस्थ अवस्था वाले और बातें कितनी छोटी हैं! तो यह रिकार्ड बाप को अच्छा नहीं लगता। इसके बजाए, कार्ड के बजाए रिकार्ड दो - निर्विघ्न, छोटी बातें समाप्त। बड़े को छोटा बनाना सीखो और छोटी को खत्म करना सीखो। बापदादा एक-एक बच्चे का चेहरा, बापदादा का मुखड़ा देखने का दर्पण बनाने चाहते हैं। आपके दर्पण में बापदादा दिखाई दे। तो ऐसा विचित्र दर्पण बापदादा को गिफ्ट में दो। दुनिया में तो ऐसा कोई दर्पण है ही नहीं जिसमें परमात्मा दिखाई दे। तो आप इस नये वर्ष की ऐसी गिफ्ट दो जो विचित्र दर्पण बन जाओ। जो भी देखे, जो भी सुने तो उसको बापदादा ही दिखाई दे, सुनाई दे। बाप का आवाज सुनाई दे। तो सौगात देंगे? देंगे? जो देने का दृढ़ संकल्प करते हैं, वह हाथ उठाओ। दृढ़ संकल्प का हाथ उठाओ। डबल फारेनर्स भी उठा रहे हैं। सिन्धी ग्रुप भी उठा रहा है। सोच के उठा रहे हैं। सिंधी ग्रुप सोच के उठा रहे हो?

सिंधी ग्रुप उठो। तो बापदादा को गिफ्ट देंगे? अगर देंगे तो बड़ा हाथ उठाओ। अच्छा। सभी ने उठाया है। देखना, रिपोर्ट मिल जायेगी। रिपोर्ट मिलेगी ना! आपेही रिपोर्ट लिखना। हर मास में दो अक्षर लिखना - प्रॉमिस ओ.के.। जो प्रॉमिस किया है वह ओ.के. है। कार्ड में ही लिखना, ज्यादा लिफाफा नहीं भेजना, खर्चा नहीं करना, कार्ड में ही भेजना। ठीक है ना। कांध तो हिलाओ। अच्छा है। बापदादा की सिन्धी ग्रुप में उम्मींद है, बतायें कौन सी उम्मींद है? यही उम्मींद है कि सिन्धी ग्रुप में से एक ऐसा माइक निकले जो चैलेन्ज करे कि क्या था और क्या बन गये हैं। जो सिन्धियों को जगावे। बिचारे, बिचारे हैं। पहचानते ही नहीं हैं। देश के अवतार को ही नहीं जानते हैं। तो सिन्धी ग्रुप में ऐसा माइक निकले जो चैलेन्ज से कहे हम सुनाते हैं यथार्थ क्या है। ठीक है? उम्मींद पूरी करेंगे? अभी थोड़े आये हैं लेकिन औरों को उमंग में लाके ऐसे उम्मीदों के सितारे बनो। उम्मींद को पूरा करने वाले सफलता के सितारे बनो। कोई को भी तैयार करो। ठीक है? देखेंगे। बोलो करेंगे? अच्छा है। कुमारियां भी करेंगी। हिम्मत अच्छी है, मुबारक हो। (जुलाई में सिन्धी सम्मेलन करेंगे) माइक तैयार करके दिखाओ कोई सिन्धी। अच्छा है, सिन्धी पार्टी आती है ना तो रौनक हो जाती है।

अच्छा - अभी सभी को याद है - क्या देना है? गिफ्ट और रिकार्ड। वैसे तो अगर दर्पण बन गये तो रिकार्ड आ ही जायेगा। अभी बापदादा मेहनत का पुरुषार्थ देखने नहीं चाहते हैं। अब छोटी-छोटी बातों में मेहनत नहीं, अभी उड़ो। ऊपर ही रहेंगे तो बाकी सब बातें नीचे रह जायेंगी।

अच्छा -मधुबन वाले सब ठीक हैं। चार पांच सब भुजायें हैं? पाण्डव भवन, ज्ञान सरोवर से थोड़े-थोड़े आये हैं। अच्छा - सभी को शान्तिवन, ज्ञान सरोवर, चाहे पाण्डव भवन, चाहे हॉस्पिटल सभी को बापदादा दिल से बहुत-बहुत मुबारक देते हैं। जो भी आते हैं उनकी सेवा अच्छी करते हैं। सेवा करने में नम्बर अच्छा है। और फिर पीछे सुनायेंगे लेकिन सेवा में नम्बर अच्छा है। अथक बनके

सेवा करने में एक नेचुरल आदत हो गई है। फिर भी देखो कितनी संख्या है। अभी की संख्या कितनी है? (15-16 हजार आये हैं, सभी मिलकर करीब 18 हजार हाल में बैठे हैं) इतने सबको सम्भाल रहे हैं ना। आये हुए जो भी डबल विदेशी या देश वाले सब ठीक हो? खाना ठीक मिला है, ठीक रहे हुए हो, ठण्डी तो नहीं लगी? कम्बल मिले हैं? मातायें, मातायें सुख से रह रही हैं? मातायें ठीक रही पड़ी हैं?

अच्छा - तो याद रखना, नये वर्ष की नवीनता दिखाना। बाहर भी जो बैठे हैं, वह भी सुन-सुन करके खुश हो रहे हैं। इन्टरनेट पर सुनते ज्यादा हैं, देखने वाले तो थोड़े होंगे, लेकिन सुनने वाले बहुत हैं। तो बापदादा खुश होते हैं कि दूर बैठे भी ऐसे ही लगन से बैठते हैं जैसे सम्मुख बैठे हैं और समय का अन्तर होते भी हिम्मत और उत्साह से बैठते हैं।

बाकी सभी तरफ से कार्ड तो बहुत आये हैं। यहाँ रखे हुए हैं ना! बापदादा ने देखे। तो कार्ड वालों को बापदादा रेसपान्ड में, याद-प्यार दुआओं के साथ कार्ड के बदले रिकार्ड दिखाओ, यह कह रहे हैं। कार्ड भेजने की मुबारक है लेकिन रिकार्ड दिखायेंगे तो बहुत-बहुत-बहुत-बहुत मुबारकें मिलेंगी। खिलौने भी भेजते हैं, पत्र भी भेजते हैं। डबल फारेनर्स की मैजारिटी की एक विशेषता है जो बापदादा को बहुत प्यारी लगती है। जनक बच्ची भी फॉरेन की रिजल्ट सुन रही है, खुश हो रही है। एक विशेषता यह है कि सच बोलते हैं। सच्ची दिल पर साहेब राज़ी होता है। हिलते भी हैं, झूलते भी हैं लेकिन बोलते सच हैं। और जो सच बोलता है ना उसकी आधी गलती माफ हो जाती है। इसलिए बापदादा को यह विशेषता अच्छी लगती है क्योंकि जो झूठ बोलते हैं ना, तो झूठ ऐसी चीज़ है वो अन्दर खाता जरूर है। जैसे कांटा पांव में चुब जाता है ना तो क्या होता रहता है? अन्दर ही अन्दर काटता रहता है ना। ऐसे झूठ बोलने वाले के अन्दर खुशी कभी नहीं होगी। कोई न कोई प्राबलम ही प्राबलम होगी। इसीलिए स्पष्ट आत्मा बनने से स्पष्टता श्रेष्ठ बना देती है। मदद मिल जाती है, लिफ्ट हो जाती है। तो अपनी विशेषता कभी कम नहीं करना। इस विशेषता की आप लोगों को बहुत मदद है। अच्छा।

चारों ओर के सदा अखण्ड महादानी बच्चों को, चारों ओर के बाप के राइट हैण्ड, आज्ञाकारी भुजाओं को, चारों ओर के सदा सर्व आत्माओं को हिम्मत के पंख लगाने वाले हिम्मतवान आत्माओं को, चारों ओर के सदा बाप समान हर कर्म में फालो करने वाले ब्रह्मा बाप और जगत अम्बा के शिक्षाओं को सदा प्रैक्टिकल जीवन में लाने वाले सर्व बच्चों को बहुत-बहुत यादप्यार, दुआयें और नमस्ते।

**रात्रि 12 बजे के बाद प्यारे अव्यक्त बापदादा ने नये वर्ष 2004 की बधाईयां सभी बच्चों को दी**

इस समय संगम है, पुराने वर्ष और नये वर्ष का संगम है। इस नये वर्ष और पुराने वर्ष के संगम समय पर बापदादा सभी विश्व के अति प्रिय, अति लाडले, अति सिकीलधे बच्चों को बहुत-बहुत-बहुत दिल की दुआओं सहित यादप्यार दे रहे हैं। मुबारक की बहुत-बहुत थालियां भरकर दे रहे हैं। सारा वर्ष खुश रहना, अपने खुशनसीब भाग्य को सदा स्मृति में रख मास्टर भाग्यविधाता बनना। अभी संगमयुग की यादप्यार।

डबल विदेशियों के प्रति और भारत के बच्चों के प्रति डबल गुडनाइट और गुडमार्निंग दोनों ही दे रहे हैं। जैसे अभी खुश हो रहे हो ना! तो जब कोई बात ऐसी आवे तो आज के दिन को याद करके खुशी में झूमना। खुशी के झूले में सदा झूलते रहना। कभी दु:ख की लहर नहीं आवे। दु:ख देखने वाले तो दुनिया में अनेक आत्मायें हैं, आप सुख देखने, सुख देने वाले, सुखदाता के बच्चे सुख स्वरूप हो। कभी सुख के झूले में झूलो, कभी प्यार के झूले में झूलो, कभी शान्ति के झूले में झूलो। झूलते ही रहो। नीचे मिट्टी में पांव नहीं रखना। झूलते ही रहना। खुश रहना और सभी को खुश रखना और लोगों को खुशी बांटना। अच्छा। ओम् शान्ति।